0152,2SRI,1
E8

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

O152,2SR1,1 3053
E8
Srivastava, G. P.
Nak medam.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

SHRI JAGADGURU VISHWARADHYA JNANAMANDIR
0152,2SRI,1 (LIBRARY) 3053
E8 JANGAMAWADIMATH, VARANASI

Please return this volume on or before the date last stamped
Overdue volume will be charged 1/- per day.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Laugh. हास्यरसधारा ग्रन्थावली

नाक में दम।

और

जवानी बनाम बुढ़ापा

उर्फ़

(मियां की जूती मियां के सर)

हास्य पूर्ण नाटकें

MOLIERE 4—6

लेखक

रस के प्रधान लेखक 'लम्बीदाढ़ी' 'उलटफेर' 'नोंकझोंक' इत्यादि के रचयिता ' तथा मार मार कर हकीम ' ' आँखो में धूल ' ' हवाई डाक्टर ' इत्यादि के अनुवादक।

श्रीयुत जी. पी. श्रीवास्तव बी. ए. एल. एल. बी.

प्रकाशक

बी. पी. सिनहा गोंडा।

All Rights Reserved including rights of staging.

बी. एल. पावगी द्वारा
हितचिन्तक प्रेस, रामघाट, बनारस सिटी में मुद्रित।

मूल्य ॥~)

वार }
० }

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सूचना



मार मार कर हकीम
आखों में धूल
हवाई डाक्टर

इसका प्रथम संस्करण समाप्त होगया।

0152,2SRI,
E8

नोक झोंक

॥=)

केवल १५० पुस्तकें स्टाक में और रहगई हैं अगर लेना है तो जल्दी मंगा लीजिये। क्योंकि इसका दूसरा संस्करण फिर इस दाम पर न मिलेगा। इसका मूल्य लगभग १) होगा।

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY.
Jangamwadi Math, VARANASI.
Acc. No. ....
3053

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

34/E

NOTICE.

To Theatrical Companies & Dramatic clubs.

☞ कोई नाटक की मण्डली – पेशेवर या ग़ैर पेशेवर – इन नाटकों को विना लेखक की इजाज़त के खेल नहीं सकती। कोई थियेटर के ड्रामाटिस्ट साहब अपने नाटक में मज़ाक़ के सीन लाने के इरादे से 'श्रीवास्तव' जी के नाटकों के सीन को काट छांट कर अपने नाटकों की खोखलू जगहों में ठूसने का भूल कर भी हौसला न करें। जो कम्पनी इन नाटकों को स्टेज करना चाहती हो वह सीधे लेखक से लिखापढ़ी करके इनके Staging rights तै कर सकती है। क्योंकि पेशेवर कम्पनियां विना लेखक से Staging rights हासिल किये हुए इन नाटकों को Stage नहीं कर सकतीं। ग़ैरपेशेवर नाटक मण्डलियों और विद्यार्थियों को खेलने की इजाज़त दी जा सकती है बशर्तें कि वह लोग तमाशे की रात में इन नाटकों की २५ जिल्दें दर्शकों के हाथ बेचने की ज़िम्मेदारी लें। ताकि तमाशे के साथ साथ हिन्दी का प्रचार भी बढ़ा करे। ऐसे समय में बेहद किताबें बिकने की सम्भावना रहती है। मगर अवसर चूकने पर यानि तमाशा हो जाने पर वहां बिक्री बेहिसाब घट जाती है।

बी. पी. सिनहा

गोंडा. यू. पी.।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वक्तव्य।

प्रिय पाठक !

आज मैं फिर आपलोगों के सामने अपने गुरु मोलियर के दो नाटकों का अनुवाद लेकर आया हूं। गो आप पहिले इनको "मासिक मनोरञ्जन' और 'हिन्दी सर्वस्व' में देख चुके हैं तौभी आपको इनपर एक नज़र डालने के लिये मैं अनुरोध कररहा हूं। क्योंकि पहिले से अव इनमें वहुत कुछ फ़र्क़ हो गया है। उम्मीद है कि जिस तरह से आपने 'मारमार कर हकीम' 'आखों में धूल' और 'हवाई डाक्टर' को खुले दिल से अपनाया है उसी तरह से और उसी तपाक से इनको भी आप आवभगत करके अपनायेंगे। यह हिन्दुस्तानियों की अपूर्व अतिथि सेवा और कोमल हृदय की प्रशंसा सुनकर फ़्रांस से आप से मिलने के लिये आये हैं। मगर विदेशी भाई की सूरत में नहीं बल्कि ख़ासे हिन्दुस्तानी वनकर। देखूं तो सही आप इनसे कैसा वर्ताव करते हैं।

पाठकगण, सम्पादकगण, और नाटक-मण्डलियों के एक्टरगण, जिस तरह से आप सवलोगों ने मेरे नाटकों को चाव से पढ़कर, बढ़ियां से बढ़ियां उनकी समालोचनायें करके, उनको स्टेज पर वारवार खूबी के साथ खेलकर मेरा उत्साह बढ़ाया है उसके लिये मैं आप सब लोगों को किन शब्दों में धन्यवाद दूं?

ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि मुझे शक्ति दे कि जबतक जीवित रहूं तवतक मातृभाषा तथा आपलोगों की सेवा में नित उपस्थित रहूं। और अपने परमपूजनीय गुरु मोलियर के सब नाटकों को अपनाकर हिन्दुस्तानी बना डालूं। और यों मोलियर को हिन्दुस्तान में फिर एक दफ़े जीवित करके उनके नाम की धूम मचादूं। यही मेरी गुरुदक्षिणा है। इसके सिवा अपने गुरु को और क्या दे सकता हूं?

गोंडा
२ नवम्बर १९१८ } जी. पी. श्रीवास्तव।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाक में दम ।

(Moliere No. 4 LeMariage Force)

मोलियर का यह नाटक पहले पहल तीन अङ्कों में २९ जनवरी १६६४ को Louvre में खेला गया था। बादशाह Luus XIV ने जिनकी उमर उस वक्त २६ बरस की थी इसमें Gipsy का पार्ट खेला था। इसलिये इसका नाम उस वक्त Ballet du Roi पड़ गया था। उसके बाद १५ फ़ेब्रुअरी को यह एक ही अङ्क में Palais Roal में खेला गया। मोलियर मुसीबत मल का पार्ट करते थे।

M. Taschareau साहब फ़रमाते हैं कि इस नाटक में दो मुख्य दृश्य हैं जिसमें फ़िलासफ़रों का ख़ाका उड़ाया गया हैमोलियर ने इन दोनों दृश्यों को सिर्फ़ हसाने ही की ग़रज़ से नहीं बल्कि एक ख़ास मतलब से लिखा था। और उनका वह मतलब बड़ी ख़ूबसूरती से पूरा भी होगया। बात यह थी कि उन दिनों फ़िलासफ़र Aristotle के मत का प्रचार इस बुरी तरह हो रहा था और लोग उसकी तरफ़दारी करने में ऐसे लम्पटी और ज़िद्दी हो रहे थे कि इस मत के ख़िलाफ़ ज़बान हिलाना एक बड़ा भारी जुर्म समझा जाता था। यहां तक कि पेरिस का विश्वविद्यालय भी इस मत के विरोधियों के खून का ऐसा प्यासा हुआ कि उनको मौत की सज़ा दिलाने की नीयत से परिस के पारलियामेंट से १६२४ के चौथी सितम्बर वाले कानून को जारी करानेही वाला था कि ऐसे नाज़ुक वक्त में मोलियर की हास्यरसपूर्ण लेखनी ने Aristotle के मत की हंसी उड़ाकर फ़्रांस में इस होने वाले अन्धेर को रोका। उनके दो फिलासफ़र Pancrace (मौलाना ख़ब्तुल हवास) और Marphurius (पं सङ्कोचानन्द) ने स्टेज पर आकर वह धूम मचाई कि लोग शर्म से कट कट गये। और विश्व-विद्यालय को इस खूनी क़ानून जारी कराने की फिर हिम्मत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

न पड़ी। मौलाना ख़ब्तुलहवास वाला दृश्य बेढब हँसानेवाला है बशर्ते कि एक्टिंग पूरे तरह से हो। क्योंकि यह सीन एक्टिंग के लिहाज़ से ज़रा मुशकिल है।

मैंने पहिले इस नाटक का अनुवाद १९१२ में किया था। जो आरे के "मासिक मनोरंजन" में प्रकाशित हुआ। उसके बाद १९१७ में मैंने फिर इसको नए सिरे से लिखकर जहां तक मुमकिन होसका मोलियर के मज़ाक़ को निबाहते हुए इसे हिन्दुस्तानी बनाने की कोशिश की। इस दफ़े सन्यासियों के दो नये दृश्य मिलाकर कुछ शिक्षा लाने की भी चेष्टा की गई है। Gipsies के ballet नाच का अभाव उच्चकानन्द के मज़ाक़ से पूरा किया गया है। जहां फ़ानसीसी मज़ाक हिन्दुस्तानी रंग में भद्दा मालूम हुआ वहां उसी वज़न के हिन्दुस्तानी मज़ाक से काम लिया गया है।

पात्र

१. मुसीबत मल ... ... कुलच्छनी के साथ शादी करनेवाला एक बूढ़ा अमीर
२. सलाह बख़्श .... मुसीबत मल का दोस्त
३. झटपट राय ... ... कुलच्छनी का चचा
४. बिगड़े दिल ... ... झटपटराय का लड़का
६. मौलाना खप्तुल हवास ... ... युनानीदार्शनिक
७. पं॰ सङ्कोचानन्द ... ... तत्वज्ञानी.
८. उच्चकानन्द ... ... ज्योतिषी।
९. घर बिगाड़ ... ... कुलच्छनी का प्रेमी
चार सन्यासी.

पात्री

१०. मैडम कुलच्छनी ... ... झटपटराय की भतीजी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाक में दम।

अंक—१

दृश्य पहिला सड़क

चार सन्यासियों का मिलकर गाना।

(कोरस)

"दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसंतौ पुनरायातः।
कालः क्रीड़ति गच्छत्यायुस्तदपि न मुंचत्याशावायुः॥
भज गोविंदं भज गोविंदं भज गोविंदं मूढ़मते ॥१॥
प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे॥ध्रुवपदम्॥
अग्रे वन्हिः पृष्ठे भानू रात्रौ चुवुकसमर्पितजानुः।
करतलभिक्षा तरुतलवासस्तदपि न मुंचत्याशापाशः॥भज०२॥
यावद्वितोपार्जनसक्तस्तावन्निजपरिवारो रक्तः।
पश्चाद्धावति जर्जरदेहे वार्तां पृच्छति कोऽपि न गेहे ॥भज०३॥
जटिली मुंडी लुंचितकेशः काषायांबरबहुकृतवेषः।
पश्यन्नपि च न पश्यति मूढ़ उदरनिमित्तं बहुकृतवेषः॥भज४॥
भगवद्गीता किंचिदधीता गङ्गाजललवकणिका पीता।
सकृदपि यस्य मुरारिसमर्चा तस्य यम किं कुरुते चर्चाम्॥भज५॥
अंगं गलितं पलितं मुंडं दशनविहीनं जातं तुंडम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दंडं तदपि न मुंचत्याशापिंडम् ॥भज०६॥
बालस्तावत् क्रीड़ासक्तस्तरुणस्तावत्तरुणीरक्तः।
वृद्धस्तावच्चिंतामग्नः परे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः॥भज०७॥
पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननीजठरे शयनं।
इह संसारे खलुदुस्तारे कृपयाऽपारे पाहि मुरारे ॥भज०८॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुनरपि रजनी पुनरपि दिवसः पुनरपि पक्षः पुनरपि मासः।
पुनरप्ययनं पुनरपि वर्षं तदपि न मुंचत्याशामर्षम् ॥भज०९॥
वयसि गते कः कामविकारः शुष्के नीरे कः कासारः।
नष्टे द्रव्ये कः परिवारो ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः ॥भज१०॥
नारीस्तनभरनाभिनिवेशं मिथ्यामायामोहावेशम्।
एतन्मांसवसादिविकारं मनसि विचारय वारंवारम् ॥भज०११॥
कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः का मे जननी को मे तातः।
इति परिभावय सर्वमसारं विश्वं त्यक्त्वा स्वप्नविचारं ॥भज०१२॥
गेयं गीता नामसहस्रं ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्रम्।
नेयं सज्जनसंगे चित्तं देयं दीनजनाय च वित्तम् ॥भज०१३॥
यावज्जीवो निवसति देहे कुशलं तावत्पृच्छति गेहे।
गतवति वायौ देहापाये भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये ॥भज०१४॥
सुखतः क्रियते रामायोगः पश्चाद्धंत शरीरे रोगः।
यद्यपि लोके मरणं शरणं तदपि न मुंचति पापाचरणं ॥भज०१५॥"

श्री शंकराचार्य।



(मुसीवत मल का खिड़की पर दिखाई देना।)

मुसीबत०-(खिड़की पर) कौन हो भाई ? क्यों सुबही सुबह आस्मान सर पर उठा रखा है ?

१. सन्यासी-ईश्वर का भजन करते हुए जाते हैं बाबा।

मुसीवत०-तो इतना गला फाड़ने की क्या ज़रूरत है ? क्या ईश्वर आजकल ऊंचा सुनने लगे हैं ?

२. सन्यासी-आहा ! प्रातःकाल में तो ईश्वरभजन से सकल संसार गूंज उठना चाहिये। परन्तु हा ! अब भारत की गति कैसी होगई कि ईश्वरभजन भी अब लोगों के कानों में बुरा मालूम होने लगा।

मुसीबत०-आख़िर इस भजन भजन की ज़रूरत क्या है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ईश्वर अच्छे हों चाहे बुरे हों। तुमसे मतलब ?

३. सन्यासी–दाता जी ईश्वर सकल संसार का सिरजनहार है पालनहार है। वह परमात्मा परम दयालु जगदीश्वर है।

मुसीबत०–अच्छा तो परम नहीं परम २ परमदयालू जगदीश्वर हैं, होंगे। हमसे क्या सरोकार? दुनिया को बनाया। हमको पैदा किया। अच्छा किया। जब उन्हें ग़रज़ थी। तब तो ऐसा किया। हम तो उनसे कहने नहीं गए कि ऐसा कीजिये वैसा कीजिये। तो फिर हमसे उनसे कैसा सरोकार ? तुम्हीं बताओ ठीक है न ?

१. सन्यासी–नहीं दाता जी। ऐसा कहना उचित नहीं है। हमको आपको क्या वरन् सकल जीव जन्तुओं को उसका गुण गाना चाहिये।

मुसीबत०–जी हां तुम्हारी तरह दुनिया में सब थोड़े ही फ़ालतू हैं जो अपना अपना काम छोड़ के इसमें अपना वक्त ख़राब करें।

२. सन्यासी–बाबा यह भी तो अपना ही काम है। मनुष्य तो स्वार्थी जीव है। वह ईश्वर का स्मरण करता है तो अपने ही किसी न किसी स्वार्थ के लिये।

मुसीबत०–तो क्या उनकी याद करने से लोगों का मतलब पूरा हो जाता है।

३. सन्यासी०–बाबा ईश्वर नाम में तो वह गुण है कि सकल मनोकामना सिद्ध हो जाती है। कोई सत्य भाव से उनका स्मरण भी तो करे।

मुसीबत०–अगर ऐसा है तो कहिये अपनी शादी के लिये उनका फिर ध्यान करूं ?

१-२-३-४ सन्यासी–अयं ! इस अवस्था में विवाह !!!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुसबीत०—क्यों क्या हर्ज है ? तुम लोग तो ऐसे चकराये कि जैसे मैं फांसी चढ़ने जाता हूं ।

१. सन्यासी०—दाता जी इस अवस्था में अब अपनी मुक्ति के लिये ईश्वर का ध्यान कीजिये । इस लोक से सम्बन्ध तोड़िये । अपना परलोक बनाइए ।

२. सन्यासी—इस अवस्था में विवाह की वेदी पर चढ़ना फांसी चढ़ने से भी कठिनतर है । क्योंकि इसकी फंसरी तो कुछ ही घड़ी में छुटकारा देदेती है । परन्तु उसकी फंसरी शिर पर चिन्ताओं का टोप पहना कर सदैव दम घोंटती रहती है । और

"चिता चिन्ता समा ह्युक्ता बिन्दुमात्रं विशेषतः ।
सजीवं दहते चिन्ता निर्जीवं दहते चिता ॥"

३. सन्यासी—हा ! भारतमाता जहां तेरे पुत्र जब वृद्धावस्था को प्राप्त होते थे । संसार के झगड़ों से दूर भागते थे । पर्व्वतों और तपोवनों को निकल जाते थे और एकान्त में उस दाता के ध्यान में अपना अन्तिम दिवस बिताकर जीवन सुफल करते थे । तहां धर्म कर्म की अब यह दशा हो गई ।

"प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीये नार्जितं धनम् ।
तृतीये न तपस्तप्तं चतुर्थे किं करिष्यसि ॥"

मुसीबत०—वाह ! वाह ! क्या अच्छी सलाह है । अगर किसी को मरने में अभी साल भर की देर हो तो इस सलाह पर चलने से कलह ही मर जाए । जब घर पर मौत न आती हो तो अलबत्ता जंगलों पहाड़ों की खाक छाने और चीते और भेड़िये के पेट में जाए । मगर आपकी दुवा से यमराज साहब हैज़ा ताऊन तपेदिक़ इङ्गो डिंगो फ़ीवर इन्फ़्लुइन्ज़ा और निमोनियां के रूप में फ़ैशन बदल बदल कर हर तीसरे महीने देखिये तो मौजूद रहते हैं । अगर ईश्वर को यही मञ्जूर होता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कि दुनिया के लोग जंगलों में ठोकरें खाएं । तो यह इतने दुनिया में मज़े क्यों पैदा किये हैं । इतनी प्यारी प्यारी सूरतें फिर किसके लिये बनाई हैं । सोचो तो । दो दिन की ज़िन्दगी है । आख़िर मरना तो हैई है ; इसको क्यों वाही तबाही में बिताते हो । धोबी के कुत्ते की तरह मारे मारे फिरते हो । लड़कपन खेल कूद में गुज़री । जवानी पेट के धन्धे में बीती । अरे अब बुढ़ापे में तो आराम करलो । दुनिया के कुछ मज़े उठालो । यही बुढ़ापा तो एक इतमीनान का वक़्त है । अगर दुनिया में आकर बेरंग ही वापस गए तो यहां पैदा होने का फ़ायदा क्या ?

गाना ।

मुसीवत०—बेकार यार करते हो जीवन बरबाद ।
दरदर का फिरना छोड़ो, दुनिया से मत मुख मोड़ो ।
वृद्धावस्था आई है, अब भी तो कुछ सुख भोगो ।
हुए क्यों तुम वैरागी, रोती होगी घरवाली ।
बे घर हो तो घर करलो, हैं लाखों जोबनवाली ।

हां एक से एक अलहड़ वो कमसिन हैं भोली वो भाली हैं आंखें तो खोलो ज़रा । बेकार० ।

१ स०—" न भूतपूर्वं न कदापि वार्ता, हेम्नः कुरङ्गो न कदापि दृष्टः ।
तथापितृष्णा रघुनन्दनस्य, विनाशकाले विपरीत बुद्धिः "॥

२. सन्यासीः—

" स्त्रियो हि मूलं निधनस्य पुंसः, स्त्रियो हि मूलं व्यसनस्य पुंसः ।
स्त्रियो हि मूलं नरकस्य पुंसः, स्त्रियो हि मूलं कलहस्य पुंसः ॥"

१–२-३–४ स०—बेकार यार करते हो जीवन बरबाद ।

" "अनभ्यासे विषं शास्त्रं अजीर्णे भोजनं विषं ॥
" मूर्खस्य च विषं गोष्ठी वृद्धस्य तरुणी विषं ।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

,, यह बात यार रखना हमारी भी याद ।

(सन्यासियों का प्रस्थान।

दृश्य दूसरा मुसीबतमल का मकान ।

मुसीवतमल और सलाहवख़्श

मुसीबत०-(अपने घरके आदमियों से) सुना ? मैं अभी लौटा आता हूं। घर की हिफ़ाज़त अच्छी तरह से करना। ख़बरदार कोई चीज़ गड़बड़ न होने पावे। अगर कोई मुझे रुपै देने के लिये आवे तो मुझे फ़ौरन मुन्शी सलाहबख़्श के यहां से बुलवा लेना। मगर कोई मांगने आवे तो कहदेना कि वह तो देहली चलगए। समझे ?

सलाह०-(आख़िरी बात सुनकर) शाबश ! हुकुम दे तो इस तरह का।

मुसीवत०-अख़ख़ाह ! मुन्शी सलाहबख़्श ! ख़ूब आए आप इस वक़्त। मैं आप ही के यहां जा रहा था।

सलाह०-क्यों ? क्यों ? ख़ैरियत तो है न ?

मुसीवत०-आप से बड़े ज़रूरी मामले में सलाह लेनी है।

सलाह०-मैं हर तरह से ख़िदमत करने के लिये तइयार हूं। कहिये तो सही मामला क्या है।

मुसीवत०-अच्छा तो फिर आइये तशरीफ़ रखिये। यह मामला तो ऐसा वैसा है नहीं जो खड़े खड़े तै हो जाए। और विना दोस्तों की राय के कोई काम करना मेरे ख़्याल में ठीक नहीं।

सलाह०-मैं साहब भला किस क़ाबिल हूं जो आपको राय देसकूं। यह सब आप की क़दरदानी है। अच्छा कहिये बात क्या है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुसीवत०-मगर पहले आप मुझसे वादा कीजिये कि इस मामले में मुझे आप अपनी सच्ची राय वताइएगा।

सलाह०-तो झूठी राय देने की मुझे क्या ज़रूरत पड़ी है?

मुसीबत०-देखिये कोई बात न मुंह देखी कहियेगा न खुशामदाना कहियेगा। क्योंकि ऐसी बातें सच्ची नहीं होतीं।

सलाह०-जी हां कभी नहीं।

मुसीवत०-मेरी राय में जो दोस्त सच्चेदिल से बातें नहीं करता वह दोस्त नहीं दुश्मन है।

सलाह०-वेशक।

मुसीवत०=मगर सच्चे दोस्त आजकल कहां मिलते हैं।

सलाह०-यह भी आप का कहना ठीक है।

मुसीबत०-अच्छा तो आप मुझसे वादा करते हैं न कि आप मुझे अपनी सच्ची और सही राय देंगे?

सलाह०-हां साहव वादा करता हूं।

मुसीवत०-अच्छा क़सम खाइए।

सलाह०- लीजिये यह भी सही (मुसीबतमल के सरपर हाथ रखकर) आप के क़दम मुवारक की क़सम। मगर वह आख़िर कौन सी बात है जिसमें इस क़दर पावन्दियों की ज़रूरत है।

मुसीवत०-मैं आपसे यह जानना चाहता हूं कि मैं दाढ़ी मूछ मुण्डा डालूं।

सलाह०-क्यों? क्या जूएं पड़ गए हैं? या कोई मरगया है?

मुसीवत०-ईश्वर न करे। मगर बात यह है कि दाढ़ी में इतना वोझ होता है कि कमर झुकादेती है। इसलिये अगर हमलोग भी अपना लङ्गर कटादें तो ज़रूर कमर सीधी हो जायेगी। और असल वात यह है कि औरत को प्यार करने में दाढ़ी की वजह से वड़ी उलझन होती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सलाह०-अजी हज़रत अब आपको औरत से क्या सरोकार?

मुसीबत०-नहीं सरोकार है तो अब हो जायगा। सरोकार करने से सरोकार होता है। यही तो मैं आप से पूछना चाहता हूं कि आपकी सच्ची राय क्या है कि मैं शादी करूं।

सलाह०-कौन आप?

मुसीबत०-हां मैं। मैं। मैं खुद।

सलाह०-तो दाढ़ी की फ़िक्र आप फ़जूल करते हैं। ईश्वर चाहेगा तो शादी होते ही आप अच्छी तरह मुण्ड जांयगे।

मुसीबत०-वाह! वाह! तो इससे बेहतर फिर क्या चाहिये। जोरू की जोरू और बाल सफ़ा की पुड़िया की पुड़िया।

सलाह०-आप होश में हैं न?

मुसीबत०-क्यों। आखिर इस सवाल से मतलब।

सलाह०-आप मुझे एक बात बताइए।

मुसीबत०-कहिये।

सलाह०-आपकी उमर क्या होगी?

मुसीबत०-मेरी उमर?

सलाह०-जी हां आप ही की।

मुसीबत०-क्या मालूम। मुझे कुछ ख़्याल नहीं है। मगर मैं बिलकुल भला चङ्गा हूं।

सलाह० तौभी अन्दाज़न कुछ तो मालूम होगा।

मुसीबत०-कुछ भी नहीं। कहीं उमर का ख़्याल किसी को रहता है?

सलाह०-अच्छा यह बताइए कि पहले पहल जब हमसे आप से जान पहचान हुई थी उस वक्त आप कै बरस के थे।

मुसीबत०-तब तो मैं सिर्फ़ बीस ही बरस का था।

सलाह०-देहली में हम आप कै साल रहे?

मुसीबत०-आठ बरस।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सलाह०–और मुरादाबाद में ?

मुसीबत०-सात बरस ।

सलाह०–उसके बाद आप कलकत्ते चले गए थे ।

मुसीबत०–हां वहां साढ़े पांच वरस तक रहा ।

सलाह –और वहां से यहां कब आए ।

मुसीबत०–सन अठानवे में ।

सलाह०–अच्छा तो अठानवे से सन बारह तक चौदह बरस । आठ बरस देहली में रहे बाइस । सात बरस मुरादाबाद में उन्तिस । पांच बरस कलकत्ते में चौंतिस और बीस बरस जान पहचान होने के पहले चौव्वन । इसलिये आपही के हिसाब से आप इसवक्त कम से कम चौव्वन बरस के हैं ।

मुसीबत –मैं-मैं चौव्वन वरस का ? क्या ग़ज़ब करते हैं आप ? यह कभी मुमकिन ही नहीं जनाब ।

सलाह०–अजी नहीं साहब मेरे जोड़ने में कभी ग़ल्ती नहीं हो सकती । जब आपने सच्ची राय देने के लिये मुझसे वादा करा लिया है । क़समें खिलाली हैं तो मैं आप से यह ज़रूर कहूंगा कि आप के लिये शादी करना ठीक नहीं । यह सब झगड़े नवजवानों हीं के लिये छोड़ दीजिये । आपकी उमर वाले लोगों को तो इसका ख़्याल तक भी नहीं करना चाहिये । शादी बरबादी तो मशहूर ही है । उसपर भी किसी ने क्या ही अच्छा कहा है कि व्याह करना दुनिया भर के सब बेवकूफ़ियों से बढ़कर है । और फिर ख़ासकर इस उमर में जब हमलोग बुज़ुर्ग और अक़लमन्द समझे जाते हैं । हम लोगों को अब भगवत भजन करना चाहिये न कि ऐसी बेवकूफ़ी में फसना चाहिये । यही मेरी दोस्ताना सादी सी सच्ची राय है । मैं आप को सलाह देता हूं कि शादी करने का ख़्याल एकदम छोड़ दीजिये । और नहीं तो बूढ़ा के मरने के बाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इतने रोज़ आज़ाद रहकर अब आप अपने पैरों में सब से कड़ी ज़ंजीर बान्धना चाहते हैं तो वही 'मियां की जूती मियां के सर, वाला हाल होगा। मैं क्या सब लोग आप को बेवक़ूफ़ों का सरदार कहेंगे और आप बुरी तरह हंसे जायंगे।

मुसीबत०–कभी नहीं। मैं तो शादी करने पर तुला बैठा हूं। और ख़ासकर उस रंगीली रसीली अलबेली के साथ शादी करने में कभी नहीं हंसा जा सकता।

सलाह०–आह! तब तो बात ही और है। यह पहले आपने क्यों नहीं बताया?

मुसीबत०–और क्या कहूं ऐसी ग़ज़ब की ख़ूबसूरत है वह कि कुछ पूछिये नहीं। अभी सिनही क्या है। चढ़ती जवानी है। पूरी जवानी में देखियेगा।

सलाह०–ओहो! तब तो मैं ही ग़लती पर था। आप ज़रूर शादी कीजिये। ऐसी शादी तो हर वक़्त हर सिन में रायज है।

"सिद्धमन्नं फलं पक्वं नारी प्रथमयौवनम्।
सुभाषितं च ताम्बूलं सद्यो गृह्णाति बुद्धिमान्॥"

मुसीबत०–वाह! वाह! शास्त्र में भी क्या ऐसा लिखा है? ज़रूर लिखा होगा। लाइए हाथ मुन्शी सलाह बख़्श और क्या कहूं मैं आप से। उस लड़की को देखते ही मैं उसपर चपरगट्टू भी हो गया हूं।

सलाह०–तब आप फ़जूल किसी से पूंछ पांछ करते हैं। अजी जनाब ऐसी शादी तो मरने के बाद भी रायज है।

"पसे मुरदन बनाए जांएगे साग़र मेरे ग़िल के।
लबे जां बख़्श के बोसे मिलेंगे ख़ाक में मिल के॥"

मुसीबत०–तो मुनासिब यही है कि मैं शादी कर डालूं।

सलाह०–ज़रूर। क्योंकि मरने के बाद कोई घर में रोने वाली भी तो चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुसीबत०-तभी तो मैं उसके चचा से मिलकर अपनी चटपट शादी ते करली है ।

सलाह०-वाह ! वाह ? खूब किया ।

मुसीबत०-और शादी कलही होगी । अब देर नहीं सही जाती ।

सलाह०-वाह ! वाह !

मुसीबत०-क्यों मुन्शी सलाहबख़्श आख़िर मैं शादी क्यों न करूं? क्या आप समझते हैं कि मैं शादी करनेके क़ाबिल नहीं हूं ? अजी उमर का ख़्याल छोड़िये । असल चीज़ तो देखिये । क्या मेरे हाथ काम नहीं देते कि टांगें काम नहीं देतीं । किसी जवान को मेरे सामने खड़ा कर दीजिये फिर देखिये किसके चेहरे पर ज़्यादा दमक मालूम होती है । बाल सफ़ेद होगए हैं तो इस से क्या ? यह तो बच्चों के भी हो जाते हैं । (दांत दिखाता है) देखिये दांत इसमें तो कोई ख़राबी नहीं है । अगर हो भी तो क्या ? चार वक़्त मैं खूब चाव चाव के खाना नहीं खाता हूं ? और हाज़मा मेरा देखिये कितना ज़बरदस्त है । अब तो आप के दिल से हिचकिचाहट दूर हुई ?

सलाह०-जींहां बिल्कुल । आप का कहना बहुत ठीक है। ज़रूर शादी कीजिये । पड़ोसी बड़ी दोआएं देंगे ।

मुसीबत०-शादी करने की पहले मेरी भी राय नहीं थी । मगर अब जब इतने इतने ज़बरदस्त वजूहात मुझे शादी करने के लिये मजबूर कर रहे हैं तो फिर शादी क्यों न कि जाए । जनाब बड़ी क़िस्मत से किसी को ऐसी फैशनेबिल जोरू नसीब होती है । यह क्या कम खुशी है कि जब मैं कहीं से थका मान्दा घर आउंगा तो वह मुझे हिलायगी डोलायगी खेलायगी झुलायगी । और दूसरी बात यह है कि जहां शादी की तहां दो चार दर्जन ताबड़तोड़ बच्चे हो पड़े । फिर देखियेगा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तमाशा । कोई इधर चहक रहा है । कोई उधर कूद रहा है । कोई चिल्लायगा ओ मेले फ़ादल ! कोई हाथ पकड़ के खींचेगा अले पापा दमली का गुल आनंदो । अः ! अः ! अः मुझे तो अब सचमुच मालूम होता है कि मेरे बच्चे चारो तरफ़ खेल खेलकर मेरी दाढ़ी नोच रहे हैं ।

सलाह०–बेशक बेशक इससे बढ़कर कौन सी खुशी हो सकती है । ज़रूर शादी कीजिये । बहुत जल्द शादी कीजिये । मगर ज़रा ख़्याल रखियेगा कि जब बच्चे हों तो एक जोड़ा हमको भी दीजियेगा ।

मुसीबत०–तो आपकी सलाह है न ?

सलाह०–जीहां भला मैं ऐसे नेक काम में क्यों बाधा डालने लगा ?

मुसीबत०–बड़ी खुशी की बात है कि अब आप मुझे यह सच्चे दोस्त की तरह सलाह दे रहे हैं ।

सलाह०–मगर यह तो बताइए किससे आप शादी करने वाले हैं ।

मुसीबत०–मिस कुलच्छनी के साथ ।

सलाह०–अच्छा वह वह मैं समझगया । तब तो ईश्वर ही ख़ैर करे ।

मुसीबत०–क्या कहा ?

सलाह०–यही कि जोड़ी बड़ी अच्छी है । चूकिये मत । दन से शादी कर डालिये ।

मुसीबत०–न कहियेगा कैसा पसंद किया है ।

सलाह०–क्या कहना है तक़दीर हो तो आपकी सी ।

मुसीबत०–अह ! अह ! अह ! मारे खुशी के मैं तो घुला जा रहा हूं । आप को इस नेक सलाह के लिये हज़ार हज़ार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शुक्रिया अदा करता हूं। इस शादी की खुशी में जो जलसा करूंगा उसमें आप ज़रूर शरीक होइयेगा। मैं आपको न्योता देता हूं।

सलाह०--न्योता देने की क्या ज़रूरत? शादी होने तो दीजिये फिर देखियेगा बिना बुलाए ईश्वर चाहेगा तो सैकड़ों रोज़ आप के घर पहुंचेंगे।

मुसीबत०--ईश्वर वह दिन तो दिखाए। जाइएगा? अच्छा आदाबर्ज़।

सलाह०--(अलग) जब चूंटी के पर निकलते हैं तो उसके मरने का दिन नज़दीक होता है। जब चिराग़ की टेम में लपट उठती है तो वह बुझने के क़रीब होता है। जब बुड्ढों के दिल में शादी का शौक़ चर्राता है तो उनकी बरबादी शुरू हो जाती है। कहां कुलच्छनी चढ़ी जवानी में मस्त। ज़माने की हवा खाए हुए। दुनिया को चराए हुए। और कहां यह काठ के उल्लू मुसीबतमल। क़बर में पांव लटकाए हुए। अक़्ल से हाथ धोए हुए। जोड़ी हो तो ऐसी हो। जोड़ी हो तो ऐसी हो। (कहता हुआ जाता है)।

मुसीबत०-(अकेला) इस शादी से खुशी ही खुशी होगी क्योंकि इसका ज़िक्र सबको खुश करता है। जिससे कहता हूं। वही खूब हंसता है। वाह रे मैं। मैं ही मैं हूं इसवक्त। क़िस्मत हो तो ऐसी हो। क़िस्मत हो तो ऐसी हो।

दृश्य तीसरा रास्ता

कुलच्छनी का गाते हुए आना।

गाना।

बनू बनू मैं दुल्हनियां प्यारी जो शौहर को पाऊं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

व्याही जाऊं । मैडम कहलाऊं । फिरतो मोटरपर थेटरकोजाऊ ।
वहां यारों से होंगा शेकहैम्ड । बैठा देखेगा मेरा हसबैण्ड ।
कोई डियर कहे । कोई दिलवर कहे । कोई डारलिङ्गमैडम ।
मैं नख़रे से बोलूं डियर कम हियर कम ।
सब से चुहल करूंगी । मटक मटक चलूंगी ।
फ़ैशन से वन जोवन फवन संवर के दिलको हरूंगी ॥

(मुसीवतमल का आना)

मुसीवत०--(अलग) अह ! अह ! अह । देखते ही राल टपक पड़ी क्या चाल है । क्या ढाल है । क्या आन है । क्या वान है । लचक देखो । अह ! अह ! कमर का पता ही नहीं मिलता किधर है ।

" एक तो हुस्न वला उस पे वनावट आफ़त,
घर विगाड़ेंगे हज़ारों के सवंरने वाले । "

भला ऐसा भी कोई आदमी निपोड़संख होगा जो इनको देखे और उसका जी इनके साथ शादी करने को न चाहे । (कुलच्छनी से) अरे ओ अपने आइन्दा शौहर की प्यारी आइन्दा बीवी क्या में आप से पूछ सकता हूं कि आप इस वक्त कहां तशरीफ़ लेजा रही हैं ?

कुलच्छनी०--आपका टोकना बिल्कुल बेजा और फ़ैशन के ख़िलाफ़ है इसलिये मैं इसका जवाब देने से इनकार करती हूं ।

मुसीवत०--अच्छा प्यारी कल्ह जब हमारी आपकी दोनों की ख़ुशी ख़ुशी शादी होगी । तब तो आप मुझे किसी चीज़ के लिये इनकार नहीं कर सकती हैं । क्योंकि आप कल्ह से मेरी चीज़ कहलायगी । आप मेरी । आपका सब बदन सरसे पैर तक मेरा । आपकी कनखियों का सनकियों का मैं ही अकेला मालिक । आपके पौडर वाले गालों का मैं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ही मालिक । दिल भड़कानेवाले आपके ओठों का मैं ही मालिक । आपके नन्हे नन्हे हाथों का मैं ही मालिक । आप के......ग़रज़ यह है कि आपके रोए रोए तक सब मेरे । जिस तरह से चाहूंगा मैं आपको प्यार करूंगा । क्यों प्यारी इस शादी से आप खुश हैं न ?

कुलच्छनी०—जी हां खुशी तो ज़रूर है । क्योंकि घरवालों के हर वक्त, के दवाओ से मेरा नाक में दम हो गया था । धन्यभाग ! मैं उनके पञ्जे से छूटती हूं । इसलिये नहीं कि कढ़ाई से निकलूं और आग में गिरूं । वल्कि इस लिये कि आज़ादी से ज़िन्दगी गुज़ारूं और दुनियां के मज़े उठाऊं, मगर आपकी बातों से मुझे मालूम होता है कि अभी आपको फ़ैशनेविल जेन्टिलमैन होने में वहुत कसर वाक़ी है । ख़ैर मैं इस कसर को पूरी करदूंगी और आपके वदले में भी मैं ही खुद और ज़्यादा फैशनेबिल हो जाऊंगी । तौभी आप को हमेशा नए और अपटूडेट फ़ैशन के मुताबिक़ मेरे साथ रहना पड़ेगा । क्योंकि मैं पुराने तरीक़ों को एकदम नापसंद करती हूं । जैसे मर्द आदमी है । वैसे औरत भी आदमी है । और आदमी Social creature (समाजप्रिय जीव) है इस लिये बिना सोसाइटी के मैं ज़िन्दा नहीं रह सकती । मुझसे मिलने के लिये मेरे सैकड़ों दोस्त आया करेंगे । और उनके साथ मैं हमेशा club, party, dinner, theater वग़ैरह में जाया करूंगी । आपको मेरे किसी मामले में किसी क़िस्म का दख़ल देने का कोई अख़्तियार या हक़ नहीं होगा । जब आप मुझसे मिलना चाहेंगे तो आपको इसके लिये मेरे पास पहिले से दरख़ास्त भेजनी पड़ेगी । जिसके मंज़ूर होने पर आप मुझसे हफ़्ते में मेरी फुरसत के वक्त पांच मिनट तक मुझसे मिल सकेंगे । इससे ज़्यादा वक्त शायद मैं आप को न दे सकूंगी ।

 CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्योंकि मुझे फुरसत बहुत कम रहेगी । मैं उम्मीद करती हूं कि आप उन बेवकूफ़ और शक्की मर्दों की तरह न होंगे जो अक्ल के अन्धे अपनी जोरुओं को पिञ्जड़े में बन्द करके सामने बैठे दिनरात पहरा दिया करते हैं । बल्कि आप मर्दों में एक नमूना होंगे और ऐसे कि आप बड़े फ़ख्र के साथ मुझे अपने नव जवान दोस्तों से introduce करते रहेंगे । फिर तो हमारी आपकी ज़िन्दगी खूब मज़े में निबहेगी । मुझे यक़ीन है कि आप मेरी इन आज़ादियों को ज़रूर पसंद करेंगे और इनकी क़द्र करेंगे । क्योंकि "क़द्रगौहर (अपनी तरफ़ इशारा करके) शाह दानद (मुसीबतमल की तरफ़) या बिदानद जौहरी दर्शकों की तरफ)"···मगर·········यह क्या आप का चेहरा, एक दम Down क्यों हो गया ?

मुसीबत०-मेरे सर में मिर्गी आगई है ।

कुलच्छनी०-आह ! यह तो अकसर बहुत लोगों को आया करती है । मगर हमारी आपकी शादी इन सब बातों को दुरस्त करदेगी । अच्छा Good bye ! मैं Lock & Co., के यहां जाकर एक मोटरकार और एक Ladies Buggy के लिये order दिये देती हूं । और उन सभों का बिल आप के नाम भिजवादूंगी । (जाती है)

(सलाहबख़्श का आना)

सलाह०-अख़्ख़ा ! बाबू मूसीबतमल आप हैं ? मैं आप ही को ढूंढ रहा था । इस शहर में एक नया सौदागर आया हुआ है उसके पास एक से एक बढ़कर हीरे जवाहिरात के जड़ाऊ गहने हैं । और शादी के वक़्त अपनी लेडी साहबा को देने के लिये आप को ऐसे गहनों की ज़रूरत भी है । इसलिये यही मैं आप से कहने आया हूं कि ज़ेवरात उसके यहां ज़रूर ख़रीदिये ।

मुसीबत०-अजी मारिये गोली ज़ेवरात को । अभी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इनकी कोई जल्दी नहीं है ।

सलाह०-क्यों क्यों ख़ैर तो है। वह जोश ओ ख़रोश सब क्या हुए (अलग) मुँह पर इतनी फटकार क्यों बरस रही है ।

मुसीबत०-क्या बताऊं बाबू सलाहबख़्श । कुछ कहते नहीं बनता, मुझे इस शादी के बारे में यकायक एक शक पैदा होगया है । कल्ह रात मैंने एक अजीब ओ ग़रीब सपना देखा था जिसको बिना किसी क़ाबिल आदमी से ठीक ठीक विचरवाए हुए मुनासिब नहीं मालूम होता है कि मैं इस शादी के मामले में हाथ डालूं । क्योंकि सपना आप जानते हैं अकसर मानिन्द आइने के होता है जिसमें होनेवाली बात अक़िलमन्दों को साफ़ साफ़ दिखाई देती है । इसी वजह से ज़रा तबियत परेशान होगई है । और दिलमें खलबली पड़ी हुई है । मैंने देखा कि मैं एक किश्ती में बैठा हुआ हूँ । बला की अन्धेरी रात है। तूफ़ान का वह ज़ोर। और बादलों की वह गड़गड़ाहट......

सलाह०-इस वक्त तो मुझे माफ़ कीजिये। एक बड़े ज़रूरी काम में हूं । और दूसरे मैं सपने उपने के बारे में कुछ समझता नहीं हूँ । अगर आपको कुछ शक पड़गया है और इस शादी की अच्छाई बुराई जानना चाहते हैं तो आपहीं के पड़ोस में एक बड़े आलिम फ़ाज़िल मौलाना और दूसरे एक बड़े भारी तत्वज्ञानी जी रहते हैं । इन लोगों से पूछिये । जो कुछ मुझे आपसे कहना था वह तो मैं कही चुका हूं । अच्छा आदाबर्ज़ (जाता है)

मुसीबत०-बेशक । इस मामले में इन लोगों की राय ज़रूर लेनी चाहिये । इनकी राय बड़ी पक्की और सही होगी ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अङ्क—२

दृश्य पहिला मकान।

मौलाना ख़ब्तुल हवास और मुसीबतमल।

ख़ब्तुल०–(जिस तरफ़ से आता है उसी तरफ़ घूमकर) नालायक़! बदतमीज़! तहज़ीब का दुश्मन! अहमक़! दूर हो। अभी दमेज़दन में फ़रार हो। इल्मी दुनिया से मैं तुझे शहर बदर कराके छोड़ूंगा।

मुसीबत०–अहा! अच्छे ज़रूरत के वक्त मिले यह।

ख़ब्तुल०–(मुसीबतमल को न देखकर) बड़े बड़े वजूहात से मैं क़ायम कर दूंगा। और आलिमों के आलिम अरस्तू के सबूतों से माज़ी हाल मुस्तक़बिल और क़यास तक करने वाले सीग़ों में भी साबित करदूंगा कि तू–'अहमक़ुन् अहमक़ाने अहमक़ून अहमक़तुन अहमक़ाताने अहमक़ातुन्' है।

मुसीबत०–बेशक। मगर यह लड़ किस से रहे हैं? (ख़ब्तुल हवास से) अजी मौलाना साहब—

ख़ब्तुल०–(मुसीबतमल को बिना देखे हुए) मन्तक़ का क़ायदा एक भी नहीं मालूम। मगर बहस करने को मुस्तैद।

मुसीबत०–मारे गुस्से के अन्धे हो रहे हैं। मुझे देखते तक नहीं (मौलाना से) जनाबमन–

ख़ब्तुल०–यह बात इल्म की सलतनत से एकदम ख़ारिज करदेने के क़ाबिल है।

मुसीबत०–किसी ने इन्हे बेतरह भड़का दिया है। (मौलाना से) अजी हज़रत—

ख़ब्तुल०–"मन् ज़इअल् हज़मा लम् यज़फ़रबेहाजतही।"

मुसीबत०–मैंने कहा आदाबर्ज़ है मौलाना ख़ब्तुल हवास

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साहब।

ख़प्तुल०—तसलीम।

मुसीबत०—क्या मैं।

ख़प्तुल०—(जहां से आता है वहीं फिर लौटकर) तुझे अपनी ग़ल्तियां मालूम भी हैं? बे मतलव का जुमला!!!

मुसीबत०—सुनिये तो।

ख़प्तुल०—फ़ायल ग़ायव, महफ़ूल वेजगह, फ़ेलज़ूमानी और मतलब का मतलब ख़प्त।

मुसीबत०—ज़रा मेरी—

ख़प्तुल०—मैं इसको ज़रूर ग़लत सावित करदूंगा।—"व मनूरम्मा वेसहामिल उजवी लमूयनली।"—मतलब मानी सव।

मुसीबत०—जनाब मौलाना साहब क्या मैं पूछ सकता हूँ कि क्यों आप इतने ख़फ़ा हैं।

ख़प्तुल०—इसकी एक वड़ी ज़बरदस्त वजह है।

मुसीबत०—मिहरबानी करके ज़रा मुझे भी बताइए।

ख़प्तुल०—एक अहमक़ एक बिल्कुल ग़लत वात—ख़ूंख़ार और डरावनी बात को क़ायम करना चाहता था।

मुसीबत०—वह कौन सी वात है?

ख़प्तुल०—आह बाबू मुसीबत मल। क्या कहें ज़माने की वदनसीबी। किसी चीज़ की हालत पूछने के क़ाबिल नहीं है। यह दुनिया एक आम बरबादी, ख़राबी और तवाही में ग़र्क़ है। एक ख़ौफ़नाक आज़ादी हर जगह रायज़ है। और कोतवालों को जो कि सलतनत में अमन फैलाने के लिए तैनात हैं, ऐसी नाक़ाबिल बरदाश्त और शर्मनाक वात को जो मैं आप से कहने जारहा हूं बरदाश्त करने के लिये चिल्लूभर पानी में डूब मरना चाहिये।*

* यह इशारा पेरिस के विश्वविद्यालयकी तरफ़ था।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुसीबत०-ओफ़ । ओ ! आख़िर ऐसी वह कौन सी बात है?

ख़ब्तुल०-क्या यह खौफ़नाक बात नहीं है ।-वह बात जो इन्तक़ाम के लिये गला फाड़ फाड़ कर चिल्ला रही है । और जिसका गुलपुकार सातवें आस्मान तक सुनाई दे रहा है-कि कोई शख़्स अलानियां तौर पर " जूते की शकल " कहे ?

मुसीबत०-इसकी फ़िलासफ़ी मेरी समझ में नहीं आई ।

ख़ब्तुल०-मैं कहता हूं कि हमलोगों को 'जूते की बनावट' कहना चाहिये न कि 'जूते की शकल' । क्योंकि बनावट और शकल में बहुत बड़ा फ़र्क़ है । जानदार कुदरती चीज़ों की ऊपरी सितह को शकल कहते हैं और बेजान मसनूई अशिया के ऊपरी ढांचे को बनावट कहते हैं । मगर शकल कभी नहीं कहते । (जिधर से आया था फिर वहीं जाकर) हां बेवक़ूफ़ कूड़मग़ज़ तुझे इस तरह से बातें करनी चाहिये। इसको अरस्तू ने सिफ़त के ब्यान में बड़े ज़ोरों के अलफ़ाज़ में लिखा है ।

मुसीबत०-(अलग) हो गए अच्छीतरह से फ़ाज़िल यह तो । इसी लिये लोग कहते हैं कि बहुत पढ़ना बुरा है । (ख़ब्तुल० से) अजी मौलाना साहब इन बातों को मारिये गोली ।

ख़ब्तुल०-मेरा गुस्सा इतना चढ़ा है कि मैं नहीं जानता कि क्या कर रहा हूं ।

मुसीबत०-अच्छा अब जूते और शकल की जान बख़्शिये। सुनिये मुझे आपसे कुछ कहना है ।

ख़ब्तुल०-(फिर उसी तरफ़ घूम कर) गुस्ताख़ ! कूड़-मग़ज़ !

मुसीबत०-अब जाने दीजिये साहब !

ख़ब्तुल०-(उसी तरह से) नाहंजार ! मरदूद !

मुसीबत०-मैं आपसे मिन्नत करता हूं ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ख़ब्तुल०—भला इस बात को कभी मैं मान सकता हूं ?

मुसीबत०—वह बात ही ग़लत है। हां मैं—

ख़ब्तुल०—अरस्तू ने इसको एकदम ग़लत साबित कर दिया है।

मुसीबत०— क्यों नहीं ? सच है। मगर—

ख़ब्तुल०—और बड़े ज़ोरों के अलफ़ाज़ में।

मुसीबत०—जीहां आपका कहना दुरुस्त है (उस तरफ़ घूम कर जिधर से मौलाना आया था) बेशक तू बड़ा बेवकूफ़ है और बेअक़िल है जो तू इतने बड़े लायक़ फ़ायक़ आलिम से जो लिखना पढ़ना जानते हैं वहस करने की कोशिश करता है (ख़ब्तुल० से) लीजिये अब वह झगड़ा ख़तम हुआ। मैंने भी उसे डांट दिया। मैं एक मामले के बारे में आपसे राय पूछने आया हूं। मैं आपका बड़ा ही एहसानमन्द हूंगा अगर आप अपनी नेक सलाह बता कर मेरी परेशानी कम करदेंगे। मेरा इरादा शादी करने का है। और उसके लिये मैंने एक बला की ख़ूबसूरत और फ़ैशनेबिल नवजवान लड़की पसंद की है। मैं उसे चाहता भी हूं। और वह भी मुझी से व्याह करना चाहती है। इसके चचा भी राज़ी होगए हैं। मगर डर यह है कि कहीं ऐसा न हो कि बाद को पछताना पड़े और हाथ पर सर रखके रोना पड़े। आप हकीम हैं आलिम हैं। आप मुझे यह बताइए कि मैं अब क्या करूं। आपकी राय इस मामले में बड़ी पक्की होगी। आप मुझे क्या सलाह देते हैं। शादी करूं या न करूं ?

ख़ब्तुल०—"मन् ज़इअल हज़मा लम् यज़फ़र बेहाजतही।" अगर जूते की शक्ल वाली बात क़ायम होगई तो मैं बेवकूफ़ साबित हो जाऊंगा।

मुसीबत०—मर कम्बख़्त ! हैई है तू। सबूत की क्या

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ज़रूरत। (ख़ब्तुल० से) अय क़िबला ! ज़रा इधर भी कान दीजिये। घन्टे भर से आपसे बातें कर रहा हूँ। और आप सुनतेही नहीं।

ख़ब्तुल०-मोआफ़ी का ख़्वास्तगार हूं। मारे ख़फ़्गी के दिमाग़ उबल रहा है।

मुसीबत०-अच्छा अब ग़म खाइए। ज़रा मेरी एक बात सुन लीजिये।

ख़ब्तुल०-अच्छा क्या चाहते हैं आप ?

मुसीबत०-मैं आपसे कुछ बातें करना चाहता हूं।

ख़ब्तुल०-यह कहिये। अच्छा बातें करने में आप कौनसी ज़बान इस्तमाल करेंगे ?

मुसीबत०-कौनसी ज़बान !

ख़ब्तुल० हां।

मुसीबत०-अरे वही ज़बान जो मेरे मुंह में है। क्या मैं किसी और से थोड़ेही मांगने जाऊंगा ?

ख़ब्तुल०-मेरा मतलब तर्ज़ें ब्यान, तर्ज़ें कलाम से है।

मुसीबत०-ओह ! यह बात।

ख़ब्तुल०-आप मुझसे अर्बी बोलेंगे ?

मुसीबत०-अजी तौबा कीजिये क़िबला।

ख़ब्तुल०-तो क्या तुर्की ? मुसीबत०-नहीं।

ख़ब्तुल०-अत्तालीं ? मुसीबत०-नहीं।

ख़ब्तुल०-यूनानी ? मुसीबत०-नहीं।

ख़ब्तुल०-लातीनी ? मुसीबत०-नहीं।

ख़ब्तुल०-यहूदी ? मुसीबत०-नहीं।

ख़ब्तुल०-रूसी ? मुसीबत०-नहीं।

ख़ब्तुल०-तातारी ? मुसीबत०-नहीं।

ख़ब्तुल०-फ़ारसी ? मुसीबत०-नहीं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ख़प्तुल०-पश्तो ? मुसीबत०-नहीं।

ख़प्तुल०-मुलतानी ?

मुसीबत० नहीं नहीं-हिन्दुस्तानी हिन्दुस्तानी हिन्दुस्तानी।

ख़प्तुल० आहा ! हिन्दुस्तानी ?

मुसीबत० हां जनाब वही।

ख़प्तुल० लाहौल विलाकू। तो आप उस तरफ़ जाइए। क्योंकि यह कान ख़ास इल्मी और ग़ैरमुल्की ज़बान के लिये मोक़र्रर है। और मादरी और दहक़ानी ज़बान के लिये यह कान है।

मुसीबत० ऐसे आदमियों के साथ बातें करना क्या पूरी क़वायद करनी पड़ती है।

ख़प्तुल० अच्छा आप बताइए आप किस ग़रज़ से यहां तशरीफ़ लाए हैं।

मुसीबत० एक मुशकिल आपड़ी है। उस पर आप की सलाह लेने आया हूं।

ख़प्तुल० मैं समझ गया। यह कोई इल्मी मुशकिल होगी। है न यही बात ?

मुसीबत० माफ़ कीजिए जनाब ! मैं—

ख़प्तुल० शायद आप यह जानना चाहते होंगे कि माद्दा और सिफ़त हसती के लेहाज़ से हममानीया ज़मानी अलफ़ाज़ हैं ?

मुसीबत० नहीं साहब ! मेरे—

ख़प्तुल० या यह कि मन्तक़ हुनर है या इल्म ?

मुसीबत० अजी नहीं जनाब—

ख़प्तुल० या यह कि मन्तक़ में दिमाग़ की तीनों ख़ासियतों की ज़रूरत पड़ती है या फ़क़त तीसरी की ?

मुसीबत० उफ़ ! नहीं क़िबला। मगर कुछ—

ख़प्तुल० या यह कि आसमान सात है या एक ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुसीबत० अरे कुछ सुनियेगा भी ?

ख़प्तुल० या यह कि नतीजा दलील का खुलासा होता है ?

मुसीबत० नहीं नहीं मैं–

ख़प्तुल० या यह कि अच्छाई की असलियत इश्तियाक़ में होती है या मोआफ़िक़त में ?

मुसीबत० उफ़ ! नाक में दम होगया।

ख़प्तुल० या यह कि अर्बी में हर्फ़ चे क्यों नहीं इस्तमाल होता ?

मुसीबत० मुझे भी तो कुछ कहने दीजिये—

ख़प्तुल० या यह कि फ़ारसी अर्बी से निकली है या अर्बी फ़ारसी से।

मुसीबत० नहीं नहीं नहीं। भाड़ में जा कम्बख़्त।

ख़प्तुल० तब क्या आप पूछते हैं। हमारी समझ में नहीं आता। अच्छा आप ही बताइए।

मुसीबत० मैं तो कहने जा रहा हूं मगर आप सुनिये तो। मामला यह है कि मैं एक लड़की से शादी करना चाहता हूं। जो कि बहुत खूबसूरत और नौजवान है। मैं उसे बेहद चाहता हूं। और उसके चचा को उसकी शादी मेरे साथ करदेने के लिये राज़ी भी कर लिया है। मगर डरता हूं—

ख़प्तुल० (साथ साथ बोलता है) कलाम यानी तर्ज़ गुफ़्तगू इनसान को अपने ख़्यालात ज़ाहिर करने के लिये दिया गया है। जिस तरह ख़्यालात चीज़ों की तस्वीरें हैं उसी तरह हमारे अलफ़ाज़ ख़्यालात की तस्वीरें है (मुसीबत मल उकताकर ख़प्तुल हवास का मुंह अपने हाथ से बार बार बन्द करता है। और जब हाथ उठाता है तब ख़प्तुलहवास बोलने लगता है।) मगर यह तस्वीरें और तस्वीरों से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुख़्तलिफ़ हैं। क्योंकि और तस्वीरें अपने असल से हर हिस्से में अलग रहती हैं। लेकिन गुफ़्तगू में इसका असल खुद शामिल रहता है। इसलिए गुफ़्तगू बाहिरी निशानों में ज़ाहिर किये हुये ख़्यालात हैं। इससे यह नतीजा निकलता है कि जो अच्छी तरह से सोच सकता है वही अच्छीतरह से बोल सकता है। इसवास्ते गुफ़्तगू-जो कि तमाम निशानों में बहुत ही क़ाबिल फ़हम निशान है- उसके ज़रिये से अपने ख़्यालात को ज़ाहिर करो।

(मुसीबतमल ख़फ्तुलहवास को धक्का दे दे कर घर में ढकेल देता है और दरवाज़ा बन्द कर देता है ताकि निकल न सके)

ख़फ्तुल (घर के भीतर से) हां गुफ़्तगू क्या है? यह दिल का मुतरज्जिम और जान को तस्वीर है। और (खिड़की के ऊपर आकर) यह ऐसा आइना है जिसमें दिल के छिपे हुए खुफ़िया राज़ साफ़ तरीक़े से ज़ाहिर होते हैं। इसलिये जब आप में बोलने और ब्यान करने की ताक़त है तो क्यों नहीं आप अपने ख़्यालात को हमपर ज़ाहिर करने के लिये गुफ़्तगू का इस्तमाल करते हैं?

मुसीबत० यहीं तो मैं करना चाहता हूं मगर आप सुनते कहां हैं?

ख़फ्तुल० कहिये मैं सुनता हूं।

मुसीबत० मैं आप से यह कहता हूं जनाब मन कि--

ख़फ्तुल० मगर इसका ख़्याल रखिये जो कुछ कहिये थोड़े में।

मुसीबत० बहुत अच्छा। मैं--

ख़फ्तुल० तूल तवीली छोड़दीजियेगा।

मुसीबत० उफ़! जनाब क्या--

ख़फ्तुल० अपने ख़्यालात को मुख़्तसर कर चन्द ज़ुमलों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में कहियेगा।

मुसीबत० मैं सब कुछ करूंगा। आप सुनें भी तो--

ख़ब्तुल० देखिये तूल कलाम न होने पावे और न घुमाओ फिराओ हो। (मुसीबतमल मारे गुस्से के ढेला उठा उठा कर मौलाना को मारने के लिये खिड़की पर फेंकता है।)

ख़ब्तुल० अयं! यह कौन सी बदतमीज़ी? गुफ़्तगू करने के वजाए तुम गुस्सा होते हो। बस मैं कुछ नहीं सुनना चाहता। जाओ यहां से। तुम उस आदमी से भी ज़्यादे गुस्ताख़ हो जो 'जूते की शकल' कहता था। मैं बड़े बड़े सबूतों से, दलीलों से, वहस से और मन्तक़ के हर क़ायदे से साबित करदूंगा कि तुम वेवकूफ़ के सिवा कुछ नहीं हो और न कभी इसके एलावा कुछ हो सकते हो। और मैं जनाब मौलवी मौलाना ख़ब्तुल हवास साहब हूं और हमेशा यही रहूंगा।

मुसीबत० उफ़! नाक में दम करदिया इसने। ऐसा तो ख़ब्ती हमने देखा ही नहीं।

ख़ब्तुल० (स्टेज पर आकर) मैं आलिम हूं मैं फ़ाज़िल हूं मैं हकीम हूं।

मुसीबत० अयं! फिर?

ख़ब्तुल० मैं लयाक़त और क़ाबिलियत का आदमी हूं। (जाता हुआ) कुदरती, इख़लाक़ी, मुलकी, हर इलमों का मैं उस्ताद हूं। (लौटता हुआ) मैं आलिम और बहुत ही बड़ा आलिम हूं। (जाता हुआ) मैं दुनिया के तमाम इल्मों को जानता हूं। और सीगे मुबालगे में जानता हूं। इल्म क़िस्सा, इल्म तवारीख़, इल्म तवारीख़जिन, (लौटता हुआ) क़ायदा, नज़म, इल्म फ़साहत, इल्म बलाग़त, इल्म मानी, इल्म कलाम, इल्म मन्तक़। (जाता हुआ) इल्म तबीबी, इल्म हिसाब, इल्म हिन्दसा, इल्म तबाबत, (लौटता हुआ) इल्म तहरीर,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इल्म उक़लैदिस, इल्म मेमारी, इल्म ख़याल, इल्म इबारत, इल्म नजूम, इल्म रमल, इल्म क़याफ़ा, इल्म दस्तशनासी। (जाता हुआ) इल्म खुशनवीसी, इल्म जुग़राफ़िया, इल्म तवक़ात्, इल्म मुनाज़िरा वग़ैरह ! वग़ैरह वग़ैरह।

(चला गया)

मुसीबत० अरे आस्मान फट पड़े ऐसे बेवक़ूफ़ आलिमों पर। जो कम्बख़्त सुनते तक नहीं। दिमाग़ की चूल चूल बिगाड़दी। उफ़ ! नाक में दम होगया। ऐसे बक्कियों से ईश्वर ही समझे। अच्छा अब तत्वज्ञानी जी के पास चलना चाहिये शायद वह कुछ राय बताएं।



दृश्य दूसरा तत्वज्ञानी जी का मकान

(संकोचानन्द तत्वज्ञानी और मुसीबतमल)

संकोच० अच्छा अपने आगमन का अभिप्राय प्रकट कीजिये

मुसीबत० एक मामले में आप से कुछ सलाह लेने आया हूं। (अलग) शुक्र है यह बात सुनतो लेते हैं।

संकोच० बाबू मुसीबतमल ! आप अपनी वार्ता के ढंग को बदलिये। हमारे तत्त्व का आदेश यह है कि कदापि कोई वार्ता निश्चय और दृढ़ता पूर्वक वर्णन नहीं करनी चाहिये। मनुष्य को बात बात पर सङ्कोच और सन्देह करना और सदैव अपने विचार को अन्ततक रोके रखना चाहिये। इस न्याय के अनुसार आप को इस प्रकार से कहना उचित नहीं था कि मैं आया हूं वरन् आपको कहना चाहिये था कि मैं सोचता हूं कि मैं आया हूं।

मुसीबत० मैं सोचता हूं ! संकोच० हां।

मुसीबत० मुझे तो ऐसा सोचना ही पड़ेगा जबकि असल में मैं यहां मौजूद हूं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संकोच० वार्ता अशुद्ध । यतः बिना वस्तु के उपस्थित हुए भी आप ऐसा विचार कर सकते हैं ।

मुसीबत० क्या ? क्या यह सच नहीं कि मैं आप के पास आया हूं ।

संकोच० इसमें सन्देह है । हम को हरेक विषय में शङ्का करना चाहिये ।

मुसीबत० क्या ? क्या इस जगह में खड़ा नहीं हूं ? क्या मैं आप से बातें नहीं कर रहा हूं ।

संकोच० हमको जान पड़ता है कि आप उस स्थान पर उपस्थित हैं । और हम विचार करते हैं कि आप हमसे वार्ता कर रहे हैं । परन्तु यह निश्चय नहीं है कि ऐसाही हो ।

मुसीबत० क्या क्या ? आप दिल्लगी तो हम से नहीं कर रहे हैं ? मैं यहां पर हूं । और आप वहां पर हैं । यह साफ़ ज़ाहिर है । फिर इसमें मैं विचारता हूं कि क्या ज़रूरत ? ईश्वर के लिये इस वक्त अपनी फ़िलासफ़ी छोड़िये । और ज़रा मेरी बात सुन लीजिये । मैं आप से कहने आया हूं कि मैं शादी करना चाहता हूं ।

संकोच० हमको यह विषय ज्ञात नहीं है ।

मुसीबत० मैं तो बता रहा हूं ।

संकोच० हां ऐसा हो सकता है ।

मुसीबत० जिस लड़की से मैं ब्याह करना चाहता हूं वह बड़ी ही खूबसूरत और नवजवान है ।

संकोच० यह असम्भव नहीं है ।

मुसीबत० शादी करने में मेरी भलाई होगी या बुराई ?

संकोच० अथवा यह वा वह ।

मुसीबत० (अलग) इनकी तुक उन से भी निराली है । (प्रकट) मैं आप से पूछता हूं कि उस लड़की के साथ शादी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करने से, जिसकी मैं ने अभी तारीफ़ की है, कोई ख़राबी तो नहीं होगी ?

संकोच० वही होगा जो होनेवाला होगा ।

मुसीबत० इस में मेरी अच्छाई होगी ?

संकोच० कदाचित्

मुसीबत० बुराई होगी ?

संकोच० सम्भव है ।

मुसीबत० मैं आप को हाथ जोड़ता हूं ठीक ठीक जवाब दीजिये ।

संकोच० मैं सोचता हूं कि मैं ऐसा ही कर रहा हूं ।

मुसीबत० मैं उस लड़की को बहुत चाहता हूं ।

संकोच० हो सकता है ।

मुसीबत० उसके घरवाले भी उसकी शादी मेरे साथ करने के लिये राज़ी हैं ।

संकोच० असम्भव नहीं है ।

मुसीबत० मगर उसके साथ ब्याह करने से डरता हूं कि कहीं वह मुझे बाद को उल्लू न बनाए ।

संकोच० सम्भव है ।

मुसीबत० आख़िर आप क्या ख़याल करते हैं ।

संकोच० हमको कोइ बात असम्भव नहीं जान पड़ती ।

मुसीबत० अगर आप मेरी जगह पर होते तो क्या करते ?

संकोच० हम नहीं जानते ।

मुसीबत० आप मुझे क्या करने की सलाह देते हैं ?

संकोच० जो आप के मन में आए ।

मुसीबत० (घबड़ा कर) इस बेवकूफ़ ने तो और भी नाक में दम कर दिया ।

संकोच० मैं इस विषय से हाथ धोता हूं ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुसीबत० चूल्हे में जा।

संकोच० ऐसा होनेवाला होगा तो होगा।

मुसीबत० (अलग) धत तेरी फिलासफ़र की ऐसी तैसी। रह अब मैं तेरा सुर बदले देता हूं (ठोंकता है)

संकोच० हाय! हाय! यह अनर्थ!

मुसीबत० यह तुम्हारी बदमाशी का इनाम है। अब जाके जी ख़ुश हुआ।

संकोच० अयं! यह क्या? यह कैसी दुष्टता। हम पर इस प्रकार आक्रमण कर हमारा मान नष्ट करना। क्यों रे मूर्ख! हम ऐसे योग्य तत्वज्ञानी को तुझे ताड़न करने का साहस होगया?

मुसीबत० जनाव अपने वार्ता करने के ढंग को बदलिये। हरेक विषय में सन्देह करना चाहिये। आप को यह नहीं कहना चाहिये कि तुमने मारा है। बल्कि हम सोचते हैं कि तुमने मारा है।

संकोच० अच्छा मैं तुरन्त जाकर उन चपेटाघातों के लिये जो कि मेरे पश्चात भाग पर धमाधम पड़े हैं नालिश करता हूं।

मुसीबत० मैं इस मामले से हाथ धोता हूं।

संकोच०-उनके चिन्ह मेरे शरीर में स्पष्ट रूपसे प्रगट हैं।

मुसीबत०-हो सकता है।

संकोच०-तुम्हीने तुम्हीने मेरे साथ इस प्रकार व्योहार किया है।

मुसीबत०-असम्भव नहीं है।

संकोच०-तुम्हारे नाम अब मैं सम्मन प्रेषित कराता हूं।

मुसीबत०-मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता।

संकोच०-तुम्हे इसका दण्ड अवश्य मिलेगा।

मुसीबत०-ऐसा होनेवाला होगा तो होगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संकोच०--याद रखना । हम समझलेंगे ।

(जाता है)

मुसीबत०--(अकेला) उफ़ ओ ! नाक में दम करदिया । कम्बख़्तों ने । इन अउवल नम्बर के बेवकूफ़ों से कोई एक लफ़्ज़ भी तो नहीं पूछ सकता । इनके मिलने के बाद आदमी उतनाही अक़्लमन्द रहता है जितना कि पहले । बल्कि पागल हो जावे तो कोई ताज्जुब नहीं । मगर इस शादी के मामले ने मुझे इतना परेशान कर दिया है कि समझ में नहीं आता कि क्या करूं । 'मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की । '

अङ्क—२

दृश्य पहिला । दरिया ।

चार सन्यासियों का मिलकर गाना ।

" नमस्तेऽस्तु गंगे त्वदंगप्रसंगाद्भुजंगास्तुरंगाः कुरंगाः प्लवंगाः ।
अनंगारिरंगाः ससंगाः शिवांगा भुजंगाधिपांगीकृतांगा भवंति ॥ १ ॥
नमो जन्हुकन्ये न मन्ये त्वदन्यैर्निसर्गेंदुचिह्नादिभिर्लोकभर्तुः ।
अतोऽहं नतोहंसतो गौरतोयें वसिष्ठादिभिर्गीयमानाभिधेये ॥ २ ॥
त्वदामज्जनात्सज्जनो दुर्जनो वा विमानैः समानैः समानैर्हिमानः ।
समायाति तस्मिन् पुरारातिलोके पुरद्वारसंरुद्धदिक्पाललोके ॥ ३ ॥
स्वरावास दंभोलिदंभोऽपिरंभा परीरंभसंभावनाधीरचेतः ।
समाकांक्षते त्वत्तटे वृक्षवाटीकुटीरे वसन्नेतुमायुर्दिनानी ॥ ४ ॥
त्रिलोकस्य भर्तुर्जटाजूटबंधात्स्वसीमांतभागे मनाक् प्रस्खलंतः ।
भवान्या [illegible] त्वत्तरंगा जयंति ॥ ५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जलोन्मज्जदैरावतोद्दानकुंभस्फुरत्प्रस्खलत्सांद्रसिंदूररागे ।
क्वचित्पद्मिनीरेणुभंगे प्रसंगे मनः खेलतां जह्नुकन्यातरंगे ॥ ६ ॥
भवत्तीरवानीरवातोत्थधूलीलसत्स्पर्शतस्तत्क्षणंक्षीणपापः ।
जनोऽयं जगत्पावने त्वत्प्रसादात्पदे पौरुहूतेऽपि धत्तेऽवहेलाम् ॥ ७ ॥
त्रिसंध्यानमल्लेखकोटीरनानाविधानेकरत्नांशुबिंबप्रभाभिः ।
स्फुरत्पादपीठे हठेनाष्टमूर्ते जटाजूटवासे नताः स्मः पदं ते ॥ ८ ॥

'कालीदास'

पहला सन्यासी–सारं भागीरथीतोयं सारं जाप्यं च वैदिकं । ब्रह्मचर्यं तपः सारं सारं माधवसेवनम् ॥

दूसरा०–हे प्रभो ! आपने यथार्थ कहा । परन्तु अब तो सन्यासीलोग गंगाजल के स्थान में भंग संग का सेवन करते हैं । जप तप के बदले गाञ्जे और चरस की धूनी रमाते हैं ।

तीसरा०–और ब्रह्मचारी होने की भली कही । ये जटाधारी तो बड़े भारी व्यभिचारी भी हो रहे हैं ।

चौथा०–और लंगोटा चढ़ा, डन्ड पेल, अंग अंग राख मल सांड की नाई संसार में घूम घूम गृहस्थों को ठगते फिरते हैं ।

पहला०–सत्य है मित्रो सत्य है । यही कारण है कि पृथ्वी पाप के भार से प्रतिदिन अधिक अधिक पीड़ित होती जाती है । भारतवर्ष में लाखों साधू सन्यासीलोग जिनके निर्वाह में देश के करोड़ों रुपये प्रतिवर्ष व्यय होते हैं उसके बदले में वे देश को क्या देते हैं ? क्या बताते हैं ? क्या सिखलाते हैं ? कुछ नहीं । हमलोग फोकट में हलुआ पूड़ी और मोहनभोग उड़ाएं । और हमारे होते हुए गृहस्थों को ज्ञानोपदेश देने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के लिये धर्म कर्म का पथ बतलाने के लिये स्वार्थी ज्ञान-हीन किराए के टट्टू बुलाए जाएं। हम पर धिक्कार है। देश में अनगिन्तियों पाप होते जाएं। चोर डाकू लुटेरे कामी जालियों की संख्या दिन दूनी और रात चौगुनी बढ़ती जाए। और हम टुकुरटुकुर देखाकरें। हम पर धिक्कार है। हमें साधू और ज्ञानी होने पर धिक्कार है। हमारा ज्ञान फिर किस दिन के लिये है।

दूसरा०—प्रभो! जिनको सन्यास लेना चाहिये वे तो संसार में लिप्त हो रहे हैं। और जिनकी संसार में आवश्यक्ता है वे वैरागी और सन्यासी के रूप धारण कर ठग-विद्या द्वारा विना परिश्रम किये हुए अपने पेट भर रहे हैं। और सन्त साधुओं को बदनाम कर रहे हैं।

तीसरा०—ऐसा न होता तो बुढ़ापे में लोग ईश्वर का स्मरण कर अपना परलोक बनाते कि अपना पुनर्विवाह कर किशोर अवस्था की विधवाओं की संख्या बढ़ाकर समाज का मुंह काला करते और अपने भी मुख पर इस लोक और उस लोक में कालिख पोतते?

चौथा०—भला देखो तो विधवाओं की संख्या बढ़ाने को क्या बालविवाह अकेले असमर्थ था जो ये मन चले वूढ़े इसकी सहायता करने के लिये कमर कस के तय्यार हुए हैं?

पहला०—हे मित्रगण आओ चलें। अपना कर्तव्य पालन करें और देश में धर्म कर्म का ज्ञान फैलाकर पाप को यथा-शक्ति निर्मूल करें। हम गृहस्थों को धर्म ज्ञान न सिखलायेंगे तो हम से बढ़कर ज्ञानी उन्हे शिक्षा देने कौन आयेगा? पृथ्वी अन्न के एक दाने के बदले सरसों दाने देती है तो हम क्यों न देश के साथ वैसाही व्योहार करें जो हमको प्रतिदिन उदर भर भोजन देता है।

(सब का प्रस्थान)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(मुसीबतमल का आना)

मुसीबत०--या ईश्वर ! अब क्या करूं ? अजीब उलझन में जान है। दिल कुछ कहता है। समझ कुछ कहती है। आख़िर उसके साथ कोई न कोई तो शादी करेहीगा। तो मैं क्यों चूकूं ? मैं ही क्यों न करलूं ? क्या ही भभूका रंग रूप है। कैसी प्यारी सजधज है। कैसी ग़ज़ब की ख़ूबसूरती है। सच पूछो तो ईश्वर ने मेरे ही लिये उसे अपने हाथ से गढ़ा है। ऐसी फिर हमको कहां मिल सकती है ? बेशक मैं ज़रूर शादी करूंगा। मगर नहीं न जाने क्यों दिल खटक गया हैं। रहरह कर आप से आप मेरा एरादा रुक रहा है। क्या कोई मुझे इस मुशकिलसे न उबारेगा ? कोई ठीक राय न बताएगा ? हे ईश्वर आगे होनेवाली बातों को तूही बतादे।

(उच्चकानन्द का आना)

उच्चका०--जैजैकार शरकार। जैजैकार। कुछ ग्रहदशा बिचरवाइए।

मुसीबत०--आप कौन हैं ?

उच्चका०--मैं शरकार ज्योतिशी उच्चकानन्द हूं।

मुसीबत०--अहा ! ज्योतिशी हैं आप ? बस बस आपही की मुझे इस वक़्त ज़रूरत भी थी। क्यों जनाब आइन्दा होने वाली बात आप बता सकते हैं।

उच्चका०--हां शरकार तीनो लीजिये। भूत भविष्य वर्तमान। तनिक हाथ तो देखलवाइए। अह ! अह ! अह ! शरकार आप बड़े भाग्यवान हैं।

मुसीबत०--हां ? अच्छा ज़रा इधर बैठ जाइए। अब इतमिनान से बताइए। मगर पहले मेरी बात सुन लीजिये-

उच्चका०--चतुरवशी दिमाग। हंसमुख सूरत। गदभामुखं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अह ! हा ! हा ! शरकार ढेर दिन जीयेंगे । नाती पनाती शबको खाय खूयके मरेंगे ।

मुसीवत०-हां हां ठीक है । अभी मेरी उमर ही क्या है । मगर यह बताइए कि एक नौजवान और बड़ी खूबसूरत लड़की जिसकी-"बरस पन्द्रह या सोलह का सिन" ।

उच्चका०-हां हां ठीक फरमावते हैं 'शंप्राप्ते शोरशे वर्शे गर्द-भी चापशरायते । ' शोलह बरिश में गदही भी परी कह-लावती है ।

मुसीबत०-तो उसके साथ शादी करें ?

उच्चका०-अपने बेटौना के शरकार ? जरूर करके । बड़ा शुन्दर होई (हाथ देखता है)

मुसीबत०-नहीं जी अपनी ।

उच्चका०-(हाथ देखता हुआ) शरकार का बड़ा नाव चलेगा ।

मुसीबत०-बड़ी नाव क्या जहाज़ ? हमारे यहां जहाज़ चलेगा ? यह कैसे मुमकिन है ?

उच्चका०-जहाज़ नहीं शरकार । नाव होइहे । बड़ाई बड़ाई देखिये रेखा ।

मुसीवत०-ओ मेरा बड़ा नाम होगा । क्या इस जोरू की बदौलत ?

उच्चका०-ई देखो धन के रेखा होए शरकार । बड़ा धन होई । शरकार के आम्दनी दिनोदिन बढ़ते जाई ।

मुसीवत०-क्या इस जोरूकी बदौलत ? वाह ! वाह ! मगर बात यह है—

उच्चका०-अरे शरकार बड़ा नीक है । बड़ा नीक है । यह तो पहिले देखबे नाहीं कीन । चटपट हाथ पर शुबरण शोना रखिये । अशर्फी होए चाहे ई मुन्दरी पहिरिये अच्छा इश

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर शवाशेर चान्दी रखिये । नहीं तो पाच रुपया रखिये ।

मुसीबत०–रुपया तो नहीं दुअन्नी है ।

उचका०–राम ! राम ! का हंशी करावते हैं । शाइत बड़ा नीक है । रुपैया निकालिये चटपट......अच्छा अब अपाना हाथ के मुट्ठी वान्धलीजिये ।

मुसीबत०–बड़ी खुशी से ।

उचका०–अगड़म बगड़म । उल्लूफ़ासम । अब मोरे हाथ पर अपाना मुट्ठी खोल दीजिये । इश्ते चान्दी शोना शव शमरपयामि ।

मुसीबत०–(अलग) यह तो बुरा हुआ । (प्रकट) देखिये लौटालदीजियेगा । हमारा नहीं हैं ।

उचका०–आंख मून्द कर धर्ती पर माथा नवाकर तनिक देर राम राम कीजिये । जबलों हम न कहें उठिये तबलों मूड़ न उठाइएगा । (मुसीबत लाल सर झुकाता है । उचकानन्द इनकी सब चीज़ें जूता पगड़ी छाता वग़ैरह लेकर भाग जाता है)

मुसीबत०–गला टूटा । अब सर उठावें । बोलो भाई । हमतो उठाते हैं ।

(वैसेही कुलच्छनी और घर बिगाड़ का आना)

मुसीबत०–(सर उठाकर) अरररररर ! यह क्या देखता हूं ? (छिपजाता है)

गाना ।

घरबिगाड़०–प्यारी चलो सैर करें आली निराली है देखो बहार ।
दरिया किनारा है, क्या प्यारा प्यारा है, सारा नज़ारा है गुलज़ार ॥
बेक़रार हूं दिल्दार अबतो यार देदे प्यार ।
कुलच्छनी०–... ... कसम तुमको है मेरे सरकार।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तनओ बदन की, जोबन फबन की, जादू नज़रकी । क़सम तुमको है मेरे सरकी ।

घरबिगाड़०–हूं निसार हूं निसार । तुझपे यार बार बार ।

घरबिगाड़+कुलच्छनी०–फिर आओ गले लग जाएं, उमंग बुझाएं, मगन, मगन, सनम के संग ॥

मुसीबत०–(अलग) अररररर ! यहां तो इन्दरसभा होने लगा ।

घरबिगाड़०–प्यारी मेरी मुहब्बत का ज़रा ध्यान रखना । ऐसा न हो कि शादी के बाद तुम मुझे बिल्कुल ही भूलजाओ ।

मुसीबत०–(अलग) यह लीजिये । यह कमबख़्त शादीके बाद भी इन्दरसभा जारी रखनेवाला है ।

कुलच्छनी०–नहीं मिस्टर घरबिगाड़ तुम मत घबड़ाओ । कहीं हम ऐसी नौजवान और चुलबुली लड़कियां बूढे मर्द को थोड़ेही प्यार कर सकती हैं ?

मुसीबत०–(अलग) तो फिर बूढ़े बेचारे काहे को शादी करते हैं क्या जूते खाने के लिये ? देखो तो इसकी बातें ।

घरबिगाड़०–तब फिर तुम इस बुड्ढे खूसट के साथ शादी करने के लिये क्यों राज़ी हुई ?

कुलच्छनी०–इस लिये कि इससे बढ़कर अक्ल का अन्धा और गांठ का पूरा दूसरा नहीं मिला ।

मुसीबत०–(अलग) अब और बना । एक न शुद दो शुद । अब जो कम्बख़्त तू फिर उल्टी सुल्टी बकेगी तो शादी गई चूल्हे भाड़ में । ऐसा तान के ढेला मार के चलदूंगा कि तू भी याद करेगी ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घरबिगाड़०–तो यों कहो कि यह शादी क्या आड़में शिकार खेलने के लिये टट्टी खड़ी की जाती है। मगर वहां इतनी आज़ादी तुम्हें कहां मिल सकेगी कि तुम से मैं बराबर मिलता रहूं ?

कुलच्छनी०–अजी यहां आज़ादी कहां है। चोरी छिपे तो मिलना पड़ता है। वहां बड़ी आज़ादी रहेगी। वहां तो तुम मुझसे बेखटके और खुले ख़ज़ाने मिल सकते हो। वह चूं नहीं करने पायेगा। इसका ज़िम्मा मैं लेती हुं। क्योंकि उल्लू को उल्लू बनाते कितनी देर लगती है ?

मुसीबत०–(अलग) अफ़सोस यही है कि अकेला हूं। नहीं तो तुम दोनों को बिना मारे छोड़ता नहीं। और जो ज़्यादा गुस्सा आगया तो दरिया ही में कूद पड़ूंगा।

घरबिगाड़०–तौभी आख़िर इस तरह से कब तक चलेगा ? कभी न कभी तो वह ताड़ जायेगा।

कुलच्छनी०–जब ज़िन्दा रहने पायेगा तब तो। शादी के बाद छेही महीने के भीतर उसको मरना पड़ेगा।

मुसीबत०–(अलग) ओ बापरे !

घर बिगाड़०–यह क्योंकर ? क्या कोई मारडालेगा उसको ?

कुलच्छनी०–नहीं जी मारे कोफ़त के वह ख़ुदही मरजायेगा।

घरबिगाड़०–हां अगर हयादार हो।

मुसीबत०–(अलग) अरे दादारे !

कुलच्छनी०–प्यारे! ईश्वर से तुम रोज़ दोआ करना कि मुझे विधवा होने की ख़ुश क़िस्मती जल्दी नसीब हो। फिर तो चैन ही चैन है। लाखों रुपै हाथ आयेंगे और बेखटके मज़े उड़ायेंगे।

घरबिगाड़०–ज़रूर दोआ करूंगा। मेरी दोआ कभी ख़ाली नहीं जाती।

(बातें करते हुए दोनों जाते हैं)।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुसीबत:—नहीं ईश्वर नहीं। तुम्हें क़सम है। इनलोगों की बात मत सुनना। मैं भी तुम्हें अब बहुत याद करूंगा। बड़ी ख़ैरियत हुई। कि इन कम्बख्तों ने मुझको देखा नहीं। नहीं तो यहीं गला घोंट कर मेरा फ़ैसला करदेते। बापरे! बाप! बहुत बचा। शादी की ऐसी तैसी। ना बाबा। जान है तो जहान है।

दृश्य दूसरा।

झटपटराय का मकान।

(झटपटराय अकेला)।

झटपट:—ईश्वर न करे कि दुनिया में किसी के अवलाद हो। और अवलाद हो भी तो लड़की न हो। और अगर लड़की ही हो तो मेरी भतीजी की तरह न हो। पैदा होतेही ख़ान्दान का नाम डुबोया। नार कटतेही मां बाप की भी नाक कटवाई। उस पर मज़ा यह कि मेरे भाई साहब-ईश्वर उनकी आत्मा को बैकुण्ठ में चैन दे-उनकी अक़्ल पर पाला ही पड़ा हुआ था कि उन्होंने हिन्दुस्तानी पौधे को विदेशी ढंग पर लगाया। फिर विदेश ही के जनतरी से उसके फूलने और फलने का वक़्त निकालकर इतमिनान से बेफ़िकिर बैठ रहे। और तुर्रा यह कि न पौधे को घेरा न घारा। जानवरों को चरने के लिये बिल्कुल आज़ाद छोड़दिया। इधर हिन्दुस्तानी आब ओ हवा ने बीच ही में गुल खिलाना शुरू करदिया और जनतरी के वक़्त तक पौधे के नस नस ढीले करदिये। यहां वक़्त के इन्तज़ारही में रहे। और वहां मौसिम बहार ख़तम भी हो चला। फल फूल गिर गिर कर सड़ने और गलने लगे। फिर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तो ऐसी दुर्गन्ध मची है कि क्या कहूं। ऐसी बदनामी और जगहसाई हुई है कि हमी लोगों का दिल जानता है। सर पटक के मरगए। कोशिशें करते करते नाक में दम होगया मगर कुलच्छनी के साथ शादी करने केलिये कोई नहीं राज़ी हुआ। हज़ार हज़ार शुक्र है ईश्वर का जिसने मेरे सर से कम्बख़्ती और परेशानी का बोझ उठाकर मुन्शी मुसीबतमल के सर पर यह आफ़त ढकेली। और मेरे गले से बदनामी की फसरी छुड़ाकर उसके गले में डाली। जहांतक जल्दी होसके जैसे बने वैसे मैं भी इस बला को मुसीबतमल के गले मढ़दूं। और चटपट कुलच्छनी की शादी उसके साथ कर दूं। फिर बाबा वह जाने और वह। वह लीजिये दूल्हे साहब भी आरहे हैं।

(मुसीबतमल का आना)

झटपट०–आइए दूल्हे साहब बिना बारात के दूल्हे का इस तरह आना निहायत ही अच्छा है। कम ख़र्च और बालानशीन। मैं भी इसी को पसन्द करता हूँ।

मुसीबत०–माफ़ कीजिये साहब।

झटपट०–आपकी तेज़ी को समझता हूं। घबड़ाइए नहीं मैं भी जल्दी कर रहा हूं।

मुसीबत०–अजी बाबू झटपटराय मैं दूसरी बात के लिये आया हूं।

झटपट०–हां हां बिना आपके कहे हुए मैंने उसका भी इन्तज़ाम कर लिया है। ख़ातिर जमा रखिये किसी बात में कमी न होगी।

मुसीबत०–अजी यह बात नहीं है।

झटपट०–आप तो झूठ मूठ तकल्लुफ़ करते हैं। यहां सब सामान ठीक है। आपही की देर थी। कहां गए बाजे-वाले। कोई कह दो बाजा बजाएं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुसीबत०-अरे ! बाबू झटपटराय मैं इसके लिये नहीं आया हूं।

झटपट०-मैं समझ गया। आप दरवाज़ा चार के लिये अड़े हुए हैं। लीजिये दो रुपै लीजिये। अब तो चलिये भीतर चटपट गठबन्धन हो जाए।

मुसीबत०-या ईश्वर ! हर जगह नाक में दम। मैं किसी और मतलब के लिये आया हूं।

झटपट०-भीतर तो चलिये। जहां तक मुझ ग़रीब से हो सकेगा वह भी पूरा करेंगे।

मुसीबत०-लेकिन मुझे आप से कुछ कहना है।

झटपट०-फ़जूल देर कर रहे हैं। आइए आइए। साथ चले आइए।

मुसीबत०-मैं नहीं आउंगा। पहिले मेरी बात सुनलीजिये।

झटपट०-शादी के बाद इतमिनान से सुन लूंगा। अभी उसकी क्या जल्दी है ?

मुसीबत०-नहीं मैं इसी वक़्त कहूंगा।

झटपट०-अच्छा कहिये।

मुसीबत०-बाबू झटपटराय मैं मानता हूं कि मैंने आप की भतीजी से शादी करने का वादा किया। और आप भी उसकी शादी मेरे साथ कर देने के लिये तइयार होगए। मगर अब मैं समझता हूं कि मेरी उमर बहुत ज़्यादा है। और आपकी भतीजी के जोड़ के लायक़ मैं नहीं हूं।

झटपट०-आप ग़ल्ती पर हैं। मेरी भतीजी इस शादी से खुश है। मुझे यक़ीन है कि आप दोनों की ज़िन्दगी खुशी खुशी कटेगी।

मुसीबत०-नहीं साहब ! मैं ज़रा झक्की आदमी हूं। इस लिये मेरी बदमिज़ाजी की वजह से आपकी भतीजी को बड़ी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तकलीफ़ होगी।

झटपट०-ख़ातिर जमा रखिये । वह बड़ी सीधी है । उससे आप कभी गुस्सा नहीं हो सकते ।

मुसीबत०-एक बात और भी तो है कि मैं हमेशा बीमार ही रहता हूँ और वैद्यलोगों ने बताया है कि मुझ में शारिरिक रोग बहुत है । जिससे वह मुझसे नफ़रत करेगी ।

झटपट०-तब तो वह आपकी बहुत अच्छी तरह से ख़िदमत करेगी। क्योंकि वह दाया (Nurse) का काम भी जानती है ।

मुसीबत०-साहब मुख़्तसर यह है कि मैं आपको सलाह देता हूं कि उसकी शादी मेरे साथ मत कीजिये ।

झटपट०-अजी ज़बान देकर मुकरने वाले कोई और होंगे। जान जाये तो जाये मगर मैं अपना वादा नहीं तोड़ सकता ।

मुसीबत०-इसके लिये आप घबड़ाइए नहीं । आप बेक़सूर रहेंगे । मैं ही--

झटपट०-नहीं साहब। आप मेरे बाप के दोस्त हैं । आपके रहते किसी दूसरे के साथ थोड़े ही शादी कर सकता हूं ।

मुसीबत० (अलग) आग लगे इस दोस्ती पर । किस वक्त खली है ।

झटपट०-अगर मुझे कोई कुलच्छनी से शादी करने के लिये राजा भी मिलजाए । तौभी मैं आपही का ख़्याल करूंगा क्योंकि आप बुज़ुर्ग हैं । आपकी मैं बड़ी इज़्जत करता हूं ।

मुसीबत०-अजी जनाब ! मैं इसके लिये शुक्रिया अदा करता हूं । लेकिन मैं साफ़ साफ़ कहता हूं कि मैं शादी नहीं करूँगा ।

झटपट०-कौन ? आप ?

मुसीबत०-हां मैं ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

झटपट०-इसकी वजह ?

मुसीबत०-यही कि मैं शादी करने क़ाबिल नहीं हूं ।

झटपट०-शादी करना या न करना यह आपके अख़्तियार है । मैं किसी पर ज़बरदस्ती नहीं करता। आपने शादी करने के लिये पहिले वादा किया । जब इसके लिये सब इन्तज़ाम कर चुका तब आप कहते हैं कि नहीं करूंगा । अच्छा ठहरिये । मैं इस मामले में सोचकर अभी आपके पास जवाब भेजताहूं।

(जाता है)

मुसीबत०-(अकेला) जान बची लाखों पाए । मैं तो समझता था कि बड़ी झंझट पड़ेगी । मगर आदमी समझदार है । कैसी सहूलियत से छुट्टी मिलगई । बड़ी अक़लमन्दी की कि शादी से भाग निकला। नहीं तो आगे ईश्वर ही जाने । कब तक सर पर हाथ धर के रोता । वह भी जब जान बचती तब तो । एलो बा० झटपटराय का लड़का बिगड़ेदिल चला आ रहा है । देखूं मेरे लिये जवाब क्या लाता है ।

(बिगड़ेदिल का आना)

बिगड़े०-(बहुत झुक झुक के सलाम करता और बड़ी नर्मी से बातें करता है) अय... ..

मुसीबत०-सलाम भाई सलाम।

बिगड़े०-मेरे लालाजी ने मुझसे कहा है कि आप आए हैं

मुसीबत०-हां भाई इसके लिये मुझे ख़ुद अफ़सोसहै। लेकिन

बिगड़े०-आह ! जाने दीजिये कोई हर्ज नहीं।

मुसीबत०-मैं आप से सच कहता हूं कि मजबूरी थी। मुझे ऐसा ही करना पड़ा।

बिगड़े०-हज़ूर इन बातों को छोड़िये भी (बड़ी आजिज़ी और तकल्लुफ़ से दो पिस्तौल निकाल कर सामने लाता है) मेहरबानी करके इन दो में से एक आप ले लीजिये ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुसीबत०-मैं एक पिस्तौल लेलूँ ?

बिगड़े०-जी हां बड़ी मेहरबानी होगी।

मुसीबत०-काहे के लिए ?

बिगड़े०-हजूर आपने मेरी चचेरी बहिन से शादी करने का वादा किया और बाद को शादी करने से मुकर गए। इसलिये मैं आपकी ज़रा ख़ातिरदारी करने आया हूं। उम्मीद है आप इसको बुरा न मानेंगे।

मुसीबत०-अयं ! यह क्या ?

बिगड़े०-हमलोग और आदमियों की तरह इस मामले में ज़्यादा शोरगुल मचाना नहीं चाहते। बल्कि चुपचाप नर्मी और भलमनसाहत से इस मामले को तै करना चाहते हैं। इसलिये हज़ूर से मैं यह कहने के लिये आया हूं कि अगर हुकुम होतो हम आप एक दूसरे की खोपड़ी में गोली मारें।

मुसीबत०-(अलग) अररररर ! यह तो बड़ी खूनी ख़ातिरदारी है।

बिगड़े०-लीजिये हज़ूर पसन्द कीजिये।

मुसीबत०-अजी जनाब भाई साहब ग़रीबपरवर फ़ैज़गञ्जूर दाम अक़बालहू। मेरे पास कोई फ़ालतू खोपड़ी नहीं है जिसमें गोली चालाईजाए। निशानाबाज़ी सीखना है तो चान्दमारी जाइए। (अलग) कम्बख़्त कैसी भीगी बिल्ली की तरह ज़हर भरी बातें उगल रहा है।

बिगड़े०-नहीं हज़ूर आपके हुकुम से मुझे ऐसा ही करना होगा।

मुसीबत०-मैं आपके हाथ जोड़ता हूं। अपनी ख़ातिरदारी अपने घर रखिये।

बिगड़े०-जनाब जल्दी कीजिये। मुझे और भी तो काम करना है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुसीबत०-मैं यह सब वाहियात बातें नहीं पसंद करता।

बिगड़े०-तो क्या आप नहीं लड़ियेगा।

मुसीबत०-नहीं कभी नहीं।

बिगड़े०-सचमुच ?

बिगड़े०-(मुसीबतमल को अपनी छड़ी से खूबठो कने के बाद) देखिये आपको बुरा मानने की कोई वजह नहीं है। मैं सब बातें शरीफों की तरह कर रहा हूं। आपने अपना वादा तोड़ा। मैं आपसे लड़ने आया। आप लड़ने से इनकार करते हैं। इसलिये आपको मारता हूं। है न सब क़ायदे के मोताबिक़ ? आप शरीफ़ आदमी हैं। इसलिये मेरे बरताव को आप ज़रूर पसंद करते होंगे।

मुसीबत०-(अलग) बेहूदा बदमाश गदहा, पाजी सूवर कहींका।

बिगड़े०-(पिस्तौल सामने लाकर) आइए हजूर भलेमानुसों की तरह काम कीजिये। काहे को मुझे आप अपने कान पकड़वाने को मजबूर करते हैं।

मुसीबत०-क्या फिर ?

बिगड़े०-मैं किसी को मजबूर नहीं करता। लेकिन या तो वह शादी आपको करनी पड़ेगी या आपको गोली चलानी होगी।

मुसीबत०-मैं आपसे सच कहता हूं कि न मैं यह करूंगा और न मैं वह करूंगा।

बिगड़े०-यही बात ?

मुसीबत०-यही बात।

बिगड़े०-तो फिर हुकुम है न ?

(छड़ी से ठोंकता है)।

मुसीबत०-अरे ! हाय ! हाय !

बिगड़े०-हजूर मैं क्या करूं ! आपके साथ इस तरह का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बरताव करते मुझे खुद बुरा मालूम होता है। लेकिन जब तक हजूर शादी करने या लड़ने के लिये तइयार न हो जायेंगे तब तक मैं हजूर को ठोंकता ही रहूंगा। (छड़ी उठाता है)

मुसीबत०—अच्छा बाबा मैं शादी करूंगा । शादी करूंगा।

बिगड़े०—बड़ी खुशी की बात है कि हजूर का दिमाग़ दुरुस्त होगया और सब बिगड़ी बातें बन गईं। जितनी हजूर की मैं इज़्ज़त करता हूं उतनी किसी की भी नहीं करता। फिर हजूर समझ सकते हैं कि हजूर के मारने में मुझे कितना दिली सदमा हुआ होगा । ख़ैर यह सब झगड़ा बखेड़ा बड़ी सहूलियत से तय होगया। अच्छा अब चलिये सीधे इसतरफ़। (डन्डा उठाता है । और उसे धमकाता हुआ भीतर ले जाता है)

दृश्य — ३.

झटपटराय का मकान का दूसरा हिस्सा।

(झटपटराय कुलच्छनी वग़ैरह)

(बिगड़ेदिल और मुसीबत का आना)

बिगड़े०—लीजिये दूल्हे साहब आगये । और अब शादी करने के लिये अच्छी तरह से तइयार हैं।

झटपट०—तो फिर क्या कहना है। वाह ! वाह ! आइये आइये और अपने हाथ में लीजिये इसका हाथ । आप दोनों फले फूलें हमेशा आबाद रहें (अलग) या चूल्हे भाड़ में जायें। शुक्र है जान छूटी और मेरे सर से बला टली।

मुसीबत०—लो अब नाक में दम पूरा होगया।

(गाने वाले लड़कों का मजमुआ लिये हुए सलाहबख़्श का आना)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सलाह--मुबारक हो । शादी मुबारक हो । देखिये दूल्हा साहिब मैं अपने वादे का कितना सच्चा हूं । कैसे मौके से आया हूं मुबारकबादी देने न कहियेगा ? और बड़े सामान से आया हूँ । अरे लड़को इस शादी की खुशी में ज़रा वही मुबारकबादी तो गाना । वही ! वही !

(लड़कों का मिलकर गाना)

हुस्न ओ खूबी कि है भंडार मुबारकबाशद ।
अबतो घर बैठे हो व्यापार मुबारकबाशद ॥
बीबी सोलह की तो दूल्हा मियां सोलह पर्जे ।
ऐसी नौची को यह मुग्दार मुबारकबाशद ॥
इस तरफ़ ज़ुल्फ़ सियहफ़ाम उधर बाल सफ़ेद ।
सुबहदम रात के आसार मुबारकबाशद ॥
यांतो है जोशे जवानी वहां पीरी का खुमार ।
बाबा पोती का करे प्यार मुबारकबाशद ॥
गुलशने हुस्न में दुलहिन की जवानी के समर ।
इन दिनों खूब है तय्यार मुबारकबाशद ॥
दस्त गुस्ताख़ बढ़ाया तो यह दुलहिनबोलीं ।
लाज लीन्हिस मोरी दहिजार मुबारकबाशद ॥
लिये चलते हैं मुहल्ले में नयी चीज़ जनाब ।
गर्महो यारों का बाज़ार मुबारकबाशद ॥
माल ओ ज़र खूब उड़े और हो मिहमांदारी ।
रोज़ फ़ैशन पे हो तकरार मुबारकबाशद ॥
आपकी शादी मगर लोगों के घर ईद हुई ।
सबको माशूक़ तरहदार मुबारकबाशद ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुफ़्तगू आपसे भी होगी जो फ़ुरसत पाई।
दोस्ती की रहे भरमार मुवारकवाशद॥
दिनमें जो चाहें करें आप मगर 'शव' के जनाव।
दोस्त और यार हों मुख़्तार मुवारकवाशद॥
चैन से कटती थी जञ्जाल में वेकार फंसे।
रात ओदिने झोकिये अब भार मुवारकवाशद॥
'शाद' क्या ख़ूब कहा तुमने यह मिसरा वल्लाह।
रातओ दिन जोरू की फिटकार मुवारकवाशद॥

(यह मुवारकवादी हमारे मित्र वा० दुर्गाप्रशाद श्रीवास्तव "शाद" बी. ए. ने हमारे अनुरोध पर कही है। अतएव उनको हमारा हार्दिक धन्यवाद है।)

जी. पी. श्री वास्तव

(ड्रापसीन का गिरना और तमाशे का ख़तम होना)

॥ समाप्त ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY.
Jangamwadi Math, VARANASI,
Acc. No. 3053

जवानी बनाम बुढ़ापा।

या

मियां की जूती मियां को सिर।

Moliere { (5) George Dandin : Ou, Le Mari Confondw
(6) La Jalousie Du Barbouille }

उपर लिखे हुए मोलियर को दोनों नाटकों को मिलाकर मैंने इस नाटक को तइयार किया है। क्योंकि दोनों का विषय एक ही था। पहिले मोलियर ने इस विषय का ढांचा Lajalousie Du Barbouille नामक प्रहसन में खड़ा किया था। बादको उन्होंने इसके फ़िलासफ़र—Doctor—के चरित्र को ज़रा दुरुस्त करके "नाक में दम" में मौलाना ख़प्तुल हवास का चरित्र खींचा। और बक़ीया मसाले से George Dandin नामक नाटक तइयार किया। मैंने इस नाटक में प्रहसन वाले Doctor को भकभकानन्द के रूप में लाकर प्रहसन और नाटक दोनों को मिलादिया है। गो ख़प्तुलहवास और भकभकानन्द अपनी पूर्व्व अवस्था में एकही कहे जा सकते हैं। मगर मैंने एक को मौलाना और दूसरे को पण्डित बनाकर और उनसे भिन्न बोली बुलवाकर यों दोनों के चरित्रों में कुछ भेद करदिया है जिससे एक नये मज़ाक़ की यहां गुञ्जाइश होगई है। यही एक ऐसा नाटक है जिसमें मोलियर ने एक व्याही औरत को अपने कर्तव्यों को भूलती हुई और कुमार्ग पर फिसलती हुई दिखलाया है। इसलिये इस नाटक को हिन्दुस्तानी बनाने में हिन्दुस्तानी समाज और आदर्श ने मेरी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राह में बड़ी रुकावटें डालीं। तब मुझे अन्त में बुढ़ापे की शादी की तरफ़ झुकना पड़ा। इस तरह से जवानी और बुढ़ापे में पेंचातानी दिखाकर मनचले बूढ़ों के शौक़ को दबाने के लिये सामान जुटाकर इसको भी थोड़ा बहुत शिक्षाप्रद बनाने की कोशिश की है। पात्रों के नाम भी इस तरह के रखे गये हैं जिससे किसी को बुरा न मालूम हो। इन बातों पर भी मुमकिन है हिन्दीवाले इस नाटक पर कुछ नाक भौं सिकोड़ें। मगर अगर वह आंख खोलकर देखें तो उन्हे मालूम होगा कि आजकल हिन्दी में इस तरह के नाटक की भी सख़्त ज़रूरत है।

मोलियर ने अपने इस नाटक में उन भोलेभाले दिहाती Bourgeois-अक्लमन्दों का ख़ाका उड़ाया था जो उन दिनो शहराती शरीफ़ज़ादी और फ़ैशनेबल औरतों से शादी करके शरीफ़ और जेन्टिलमैन बनने की कोशिश करते थे। और यों अपने रुपये पैसे गवांकर अन्त में ख़ासे उल्लू बनजाते थे। यह पहिले पहल Versailes में १८ जुलाई १६६८ को खेला गया था। मोलियर ने मु० बरबाद और मोलियर की स्त्री ने दिलाराम का पार्ट किया था। मैंने इसका अनुवाद १९१४ में किया था जो मालवे के "हिन्दी सर्वस्व" में क्रमशः कुछ प्रकाशित हुआ था। उसके बाद १९१८ में मैंने इसको दुबारा लिख कर नाटक और प्रहसन दोनों को एक साथ मिलाया। यह नाटक हिन्दुस्तानी सांचे में कुछ ऐसा उतरा है कि मालूम होता है कि यह 'नाक में दम' का दूसरा खण्ड है जिसमें उसका परिणाम दिखलाया गया है। इसलिये मुनासिब यही मालूम हुआ कि इसको 'नाक में दम' के अन्त में प्रकाशित कराऊं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पात्र।

१. मु० बरबाद-दिलारामका बूढ़ा शौहर।
२. घरबिगाड़०-दिलारामका चाहनेवाला।
३. झगड़ा फोड़०-घरबिगाड़ का नौकर।
४. डीवट०-मु०बरबाद का नौकर।
५. मिस्टर धरपकड़ दिलाराम का बाप।

पात्री।

१. मिसेज़ धरपकड़०-दिलारामकी मां।
२. दिलाराम०-मु० बरबाद की औरत।
३. उलझन०-दिलाराम की नौकरनी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जवानी बनाम बुढ़ापा ।

या

मियां की जूती मियां के सर ।

अङ्क—पहिला ।

दृश्य—१. मुन्शी बरबाद के मकान का बाहरी हिस्सा ।

(मुन्शी बरबाद का बाहर से आना)

मुशीबर०—(अकेला) लो और बुढ़ापे में शादी करो ! अरे ओ ! भोलेभाले बुज़ुरगो ! अरे वो बाहरी चटक मटक पर रीझने वालो मुझ ऐसे बेवकूफ़ो ! आओ और मुझ कम्बख़्त की हालत पर चार आंसू बहाकर क़सम खाओ कि जीते जी कभी भूल कर भी ज़माने की हवा खाई हुई फ़ैश्नेबिल औरतों के फेर में नहीं पडूंगा । और ख़ासकर बुढ़ापे में । भोली से भोली लड़की क्यों न हो मगर बुढ़ापा वह चीज़ है कि जहां इसके साथ में चली कि फिर तो वह चल निकली । पचास बरस की उम्र में शादी करना और एक नवीनवेली के संग ? और फिर यह उम्मीद करना कि पतिवर्त धर्म का वह नमूना होगी । ख़ाली उम्मीदही नहीं करना बल्कि उसे ऐसा बनाने के लिये हज़ारों कोशिशें करना अफ़सोस सारी बेकार हैं । ऐ ! मनचले बूढ़ो अपनी तबियत को सम्भालो । इन ख़ूबसूरत नागिनों से बचो । वह तुम्हारे वश की नहीं हैं । तुम्हारी इतनी अक़्ल नहीं है कि तुम इनकी चालों को, इनके झांसों को समझ सको । अगर मौत न आती हो तो शादी करो । अन्धा होने का पक्का इरादा हो तो शादी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करो। छाती पर कोदो दलवाने की ख़्वाहिश हो तो शादी करो। इज़्ज़त ख़ाक में मिलानी हो तो शादी करो। ये कम्बख़्त फ़ैशन की पुतलियां तुम्हारे ही रुपयों से अपना रंग जमाती हैं। और तुम्हीं को उल्टा नाच नचाती हैं। मैं ने अपने दोनों पैरों में कुल्हाड़ी मारी। मुझसे बड़ी बेवक़ूफ़ी हुई। बड़ी ग़ल्ती हुई। बहुत खोकर मेरी आंखें खुलीं। मगर मेरे पुराने भाइयो मेरी क़िस्मत को ज़रा ग़ौर से देखकर तुम बहुत कुछ सीख सकते हो। मैं डूबा तो डूबा मगर तुम तो धोखे से बचो। मकान के भीतर पैर रखते ही कलेजा जल भुन के ख़ाक होजाता है! न इस करवट चैन और न उस करवट चैन। न हाथों में इतनी ताक़त है कि इसका बदला ले सकूं और न खोपड़ी इतनी मज़बूत है कि रोज़ रोज़ कुछ सहता जाऊं आंखें खोलूं तो बेवकूफ़, नज़र बचाऊं तो बेवकूफ। अक़्ल का अन्धा तो थाही अब ईश्वर से दुआ है कि जल्दी आंखों का भी अन्धा करदे। हाय! क़िस्मत!

(भण्डाफोड़ मुन्शी बरबाद के मकान से निकलता है)।

मुन्शी बर०—(भण्डाफोड़ को अपने घर से निकलते हुए देखकर) यह कम्बख़्त मेरे मकान में क्यों गया था?

भण्डा०—(मुन्शी बरबाद को देख कर) यह बुड्ढा मुझे बुरी तरह घूर रहा है।

मुन्शी बर०—(अलग) इसको नहीं मालूम कि मैं कौन हूं?

भण्डा०—(अलग) यह कुछ शक करने लगा।

मुन्शी बर०—(अलग) यह मुझसे कुछ कहना चाहता है। मगर इसकी हिम्मत नहीं पड़ती।

भण्डा०—(अलग) ऐसा न हो कि कहीं इसने मुझे इस मकान से निकलते हुए देख लिया हो?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुन्शी बर०—अरे! ए भाई ए! ज़रा इधर आना।

भएडा:-मुन्शीजी सलाम।

मुन्शी बर०-सलाम! तुम्हारा मकान तो इस मोहल्ले में है नहीं?

भएडा०-नहीं मुन्शीजी मैं तो कलही यहां आया हूं।

मुन्शी बर०-मगर यह तो बताओ कि तुम उस मकान में क्या करने गये थे?

भएडा०-अरे! चु-चु-चु-चुप। ऐसा कहियेगा भी नहीं।

मुन्शी बर०-क्यों?

भएडा०-बस।

मुन्शी बर०-इसके पूछने में कोई ख़राबी है?

भएडा:-ख़बरदार यह किसी को नहीं मालूम होना चाहिये कि मैं उस मकान में गया था।

मुन्शी बर०-आख़िर क्यों?

भएडा०-वैसेही।

मुन्शी बर०-तौभी कुछ भी तो कहो।

भएडा०-ज़रा आहिस्ते से। कोई सुन न ले।

मुन्शी बर०-नहीं नहीं यहां कोई नहीं है।

भएडा०-बात यह है कि उस घर की घरवाली से और एक बाबूसाहब से आंखे लड़गई हैं। उन्होंने मुझको यहां भेजा था। मगर देखिये इसको कोई जानने न पावे। इसलिये मैं आपसे मिन्नत करता हूं कि भूलकर भी किसी से न कहियेगा कि मैंने इसको उस मकान में जाते हुए देखा था।

मुन्शी बर०-बहुत अच्छा।

भएडा०-छिपे चोरी का मामला है। इसलिये।

मुन्शी बर०हां-हां समझ गया।

भएडा०-हां तो फिर आप जानते ही हैं। उसका मर्द सुनते हैं कि बुड्ढा है और बड़ा शक्की है। वह कम्बख़्त दिनरात

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपनी जोरू की रखवाली किया करता है। इसलिये यह बात उसके कानों में न पड़ने पावे। नहीं तो आफ़त मचा देगा।

मुन्शी बर०-अच्छा!

भण्डा०-हां भई! उसको मालूम न होने पावे। नहीं तो सारा मज़ा किरकिरा होजावेगा।

मुन्शी बर०-ठीक है।

भण्डा०-वह कम्बख़्त जितनी चौकसी करता है। उतनाही उल्लू बनता है। कहां वह बुड्ढा खूसट और कहां वह सोलह बरस की नयी नवेली। वह चाल चलती है कि उसका बाप भी सर पटक के मरजाये तौभी कुछ पता न पाये। और मुन्शीजी सच्ची बात तो यह है कि बुढ़ापे में शादी करने का यही नतीजा है।

मुन्शी बर०-हां बुढ़ापे में शादी करने का यही नतीजा है।

भण्डा०-और ऐसे आदमी को बेवकूफ़ बनाने में कुछ भी नुक़सान नहीं है।

मुन्शी बर०-हां हां बल्कि ऐन सवाब है। अच्छा तो बाबूसाहब का नाम क्या है?

भण्डा०-भला सा नाम है। हां! याद आया "बाबू घरबिगाड़"

मुन्शी बर०-अरे! वही नये हज़रत जो इस मोहल्ले में आये हैं?

भण्डा०-हां हां! वही सामने जिनका मकान है।

मुन्शी बर०-(अलग) अब समझा। इसीलिये उस हरामज़ादे ने मेरे मकान के सामने मकान लिया है। मुझे शक तो पहिले ही हुआ था। मगर करता क्या? बुढ़ापे में शादी का यही नतीजा है।

भण्डा०-आदमी बड़ा भला है। ज़रासी बात के लिये उसने मुझे तीन रुपये दिये और दो उस बुड्ढे की बीबी से मिले हैं। पांचों घी में हैं। पांचों घी में।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुन्शी बर०-(अलग) हाय ! मेरा सर तो कढ़ाई में है। (प्रकट) हां भाई !आजकल दलालों ही की तो चान्दी है। अच्छा अब यह तो बताओ कि उस औरत से तुमसे मुलाक़ात कैसे हुई।

भएडा०-यह न पूछिये। दरवाज़े ही पर उसकी नौकरनी मिली। अय ! है ! ग़ज़ब की है वह तो। क्या प्यारा सा नाम है उसका "उलझन"। अरे मेरी प्यारी उलझन। वह देखतेही ताड़गई और फ़ौरनही मुझे अन्दर लेगई।

मुन्शी बर०-(अलग) अरे ! हरामज़ादी उलझन !

भएडा०-अरे मेरी प्यारी उलझन ! मुन्शीजी अपनी उलझन की तारीफ़ क्या करूं ? उसने तो मेरा दिल ही उलझा लिया, अब भला बिना उससे शादी किये चैन कहां ? अब तो उससे ज़रूर शादी करूंगा।

मुन्शी बर०-म-म-मगर बुढ़ापे में ?

भएडा०-अजी रहने दीजिये। सभी औरतें एकसी थोड़ी ही होती हैं ?

मुन्शी बर०-(अलग) यह लीजिये। पहिले सभी यही कहते हैं।

भएडा०-गो उम्र मेरी ढल चली है और ज़रा बुड्ढा भी होगया हूं। मगर इससे क्या ? दिल तो बुड्ढा नहीं है। और शादी होते ही मारे खुशी के फूलके फिर जवान होजाऊंगा।

मुन्शी बर०-(अलग) पहिले सभी यही समझते हैं।

भएडा०-औरत तो खुश रखने की सहल तरक़ीब। गहने दे दे कर खुश रखूंगा। और क्या ?

मुन्शी बर०-पहिले सभी यही तरकीवें सोचते हैं। (प्रकट) मगर यह तो बताओ उस औरत ने तुमको क्या जवाब दिया।

भएडा०-उसने कहा कि.................. ज़रा ठहर जाइये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मैं ठीक तरह से याद करलूं। हां! कहा कि "बाबूसाहब से मेरा सलाम कहना। और कहना कि इस कम्बख़्त बुड्ढे से सख़्त परेशान हूं। यह मेरी राह में कांटा है। मगर इसको उल्लू बनाकर आपसे मिलने की कोई न कोई तरकीब ज़रूर निकालूंगी"।

मुन्शी बर०-(अलग) वाहरी नेकचलन बीवी! वाह!

भराडा०-अरे मुन्शीजी। वह मज़ा आयेगा कि क्या कहूं? उस उल्लू को कुछ ख़बर होगी ही नहीं कि यहां क्या गुल खिल रहे हैं। अच्छा! सलाम। अब देर होती है। मगर ख़बरदार! कहियेगा नहीं किसी से।

मुन्शी बर०-बहुत अच्छा!

भराडा०-नहीं तो मेरी उलझन मुझसे ख़फ़ा होजायगी।

(जाता है)।

मुन्शी बर०-(अकेला) देखा मुन्शी बरबाद? देखा? तुम्हारी औरत तुम्हारी कैसी क़दर करती है। क्या करोगे? चुपके होके बैठरहो। बुढ़ापे में शादी करने का यही नतीजा है। या ईश्वर ऐसी औरतों से बचा जो अपने मर्द की मौत केलिये हरवक़्त दोआ करे। जो उसकी जान लेने की सैकड़ों फ़िकिर करे। हाय! अफ़सोस! ज़बान हिलाता हूं तो अपनी ही नाक कटती है और सख़्ती करता हूं तो अपनी हीजान जाती है। क्योंकि ऐसी औरतों पर सख़्ती करना गोया अपनी मौत बुलाने में जल्दी करना है। क्या ही अच्छा होता कि कोई मुझको इस वक़्त ख़ूब मारता। मैंने क्यों ऐसी बेवक़ूफ़ी की। क्यों इस उम्र में शादी की। कूंए में कूद पड़ना अच्छा। फांसी लगाकर मरजाना अच्छा। मगर बुढ़ापे में भूल कर भी शादी करना नहीं अच्छा। यह हरामज़ादी और कल की बच्ची मुझको इस तरह से उल्लू बनावे? मुझसे कभी सीधे मुंह बात न करे? हाय! क़िस्मत! मगर मैं भी वह आदमी हूं कि इसका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मज़ा खूब ही चखाऊंगा। मैं अभी जाकर अपने सास सशुर से सारा हाल कहता हूं।

(जाता है)।

दृश्य दूसरा

धरपकड़ का मकान।

(मिस्टर और मिसेज़ धरपकड़ के पास मुन्शी बरबाद का घबड़ाए हुए आना)

मिसेज़ धर०-अय कौन है ? मुन्शी बरबाद ? मैं तो डर गई थी।

मिस्टर धर०-क्यों क्यों दामाद साहब ख़ैरियत तो है ? आप आख़िर क्यों इतने जामे से बाहर हो रहे हैं ?

मुन्शी बर०-दिल में आग लगे और—

मिसेज़ धर०-अरे ! न सलाम न बन्दगी। यह बदतमीज़ी मैं नहीं सह सकती।

मुन्शी बर०-सास साहबा ! माफ़ कीजिये मैं औरही धुन में था।

मिसेज़ धर०-फिर वही बात ? क्योंजी तुम्हें क्या होगया है ? तुम्हें ज़रा भी एटिकेट (Etiquette) का ख़्याल नहीं ? तुम नहीं जानते कि तुम किससे बातें कर रहे हो ?

मुन्शी बर०-क्या हुआ क्या ?

मिसेज़ धर०-क्या यह कम्बख़ 'सास' का लफ़्ज़ तुम्हारी ज़बान से अलग नहीं होगा ?

मुन्शी बर०-अयं ! आपमेरी सास नहीं तो क्या आपमेरी...

मिसेज़ धर०-फिर वही लफ़्ज़ ? ख़बरदार 'मैडम' के सिवाय मुझे और किसी नाम से पुकारा तो अच्छी बात नहीं होगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुन्शी बर०-(अलग) बुढ़ापे में शादी का यही नतीजा है। बुड्ढे दामाद की इज़्ज़त ऐसीही होती है। (प्रकट) मगर इसके कहने में मुझसे बुराई क्या हुई?

मिसेज़ धर०-अफ़सोस! तुम नहीं समझते कि मामूली आदमियों में और जेन्टिलमैनों में कितना फ़र्क़ है। मैं तुम्हें जो कुछ चाहूं कह सकती हूं मगर तुमको हमेशा अपनी हैसियत का ख़्याल करके एटिकेट (Etiquette) के मोताबिक़ तमीज़ से हमलोगों के साथ बातें करना चाहिये।

मिस्टर धर०-हां हां ठीक है। और दूसरी बात यह है कि हम औरों पर यह ज़ाहिर होने नहीं देना चाहते कि हमारे दामाद की उमर हमारे बावरची के नाना से भी ज्यादे हैं।

मुंशी बर०-(अलग) बुज़ुर्ग दामाद की यह इज़्ज़त!

मिस्टरधर०-अच्छा तो मुन्शी बरबाद! तुम्हारी परेशानी की क्या वजह है?

मुन्शी बर०-(अलग) दूसरी परेशानी Etiquette की होगई। अपने दिल की जलन को सम्हालूं या एटिकेट फैटिकैट की पाबन्दी करूं? (प्रकट) अगर आप ऐसे जेन्टिलमैनों के साथ Etiquette की पाबंदी निहायत ज़रूरी है तो मैं एटिकेट की पूरी पाबंदी करता हुआ मैं मिस्टर धरपकड़ से यह कहता हूं कि... ... ...

मिस्टरधर०-ठहरो ज़रा! तुम्हें यह ख़्याल नहीं कि जब कोई आदमी किसी जेंटिलमैन से बातें करता है तो उसको उसका नाम नहीं लेना चाहिये। बल्कि ख़ाली जनाब यह या हज़ूर कहना चाहिये।

मुन्शीधर०-अच्छा तो जनाब सही हज़ूर सही या जनाब और हज़ूर दोनों सही और मिस्टर धरपकड़ नहीं। मुझको आपसे यह कहना है कि मेरी औरत को...

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिस्टर धरः--ठहरो! जब तुमको हमलोगों से हमारी लड़की का ज़िकिर कहना है तो उस वक़्त तुमको उसे अपनी औरत कह के नहीं पुकारना चाहिये।

मुंशी वर०--आग लगे ऐसी एटिकेट पर। क्यों जनाब क्या मेरी औरत मेरी औरत नहीं है?

मिस्टर धर०--वेशक! तुम्हारी औरत है। मगर यह भी तो ख़्याल रखना चाहिये। कि बुढ़ापे की शादी में और जवानी की शादी में कितना फ़र्क़ है।

मुन्शी वरः--(अलग) बुढ़ापे की शादी का यही नतीजा है। (प्रकट) ईश्वर के लिये थोड़ी देर तक अपनी जेन्टिलमैनी अलग रखिये। और मुझे थोड़ी सी बातें जिस तरह से मुझे कहनी आती है कहने दीजिये। (अलग) भाड़ में गई ऐसी 'एटिकेट' जिसकी वजह से वात तक करना मुशकिल है। (धरपकड़से) साफ़ बात यह है कि जनाब मैं आपकी लड़की से सख़्त परेशान हूं।

मिस्टर ध०--वजह, वजह इसकी वजह?

मिसेज धर०--क्या? क्या ऐसी ख़ूबसूरत लड़की। ख़ूब पढ़ी लिखी। सब बातों में होशियार। तमीज़दार। सारी ख़ूबियों से भरी। और ऐसी लड़की को कहते हो कि उससे परेशान हूं? वह शादी जिसकी वजह से तुम्हें इतने फ़ायदे हुए... ... ...

मुन्शी वर०--मेरी भी सुन लीजिये 'मैडम'। क्योंकि 'मैडम' कहना बहुत ज़रूरी है। इस शादी से तो असल फ़ायदा आपका हुआ। आपके ऊपर नालिश हुई। आप कौड़ियों की मोहताज हो रही थीं। अगर उस वक़्त मैं थैली न खोल देता तो आप लोगों की सारी जैंटिलमैनी पर पानी फिर जाता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिसेज़०--क्या तुम इसको कुछ गिनते ही नहीं कि तुमको

बुढ़ापे में ऐसी कमसिन खूबसूरत पढ़ी लिखी होशियार फ़ैशनेबिल लड़की मिली। ऐसी लड़की तो सपने में भी किसी जवान को नहीं मिलती।

मुन्शी वर०—मगर इसी के साथ साथ मेरी दौलत गई। चैन और आराम गये और अब किसी दिन जान भी जानेवाली है।

मिस्टर धर०—क्यों? क्यों? क्यों?

मुन्शी वर०—क्योंकि आपकी लड़की इस तरह से नहीं रहती जिस तरह ब्याही औरतों को रहना चाहिये। बल्कि वह ऐसे काम करती है कि जिससे इज़्ज़त में बट्टा लगने का बहुत डर है।

मिसेज़ धर०—ज़रा सोच समझ के बातें करो। मेरी लड़की उस ख़ानदान की है कि जिसके बल पर इज़्ज़त भी इतराती है। तीन सौ बरस हुए कि इस ख़ान्दान में किसी ने ऐसा काम नहीं किया कि कोई उंगली उठावे।

मुन्शी वर०—हां! मेरे बाप ने भी घी खाया था। और मेरे हाथ से अबतक उसकी खुश्बू आती है।

मिस्टर धर०—बहादुरी के लिये तो मैं नहीं कह सकता। मगर हमारे यहां की औरतें ख़ान्दानी नेकचलन होती हैं।

मिसेज़ धर०—क्यों? क्यों? बहादुरी के लिये क्यों नहीं कहसकते हो? क्या तुम्हारी मां तुम्हारे बाप की और मेरी मां मेरे बाप की डंडों से नहीं ख़बर लिया करती थीं।

मिस्टर धर०—हां हां ठीक है। हमारे यहां की औरतें बहादुर भी होती हैं।

मुन्शी वर०—वह ज़माना और था और यह ज़माना और है। आपकी लड़की ने भी ज़माने के साथ साथ रंग बदल दिया है। ये नासमझ औरतें ज़राहीसा पढ़कर फ़ैशन के फेर में पड़कर अपने फ़र्ज़ को भूलजाती हैं। इन चलते पुर्ज़े मर्दों की चालों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को नहीं समझतीं। दूसरे मर्दों के साथ उठने बैठने से हर घड़ी चहल पहल रहने से यह कमज़ोर और अन्धी औरतें...।

मिस्टर धर०-ज़रा साफ़ साफ़ कहो। मेरी समझ में तुम्हारी बातें ठीक नहीं आतीं।

मिसेज़ धर०-तुम्हारा क्या मतलब है कि औरतों को आज़ादी न दी जावे। इन बेचारियों को बेवकूफ़ हिन्दुस्तानियों की तरह परदे की सख़ क़ैद में रख...।

मुन्शी बर०-बेशक दीजावे। मगर यह भी तो देखना चाहिये, कि औरतें आज़ादी के क़ाबिल हैं या नहीं। हमारे यहां के मर्द इतमिनान के क़ाबिल हैं या नहीं।

मिसेज़ धर०-कुछ नहीं यह सब बुढ़ापे की शादी का नतीजा है। क्योंकि बूढ़े हददर्जे के शक्की होते हैं। और वह शादी के पहिलेही फ़र्ज़ करलिया करते हैं कि मेरी औरत ज़रूर बदचलन होजायेगी।

मिस्टरधर०-तो क्या हमारी लड़की इस आज़ादी की वजह से किसी बुरी राह पर आ पड़ी है?

मुन्शीबर०- हां!खुल्लम खुल्ला। ग़ैरों से ख़त किताबत मेरी आंखों के सामने जारी है।

मिस्टरधर०-मगर यह भी जाना कि किस नीयत से।

मुन्शीबर०-बुरी नीयत से! बुरी नीयत से!!

मिस्टर धर०-हैं! हैं! यह क्या कहते हो? अगर यह सच है तो अभी हम उसका गला जाकर घोंट देंगे।

मिसेज़ धर०-यह बुढ़ापे की शादी का नतीजा है। यह सारा झगड़ा ख़ाली शकही का बोया हुआ है।

मिस्टर धर०-वह कौन आदमी है कि जिसकी कम्बख़्ती आई

मुन्शी बर०-उसका नाम घरबिगाड़ है। मेरे मकान के सामने रहता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिस्टर धर०-मैं अभी जाकर उन दोनों का काम तमाम करता हूं। मगर यह बात सच है न ?

मुन्शी बर०-बिल्कुल !

मिस्टर धर०-(मिसेज़ धरपकड़ से) Dear wify ! ज़रा मैं मुन्शी बरबाद के साथ उस घरबिगाड़ के पास जाता हूं। मगर यह बात समझ में नहीं आती कि लड़कियों को इतना पढ़ाने का नतीजा यह होता है।

(मिस्टर धरपकड़ और मुन्शी बरबाद का आना)

मिसेज़ धर०-मगर बुढ़ापे की शादी का नतीजा तो यह होता है। कोई बूढ़ों के दिल से शक कैसे दूर करे जो अपनी जवान औरतों की कारस्वाइयों को हर वक्त शक के चश्मे से देखा करते हैं ? ख़ैर ! मैं भी अभी अपनी लड़की के पास जाती हूं। और इस बात को एकदम झूठी साबित कर देने में उसकी मदद करती हूं।

दृश्य तीसरा-सड़क।

(मिस्टर धरपकड़ और मु० बरबाद)

मिस्टर धर०-अभी भेद खुलजायेगा और सारा झगड़ा ख़तम होजायेगा।

मुन्शी बर०-देखिये वह हरामज़ादा वह चला आ रहा है।

(घरबिगाड़ का आना)

मिस्टर धर०-क्यों जनाब आप मुझको जानते हैं ?

घर०-बदक़िस्मती से यह इज्ज़त मुझको अभी नहीं हासिल है।

मिस्टर धर०-मेरा नाम मिस्टर धरपकड़ है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घर०-आपकी मुलाक़ात से मुझे बहुत ख़ुशी हुई।

मिस्टर धर०–मैं एक बड़ा मशहूर जेन्टिलमैन हूं। इंगलैण्ड, फ्रांस, अमेरिका सब जगह मैं हो आया हूं।

मुन्शी बर०–(अलग) सरकार के ख़र्चे पर। जब इन्हे काला पानी हुआ था।

मिस्टर धर०–मेरे बाप जिनका नाम मिस्टर लड़झगड़ था, उन्होंने कई एक शेरों का शिकार किया था। और गीदड़ तो सैकड़ों ही मारे थे।

मुन्शी बं०–(अलग) न जाने सपने में या पिनक में!

मिस्टर धर०–मेरे दादा भी पक्के जेंटिलमैन थे। क्योंकि उनके मरने के बाद न जाने कितने पतलून और कोट उनके बकस से निकले।

मुन्शी बर०–(अलग) अयं? क्या धोबी थे या दरज़ी?

धर०–इसमें क्या शक है।

मिस्टर धर०–मतलब यह है कि मैं ख़ान्दानी जेण्टिलमैन हूं।

मुन्शी बर०–(अलग) यह तो सूरत से ज़ाहिर है।

मिस्टर धर०–मैंने सुना है कि आप एक नौजवान लड़की से मुहब्बत करते हैं जो कि मेरी बेटी है और जिसके यह शौहर हैं।

धर०–कौन? मैं?

मिस्टर धर०–हां जनाब! आप! अब इसका क्या जवाब देते हैं? और किस तरह आप अपनी सफ़ाई साबित करते हैं?

धर०–मगर यह किस कम्बख़्त ने आप से ऐसा कहा है?

मिस्टर धर०–जो कि इसको सच समझता है।

धर०–उस हरामज़ादे ने आप से बिल्कुल झूठ कहा है। मैं इज़्ज़तवाला आदमी हूं। मेरे पास कई Good conduct के सरटिफ़िकट हैं। क्या मुझसे ऐसा कमीनापन हो सकता है? भला मैं उस ख़ूबसूरत लड़की को जिसको आपकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बेटी होने की इज़्ज़त हासिल है प्यार कर सकता हूं? मैं आपकी बड़ी इज़्ज़त करता हूं। जिस बेवकूफ़ ने आप से कहा है वह सर से पैर तक ख़ालिस उल्लू का पट्ठा है।

मिस्टर धर०–मुन्शी बरबाद!

मुन्शी बर०–जनाब!

धर०–वह कमीना है। वह दोग़ला है।

मिस्टर धर०–इनके सामने आकर जवाब दो।

मुन्शी बर०–अब आपही जवाब दीजिये।

धर०–अगर मुझे मालूम हो जावे कि वह कहां है तो अभी अभी मैं उसकी ज़बान काटलूं। और मुंह पर थूक दूं।

मिस्टर धर०–(मुन्शी बरबाद से) अब तुम अपनी बात का सबूत दो।

मुन्शी बर०–सबूत दे चुका। मेरी बात बिल्कुल सच है।

धर०–क्यों जनाब यही आपके दामाद हैं। जिन्होंने...?

मिस्टर०–हां इन्होंही ने मुझ से यह बात कही है।

धर०–अफ़सोस! अगर आपके दामाद न होते तो अभी अभी बताता कि हम ऐसे शरीफ़ों को बदनाम करना कुछ खेल नहीं है।

(मिसेज़ धरपकड़, दिलाराम और उलझन का आना)

मिसेज़ धर०–अपनी औरतों को पिञ्जड़े में बन्द करके रखने वाले। अक़्ल के दुश्मनों, शक्की मर्दों तुम्हें कौन समझावे? यह लड़की मेरी दिलाराम मौजूद है। सब के सामने अपनी सफ़ाई देने को तइयार है।

धर०–(दिलाराम से मुन्शी बरबाद की तरफ़ इशारा करके) क्या आप ने इन से कहा है कि मैं आपको प्यार करता हूं?

दिल०–कौन मैं? भला मैं ऐसा कह सकती हूं? क्या यह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बात है? अच्छा अगर ऐसा ही है तो मैं चाहती हूं कि तुम मुझको प्यार करके देख लो। हां हां सिर्फ़ आज़माने के लिये। मैं तुम को सलाह देती हूं। तुम ऐसा करो तो तुम्हें खुद ही सारी असलियत मालूम हो जावेगी। ज़रा तुम अपने दिल का हाल कहला भेजो। प्रेम की चिट्ठियां लिखो। (मु० बरबाद की तरफ़ इशारा करके) जब यह घर पर न हो मुझ से मिलने की कोशिश करो। जितनी तरकीबें छिपे चोरी की मुहब्बत में की जाती हैं वह तुम सब करके देखलो तभी जानोगे कि इसका नतीजा क्या होता है। और तुम्हारे साथ कैसा बरताओ किया जाता है। समझे जनाब?

उलझन०—(अलग) समझनेवाले की मौत है।

घर०—बस बस बस माफ़ कीजिये। इतने बड़े लेक्चर की कोई ज़रूरत नहीं। मगर यह झूठ मूठ की खबर किसने उड़ादी कि मैं आपको प्यार करता हूं?

दिलाराम०—मैं खुद चक्कर में हूं कि मैं यहां की बातों का क्या मतलब निकालूं?

घर०—बदनाम करने वाले की ज़बान को कौन रोके? भला कभी भी मैंने कोई आपसे प्यार की बातें की हैं?

दिलाराम०—अगर की होतीं तो तुम्हारी पूरी तरह से ख़ातिर भी की जाती।

उलझन०—हां बीबी! इनके साथ ऐसी ख़ातिरदारी की जाती कि बरसों याद करते कि हां क़िसी से पाला पड़ा था।

घर०—मुझ से आप ख़ातिर जमा रखिये। मैं वह आदमी नहीं हूं कि किसी औरत का दिल दुखाऊं। मैं आपकी और आपके मां बाप की इतनी इज़्ज़त करता हूं कि आपको प्यार करने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ सकती।

मिसेज़ घर०—(मुन्शी बरबाद से) अब तो दिल में चैन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आया तुम्हारे ?

मिस्टर:-क्यों मुंशी बरबाद अब तुम क्या कहते हो ?

मुन्शी वर०-यह सब कहने की बातें हैं। क्या करूं मुझ को अब साफ़ साफ़ कहना पड़ता है। आज दोपहर को इस घरबिगाड़ ने मेरी औरत नहीं आपकी लड़की के पास अपना आदमी भेजा था।

दिल०-मेरे-मेरे पास आदमी आया था ?

घर:-मैंने आदमी भेजा ?

दिल:-क्यों ? उलझन ?

घर०-(उलझन से) भला तुम कभी इसको मान सकती हो ?

उलझन:-वे पर की बात कौन मान सकता है ? ऐसी झूठी बात तो मैंने न कभी देखी न सुनी।

मुन्शी बर:-चुप हरामज़ादी कहीं की ! तू ही तो उस आदमी को भीतर ले गइ थी।

उलझन०-कौन ? मैं ?

मुन्शी वर०-हां हां तू ! देखो तो सूवर की बच्ची को। कैसी अनजान बनती है।

उलझन०-हे गुदड़िया पीर ! इसमें अगर ज़रा भी सच्चाई हो तो सामने वाले की आंखें फूटें।

मुन्शी बर:—मैं तुझे खूब जानता हूं। दग़ाबाज़ झूठी कहीं की।

उलझन:-बीबी दिलाराम !

मुन्शी वर०-चुप ! चुप ! चुप ! नहीं तो सारा गुस्सा तुझी पर बेखटके उतारूंगा। क्योंकि तेरा बाप कोई जेंटिलमैन नहीं है।

दिल:-झूठ ! झूठ ! एकदम झूठ ! मैं इसको नहीं सह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सकती। मुझ में इतना दम नहीं कि मैं इसका जवाब दे सकूं। या ईश्वर, बेक़सूर को सताने की सज़ा तू ही दे। अगर मुझ से कोई क़सूर हुआ है तो बस यही मैं इनकी (मुन्शी बरबाद की तरफ़ इशारा करके) बातों को हमेशा चुपचाप सहती आई हूं।

उलझन०–यही तो बात है। बीबी दिलाराम ऐसी हैं कि इन बातों पर भी हमेशा इनकी ख़िदमत ही किया करती हैं।

दिल०–यह सारी मेरी बदक़िस्मती और मेरी ख़िदमत करने का नतीजा है। अगर मैं ज़रा तेज़ मिज़ाज होती तो आज मेरी झूठमूठ की बेइज़्ज़ती इस तरह से न होती। मैं यह अब ज़्यादे नहीं सुन सकती।

(जाती है)

मिसेज़ घर०–(मु० बरबाद से) तुम ऐसी नेकचलन औरत के लायक़ नहीं हो।

(जाती है)

उलझन०–बेशक! ऐसी सीधी औरत का ऐसा मर्द? अगर मैं इनकी बीबी होती तो बता देती अच्छी तरह से। (घरबिगाड़ से) हां बाबू साहब! मुन्शी बरबाद को कम से कम जलाने के लिये आप ज़रूर बीबी दिलाराम को प्यार कीजिये। मैं अब आपकी बड़ी मदद करूंगी। क्योंकि मुझ को इन्होंने झूठमूठ इतनी गालियां दी हैं। भला मैं इसका बिना बदला लिये मानने की.........

(जाती है)

मिस्टर घर०–मुन्शी बरबाद! तुम ऐसी ही सज़ा के क़ाबिल हो। जाओ और जाकर यह सीखो कि शरीफ़ औरतों के साथ किस तरह रहना चाहिये। ख़बरदार जो तुमने फिर ऐसी ग़लती की है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुन्शी बर०-मैं जो असलियत में सच्चा था झूठा साबित होगया और वह झूठी सच्ची हो गई। हाय! बुढ़ापे की शादी का यही नतीजा है।

घर०-(मिस्टर धरपकड़ से) मगर सुनिये तो। अब आपको मालूम ही होगया कि मुझपर झूठमूठ क़सूर लगाया गया। मेरी इतनी बेइज़्ज़ती हुई इसका अब कौन जवाबदेही देगा?

मिस्टर धर०-बहुत ठीक! शरीफ़ों की इज़्ज़त में बट्टा लगाना कोई खेल नहीं है। मुन्शी बरबाद अब क्या जवाब देते हो?

मुन्शी बर०-कैसा सवाल जवाब?

मिस्टर धर०-तुम पर यह हतक इज़्ज़ती का दावा कर सकते हैं। क्योंकि तुमने इनको झूठमूठ बदनाम किया।

मुन्शी बर०-नहीं! झूठमूठ नहीं। मेरा ईश्वर गवाह है कि मैं सच्चा हूं। और जो इनपर क़सूर लगाया वह !बिल्कुल सच्चा है।

मिस्टर धर०-हुआकरे। मगर साबित तो नहीं हुआ। इन्होंने तुम्हारी बातों को साफ़ इनकार करके सफ़ाई देदी। तुम कभी भी उस आदमी पर कोई क़सूर लगाही नहीं सकते हो जो अपने क़सूरों को मानता नहो।

मुन्शीबर०-यह तो खूब रहा। कलेजे में छुरी भोंकदे और इनकार करके साफ़ बेगुनाह बनजाए। फ़र्ज़ कीजिये-

मिस्टर धर०-हुश! बहस करने की कोई ज़रूरत नहीं। तुम इनसे माफ़ी मांगो जैसा मैं कहता हूं।

मुन्शीबर०-मैं? मैं? और इससे माफ़ी मांगू?

मिस्टर०-हां! हां! सीधी तरह से जल्दी माफ़ी मांगो। जैसा मैं कहता हूं वैसा करो।

मुन्शीबर०-मैं ऐसा नहीं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिस्टर घर०–मुन्शी बरबाद ! देखो फ़ज़ूल गुस्सा मत दिलाओ। नहीं तो मैं इनकी तरफ़ादारी करनेलगूंगा। और तुम पर नालिश कराके तुम्हें जेलख़ाने भिजवादूंगा।

मुन्शीबर०–(अलग) बूढ़े दामाद की यह इज़्ज़त होती है।

मिस्टर घर०–पहिले झुककर सलाम करो। क्योंकि यह जेन्टिलमैन हैं और तुम जेन्टिलमैन नहीं हो।

मुन्शीवर०–(सलाम करता हुआ अलग) या ईश्वर मेरा हाथ कटजाये।

मिस्टर घर०– जो मैं कहता जाऊं वही तुम कहते जाओ। अच्छा कहो।

" हुज़ूर " ......

मुन्शीवर०–" हुज़ूर "——

मिस्टर घर०–' मैं आपसे माफ़ी मागता हूँ .....(मुन्शी बरबादको हिचकिचाते हुए देखकर) आह !

मुन्शी बर०–मैं आपसे माफ़ी मांगता हूं।

मिस्टर घर०–आपको झूठमूठ बदनाम करने के लिये।...

मुन्शी बर०–आपको झूठमूठ बदनाम करने के लिये।

मिस्टरघर०–मैं अपने क़सूर को मानता हूं और बहुत पछताता हूं।

मुन्शी बर०–तुम्हारे क़सूर को मैं मानता हूं और बहुत पछताता हूं।

मिस्टर घर०–और हाथ जोड़ कर मैं यह कहता हूं–हाथ जोड़ो।

मुन्शी बर०– न यह तो होगा।

मिस्टर घर०–क्या ?

मुन्शी बर०-हाथ जोड़कर मैं यह कहता हूं।

मिस्टर घर०–कि मैं आपका गुलाम हूं।

मुन्शी बर०–कौन मैं इस हरामज़ादे का गुलाम हूंगा ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिस्टर धर०--(धमकाता हुआ) कहो !

धर०--बस ! बस ! होगया । अब ज़्यादे कहने की कोई ज़रूरत नहीं ।

मिस्टर धर० - नहीं नहीं । मैं Etiquette की पूरी पाबन्दी कराउंगा । कहो कि मैं आपका गुलाम हूं ।

मुन्शी बर०-मैं आपका गुलाम हूं——

धर०-(मुन्शी बरबाद से) मैं ने आपको माफ़ कर दिया और उम्मीद करता हूं कि आप भी मेरी तरफ़ से अपने बुरे ख़्यालात हटा देंगे । (मि०-धरपकड़ से) मिस्टर धरपकड़ । मैं आपको सलाम करता हूं । आपको बड़ी तकलीफ़ हुई । इसके लिये मुझे बहुत अफ़सोस है ।

मिस्टर धर०-इसके लिये मैं आपका बहुत शुक्रिया अदा करता हूं । और आप मुझसे जब चाहें तब मिल सकते हैं ।

धर०-मैं इस मिहरबानी का ज़रूर फ़ायदा उठाउंगा ।

(जाता है)

मिस्टर०--देखो मु० बरबाद इस तरह से मामलात रफ़ा दफ़ा किये जाते हैं । समझे ? अब कभी भी ऐसी ग़ल्ती मत करना ।

(जाता है)

मुन्शी बर०-मियाकी जूती मियां के सर । मुन्शी बरबाद तुम इसी सज़ा के क़ाबिल हो । सच है बुढ़ापे की शादी का यही नतीजा है । अफ़सोस ! एक ज़रा सी छोकड़ी इतने बड़े साठ बरस के बुज़ुर्ग को उंगलियों पर नचावे । हाय !

गाना ।

बर०-फूटी क़िस्मत फूटी क़िस्मत जब से की है शादी ।
[illegible] । सर पर अपने आफ़त ढाई ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रहती हरदम है लड़ाई । जीना अत्र है मुशकिल भाई ।
बुढ़ापे की शादी में यही ख़रावी है अपनी तवाही है–
–घर की होजाती है पूरी वरवादी । फूटी क़िस्मत०–

मुन्शी वर०– आख़िर करूं तो क्या ? किसतरह से उससे पार पाऊं ? मेरी अक्लि काम नहीं देती । आहाहा ! परिडत भकभकानन्द आरहे हैं । इनसे राय लूं । यह ज़रूर कुछ राह बतायेंगे ।

(भकभकानन्द का आना)

भक०–" कविः करोति काव्यानि रसं जानन्ति परिडताः । कन्या सुरत चातुर्यं जामाता वेत्ति नो पिता । " अतएव हमकवियों के दामाद हैं ।

मुन्शी वर०–अहाहा ! बड़े मौक़े से मिले आप । मैं आपही के पास जाने के लिये सोच रहा था ।

भक०–हे मित्र तुम बड़े मूर्ख हो, बड़े असभ्य हो, बड़े दुष्ट हो, बड़े मूढ़ हो, बड़े शठ हो, बड़े मन्द बुद्धि हो, जो मार्ग में हमारे ऐसे परम विद्वान परिडत को टोकते हो ।

" अनाहूतोपसृष्टानामनाहूतोपजल्पिताम । "

क्यों ? ऐसी धृष्टता ! तुम हमको विना अर्घ्यादि से सत्कार किये हुए, विना अष्टाध्यायी स्तुति पढ़े हुए सम्बोधन करने का साहस रखते हो ? क्या तुम नहीं जानते हो कि हम महा वइयाकरण हैं । हमारे शुभनाम के पूर्व्व व्यालिस दर्जन श्री तत् पश्चात महामहोपाध्याय तत्पश्चात वेदरत्न विद्याभूषण इत्यादि इत्यादि कहकर आदर पूर्व्वक मेरा नाम भकभकानन्द शास्त्री इति ग्रहण कर तत् पश्चात्......

मुन्शी वर०–माफ़ कीजिये । बड़ी ग़लती हुई । मेरी खुद अक़्लि ठिकाने नहीं है ।

भक०–नाम समाप्त भी नहीं हुआ और बीच ही में तुम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फिर विघ्न डाल बैठे। बड़े दुष्ट हो।

मुन्शी वर०-परिडतजी मुझे आपका नाम मालूम है। उसके कहने की कोई ज़रूरत नहीं है।

भक्क०-अच्छा बताओ परिडत शब्द की कैसे उत्पत्ति हुई। या परिडत शब्द बनता क्योंकर है।

मुन्शी वर०- अजी भड़भूजे के यहां बनता हो या लोहार के यहां बनता हो इससे मुझसे क्या बहस ?

भक्क०-तुम कुछ नहीं जानते हो। आहाहा।-

" माता गदही पिता उल्लू येन बालो न पाठिता।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा॥ "

देखो पवर्ग का प्रथम अक्षर प तत्पश्चात ण और ड संयुक्त ह्रस्व इकार तत्पश्चात त। अब समझे परिडत कैसे बनता है। अतेव मित्र बिना समझे कोई शब्द का प्रयोग न किया करो। अन्यथा-

" यावत् शोभते मूर्ख स्तावत् किञ्चिन्न भाषिते। "

अच्छा तो क्या कहरहे थे हम अभी। हां तुम हमको क्या समझते हो ?

मुन्शी वर०-आप एक बड़े भारी लायक़ फ़ायक परिडत हैं। और मैं एक नालायक़ कमपढ़ा बेवक़ूफ़ हूं। और मुसीबत के चंगुल में फंसा हूं। इसलिये मैं उम्मीद करता हूं कि आप मेरी मुसीबतों को सुनकर मुझे उस से छुटकारा पाने की कोई तदबीर बतायेंगे।

भक्क०-मित्र मैं केवल परिडतही नहीं हूं। वरन् महावइयाकरण भी हूं। और अतेव एक दो तीन चार पांच छे सात आठ नव दश मैं दशगुना परिडत हूं। प्रथम एक शब्द आहाहा!-

" एकोल्पार्थे प्रधाने च प्रथमे केवले तथा।
साधारणे समानेपि संख्यायां च प्रयुज्यते॥ "

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिस प्रकार से सकल संख्यावाचक शब्दों में शब्द एक प्रथम गिनाजाता है उसी प्रकार से मैं आकाश पाताल भूमि तीनो लोक में, भूत भविष्य वर्तमान तीनो काल के पण्डितों में मैं प्रथम गिना जाता हूं। अतेव मैं एक गुना पण्डित हूं। और दूसरे-

मुन्शी बर०-बहुत अच्छा पंडितजी महाराज। मगर-

भक्क०-अक्षर के दो विभाग हैं स्वर और व्यञ्जन। और इन दोनों का मुझे पूरा ज्ञान है। अतेव मैं दो गुना पण्डित महावइकरणोऽस्मि। तीसरे कलियुग में तम्बाकू तीन प्रकार से सेवन करने के लिये बतलाया गया है।

"तमालं त्रिविधं प्रोक्तं कलौ भागीरथी यथा।
क्वचित् हुक्का क्वचित् थुक्का क्वचित् नासाग्रगामिनी॥"

और मैं इन तीनों प्रकारों से इसका भलीभांति सेवन करता हूं। इसलिये मैं तीन गुना पण्डित हूं।

मुन्शी बर०-बहुत अच्छा बहुत अच्छा महाराज! मगर बात यह है।

भक्क०-चौथे अन्धे चार प्रकार के होते हैं।

"नच पश्यति जन्मन्धाः कामान्धो नैव पश्यति।
न पश्यति मदोन्मत्तो ह्यर्थी दोषान्न पश्यति॥"

और यहां चारो गुण एकत्रित हैं। इसलिये हम चारगुना पण्डित हैं। और पाञ्चवे पिता पांच प्रकार के होते हैं।

"जनिता चोपनेता यश्च विद्यां प्रयच्छति। यानी हमलोग।
अन्नदाता भयत्राता पञ्चैते पितरः स्मृता।"

अतेव हम पाच गुना पण्डित हैं और इस तरह से पांचो प्रकार से तुम्हारे पिता यानि बाप हुए।

मुन्शी बर०-क्या? क्या? क्या?

भक्क०-छठें नकारने के छे विधि हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"मौनं कालविलम्बश्च प्रयाणं भूमिदर्शनं।
भृकुट्यन्यमुखी वार्ता नकारः षडविधः स्मृतः॥
और मैं सब जानता हूं। इसलिये मैं छो गुना पण्डित हूं।
मुन्शी वर०-अच्छा बके जाइये। खूब पेट भरके बकलीजिये।
भक्त०-सातवें गानविद्या के सात मुंह हैं जिनको स्वर कहते हैं।
"षड्ज ऋषभ गंधार स्वर मध्यम पंचम मान।
धैवत और निषाद को, स, ऋ, ग, म, प, ध, नी, जान॥"
परन्तु ये स्वर व्याकर्ण के स्वरों से भिन्न होते हैं। जिनको भलीभांति जानने के लिये इनका भी जानना अति आवश्यक है। और मुझे इनका पूरा ज्ञान है। अतेव हम सातगुना पण्डित हैं। आठवें।-
"मूर्खस्य चाष्टचिन्हानि शीका टीका च मालिका।
प्रतिष्ठा लम्बधोत्राणि हाजी होजी च योग्यता॥"
और हम इन आठों भूषणों से भूषित हैं। और नवे हे मूर्ख मित्र-
मुन्शीवर०-अजी सुनिये तो? बात तो सुनिये-
भक्त०-और नवे-
"इक्षुदण्डास्तिलाः क्षुद्राः कान्ता हेम च मेदनी।
चन्दनं दधि ताम्बूलं मर्दनं गुणवर्धनम्॥"
और मैं सबको जानता हूं। इसलिये नवगुना पण्डित हूं। दसवें व्याकरण की जड़ क्रियायें हैं और समस्त क्रियायें दश गणों और दश ही लकारों में समाप्त हो जाती हैं। समझे? और मुझे यह सब ज्ञात हैं। अतेव मैं सर्व्वज्ञाता दशगुणा पण्डित महामहोवइयाकरण हूं। इसलिये जो साक्षात व्याकरण की जड़ ग्रहण करना चाहते हैं वह मुझको अवश्य धारण करें। क्योंकि हे मूर्ख मित्र तुम भली भांति अब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समझ गये होंगे कि मैं एक दो तीन चार पांच छे सात आठ नौ दस दसगुना पण्डित हूं। सारांश यह कि मैं संसारभर के पण्डितों का सार हूं।

मुन्शी०—अयं! इस वेतुकी बकवास से क्या मतलब? मैं ने तो समझा था कि एक बड़े भारी पण्डित से मुलाक़ात हुई। जो मेरी मुसीबतों को दूर करने की राह बतायेंगे मगर यह तो अच्छे ख़ासे पागल जुआड़ी निकले जो ज्ञान बताने के बदले सोरही की चाल चलने लगे। एक दो तीन चार पांच अहा हा हा! अजि पण्डितजी महाराज आप अपनी एकाई दहाई का पहाड़ा अलग रखिये। और मुझे बातों में न बहलाइए। न मैं आपका वक़्त फ़ज़ूल ख़राब करना चाहता हूं और न मुफ़्त आप से राय लेना चाहता हूं। रुपया अधेली से मैं आपकी ख़ातिर करने को भी तइयार हूं—

भक०—रुपया! रुपया! रुपया लेकर मैं शिक्षादान कहीं कर सकता हूं। हे मूर्ख मित्र तुम भलीभांति समझलो कि मैं शिक्षा का व्यापार नहीं करता। यदि तुम मुद्राओं से भरा हुआ थैला दो। और वह थैला चान्दी के बक्स में हो और वह बकस रत्नों की वेदी पर धरा हो। और वह वेदी मोतियों के मन्दिर में हो और वह मन्दिर मणि के पर्व्वत पर हो और वह पर्व्वत साक्षात लक्ष्मी की राजधानी में हो और वह राजधानी हीरे के द्वीप में हो और वह द्वीप क्षीर के समुद्र में हो और वह समुद्र तीनो लोक में हो। हां यदि तुम यह तीनो लोक मुझको दो जिसमें वह क्षीर का समुद्र हो जिसमें वह हीरे का द्वीप हो जिसमें लक्ष्मी की राजधानी हो जिसमें वह मणि का पर्व्वत हो जिस पर वह मोतियों का मन्दिर हो जिसमें वह रत्नों की वेदी हो। जिस पर वह चांदी का सन्दूक हो जिसमें वह मुद्राओं का थैला हो तब भी मैं उनको (अपने सर से एक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बाल तोड़कर) इसके बराबर भी नहीं पर्वाह करता।

(जाता है)

मुन्शी०-ओहो ! यह तो विल्कुल सतयुगी हैं । लालच ज़रा नहीं तब यह ज़रूर असली परिडत हैं । इनकी राय बड़ी पक्की होगी । ज़रूर लेनी चाहिये ।

जाता है

अंक दूसरा ।

दृश्य–१.

मु० बरबाद के मकान का बाहरी हिस्सा ।

उलझन और भण्डाफोड़ ।

उल०-बस मैं उसी वक्त समझगई थी कि यह सारा झगड़ा तेरा ही खड़ा हुआ है । तू ही ने इस बात को किसी से कहा होगा और उसने जाकर मुन्शी बरबाद से आग लगादी।

भराडा०-मैं क्या करूं मुझे इस मकान से निकलते हुए एक आदमी ने देख लिया था । उसी से मैंने कहा था कि ख़बरदार यह किसी से कहना मत । मैं क्या जानता था……

उलझन०-बस बस रहने भी दे ।

भराडा०-हांजी हटाओ भी इस झगड़े को मगर उलझन ए ज़रा एक बात तो सुनलो ।

उलझन०-ख़ैर तो है ?

भराडा०-ज़रा इधर देखो ।

उल०- अय ! बोल ना कहता क्यों नहीं ?

भराडा०-उलझन ।

उलझन०-अरे क्या है ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भराडा०–बस समझ जाओ ।

उल०–क्या समझें ? कुछ कहेगा भी ?

भराडा०–तो कहदूं ? कहदूं ? अयं ? बुरा तो न मानोगी ?

उलझन०–बोल ।

भराडा०–अच्छा ज़रा और नज़दीक आओ ।

उलझन०–क्यों ?

भराडा०–बस यह न पूछो । हां । ... उलझन ! ए ! ए । उलझन ए !

उलझन०–हट ! हट ! दूर हट तेरे कपड़ों से बू आती है ।

भराडा०–अरे यह तो मुहब्बत की बू है ।

उलझन०–मुहब्बत की बू । बुढ़ापे में ?

भराडा०–तभी तो ज़रा सड़ाइन्ध आगई है । बिल्कुल सिरके का मज़ा है । शादी के बाद इसकी तेज़ी देखना ।

उलझन०–क्या अपना अचार बनवाने का सामान कर रहा है ? क्यों वे भला तू करेगा मुझसे शादी ?

भराडा०–मैं न करसकूं तो तू ही करले मुझसे । तेरी ही जीत रहे भाई ।

उलझन०–मगर मुंशी बरबाद की तरह फिर तू भी शक्की होजायेगा । क्योंकि बूढ़े मर्द बड़े शक्की होते हैं ।

भराडा०–अरे सिर्फ़ वही जो जोरू के लिये अपना रुपया ख़र्च करते हैं । सब नहीं और यहां तो तुम कमाओगी और बन्दा चैन करेगा । मैं समझूंगा कि शादी क्या हुई कि इस बुढ़ौती में घर बैठे गोया पेनशन की पेनशन मिली और जोरू मिली घाते में । समझी ? बस इसी बात पर ज़रा एक प्यार तो दे दो उलझन फिर देखो कैसा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जवान अभी हुआ जाता हूं। तुम्हारी क़सम!

उलझन०-अय! चल हट! तुझे देखते ही न जाने क्यों डर लगता है।

भण्डा०-ऐ है!

गाना।

भण्डा०—ज़रा फिर तो वही नख़रे दिखाना। हां जी ज़रा फिर तो०
सैना चलाना, नैना लड़ाना।
रह रहके चितवन का करना निशाना। हांजी०
उलझन०-दूर निगोड़े, लुच्चे कमीने, चल दूर कहीं हाथ न लगाना।
भण्डा०-प्यारी मत कर तकरार; मुझे देदे एक प्यार।
उलझन०-ज़री रुक तो मुरदार, अभी देती हूं प्यार।
भण्डा०-बाप रे बाप! (उलझन) ले मुरदार! (भण्डा) बाप रे बाप।

भण्डा०-बस बस! नख़रा बन्द कर। नहीं जान गयी। कुछ शादी के बाद के लिये भी रख छोड़। ले ले घरबिगाड़ का ख़त ले। बाप रे बाप!

उलझन०-चुप फिर ग़ुल मचायेगा तो? हां! जा यहां से भाग कह देना कि ख़त देदिया।

भण्डा०-जाता हूं। अरे ओ पहाड़ की बच्ची सलाम। बिजलीकी अम्मां पालागन। लोहे की तोप बन्दगी! बन्दगा! बन्दगी! बन्दगा!

(जाता है।)

उलझन०-अब जाकर यह ख़त बीबी दिलाराम को दे दूं। अरे! वह तो खुदही इधर आ रही हैं। मगर उनके साथ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुन्शी बरबाद भी हैं। अच्छा अभी नहीं। इनको चले जाने दो। तब। ....

(जाती है।)

(मुन्शी बरबाद और दिलाराम का मकान से निकलना)

मुन्शी बर०–नहीं नहीं मैं तुम्हारे चकमें में नहीं आसकता। जो कुछ मुझसे कहा गया था वह बिल्कुल सच है। तुम हज़ार क़समें खाओ तो क्या मगर तुम मेरी आंखों में इस तरह धूल नहीं झोक सकती।

(घर विगाड़ का आना और छिपकर अलग खड़ा होना)

घर०–(दूर से–अलग) आह ! वही तो हैं। मगर वह बुड्ढा भी साथ है।

मुन्शी बर–०(घर विगाड़ को न देख कर) मुझको खूब मालूम है कि तुम ज़रा भी उस पाक रिश्ते के बन्धन की इज़्ज़त नहीं करती जिस्में हम तुम दोनों बन्धे हैं। (दिलाराम और घर विगाड़ दोनों एक दूसरे को सलाम करते हैं।) अजी यह सलाम बन्दगी रहने दो। मैं इस क़िस्म की इज़्ज़त करने को नहीं कहता। यह हंसी दिल्लगी अब मुझे एक आंख नहीं भाती।

दिलाराम०–मैं तुमसे हंसी करती हूं ? भला मैं क्यों ऐसा करने लगी ?

मुन्शी बर०–जो तुम्हारे दिल में है उसे मैं अच्छी तरह जानता हूं। (दिलाराम और घरविगाड़ दोनो फिर एक दूसरे को सलाम करते हैं।) आह ! फिर वही बात। मैं इस इज़्ज़त का नहीं भूखा हूं और न मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी ऐसी इज़्ज़त करो। बल्कि तुम को चाहिये कि तुम उस रिश्ते की इज़्ज़त करो जिसके पाक बन्धन से शादी के वक़्त हम तुम दोनों बान्धे गये हैं। (दिलाराम घरबिगाड़ को कुछ इशारे में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहती है) अय ! है ! तुम हाथ पैर क्यों चमकाती हो ? मैं कोई बुरी बात नहीं कहता।

दिलाराम०-कौन हाथ पैर चमकाती है ?

मुन्शी बर०-मैं खूब समझता हूं। तू मुझे बूढ़ा समझती है। इसी लिये तू मेरी ज़रा भी परवाह नहीं करती। और अफ़सोस ! तू यह नहीं ख़्याल करती कि मैं तेरी कितनी ख़ातिर करता हूं। (दिलाराम घर बिगाड़ की तरफ़ सर हिलाती है।) अरे ! तू सर क्या हिलाती है ? क्या मैं कुछ झूठ कहता हूं ?

दिलाराम०-कौन मैं ? मैं काहे को सर हिलाऊंगी ?

मुन्शी बर०- और उल्टे मुझी से पूछती हो। अच्छा उल्लू बनाती हो। कुछ नहीं बुढ़ापे की शादी का यही नतीजा है। क्या...

घरबिगाड़०-(चुपचाप दिलाराम के पीछे आकर) ज़रा एक बात सुनलो।

मुन्शी बरबाद०-(दिलाराम से) अयं क्या कहा तुमने ?

दिलाराम०-सपना देखते हो क्या ? (मुन्शी बरबाद घूम कर दिलाराम की दूसरी तरफ़ जाता है। वहां घरबिगाड़ को देखता है। वैसे ही घरबिगाड़ मुन्शी बरबाद को बहुत झुककर सलाम करके पीछे हटता है और चलदेता है)

मुन्शी बर०-अब कहो।

दिलाराम०-क्या कहूं ?

मुन्शी बर०-देखो वह तुम्हारे पीछे घूम रहा है।

दिलाराम०-तो मैं क्या करूं ? यह मेरा क़सूर है ?

मुन्शीबर०-बेशक यह तुम्हारा ही क़सूर है। मर्दों की भला क्या मजाल कि वे किसी औरत का पीछा बिना उसकी रज़ामन्दी के करें।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिलाराम०–तो क्या मैं उस से कहने गई थी कि तुम मेरे पीछे पीछे आओ।

मुन्शी वर०–गो ज़बान से तुमने नहीं कहा। मगर तुमने अपनी चाल ढाल से रंग ढंग से तो उसकी हिम्मत दिलाई। अगर औरत खुद न बिगड़े तो उसे कोई बिगाड़ नहीं सकता।

दिलाराम०–चाल ढाल से हिम्मत दिलाना मैंने आज ही सुना।

मुन्शी वर०–क्या तूने उससे आंखें नहीं मिलाई? क्या तूने उसे मीठी चितवन से नहीं देखा? क्या तू उसको देख देख कर नहीं मुस्कुराई? क्या तूने गर्दन घुमा घुमाकर अपनी तिर्छी नज़रें बार बार उसपर नहीं डालीं?

दिलाराम०–जो मुझे देखेगा उसको मैं क्यों न देखूं? आख़िर आंखें हैं किस लिये? क्या मैं चाल ढाल फिर नये सिरे से सीखूं? क्या पैर के बल चलने के बदले सर के बल चलूं?

मुन्शीवर०–अगर तुम सच्ची और नेकचलन औरतों की तरह रहना चाहती हो तो तुम्हें यह बातें छोड़नी पड़ेंगी। यह ताकझांक छेड़छाड़ यह सब वाहियात खुराफ़ात मुझे ज़रा भी पसन्द नहीं।

दिलाराम०–मेरी बला से। वाह! वाह! क्या मेरी इसी लिये शादी हुई है कि मैं जीते जी क़ब्र में अपने को डालदूं। दुनिया से कुछ सरोकार न रखूं?

मुन्शी वर०–क्या क्या क्या जो इक़रार तुमने शादी के वक़्त किया था उसके पाबन्द नहीं हो तुम?

दिलाराम०–मैं क्यों उसके पाबन्द होने लगी? जिनसे तुमने शादी तै की थी वह उसके पाबन्द हों तो हों। मैं थोड़े ही किसी से कहने गई थी कि मुझसे शादी करो।

मुन्शीवर०–(अलग) जी चाहता है कि दो तमाचें लगाऊं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और इसके गुलाबी गुलाबी गालों को लाल करदूं। कुछ नहीं मुन्शी बरबाद अपनी ही क़िस्मत ठोको। बुढ़ापे की शादि का यही नतीजा है। नहीं तो इसकी हिम्मत होती कि मुझसे यों ज़बान लड़ाती। चलो अपना काम देखो। इससे बहस में तुम नहीं जीत सकते।

(जाता है।)

गाना।

दिल०–जब से हुआ है बुढ़ापे का संग।
जवानी का रंग, ढंग है कुढंग।
निगोड़ी जवानी, है कैसी दिवानी,
करती है हरदम मुझे तो यह तंग। जब से०।
मैं कैसे समझाऊं, जिया को मनाऊं, कैसे मैं रोकूं दबाऊं उमंग।
हाय! चितवन यह चोखी, वो शोख़ी अनोखी,
सबका है रंग हुआ आख़िर बदरंग। जब से०।
रंग मेरा भंग हुआ, जीवन भी तंग हुआ, पीरी के संग छिड़ा,
जोबन का जंग॥ जब से०।

(उलझन का आना)

उलझन:–बीबी दिलाराम! मैं बड़ी देर से आप की ताक में थी। मगर मुन्शी जी टलने का नाम ही नहीं लेते थे।

दिलाराम०–क्यों?

उलझन०–भला यह ख़त किसका होगा?

दिलाराम०–ला ला मुझे दे। छिपाती क्यों है।

(ख़त छीन लेती है)

उलझन०–(अलग) मैं तो डरती थी कि कहीं बिगड़ न जाए। मगर नहीं इधर भी मामला गर्मागर्म है।

दिलाराम०–देखो उलझन! कितना प्यारा ख़त है। जी चाहता है कि इसको बार बार पढ़ूं। (पढ़ती है और फिर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हंसती है) अभी अभी जाकर जवाब लिखती हूं ।

(घर के भीतर जाती है)

(घरबिगाड़ और भण्डाफोड़ का आना)

उलझन०—वाह ! बाबू साहब वाह ! इस मूण्डीकाटे को आपने काहे को भेजा था ?

भण्डाफोड़०—(घरबिगाड़ से) ज़रा इस पत्थर के ममानी से अलग खड़े होइये ।

घरबिगाड़०—क्या करूं ? हिम्मत न पड़ी कि कोई अपना आदमी भेजूं । मगर उलझन मैं तुम्हारा किस तरह से शुक्रिया अदा करूं ? लो तौ भी यह तुम्हारे नज़र हैं ।

(पाकेट में हाथ डालता है)

उलझन०—सरकार राजा बाबू हैं । आप के ऐसा तो बांका जवान देखा ही नहीं । सच पूछिये तो बीबी दिलाराम आपही के लायक हैं—

भण्डाफोड़०—और मेरे लायक़ तू ।

घरबिगाड़०—यह सब तुम्हारी मिहरबानी है ।

(रुपै देता है)

भण्डाफोड़०—लाओ लाओ इधर लाओ उलझन उसे हम रखें । अब क्या हमारी तुम्हारी शादी तो होनेवाली है । फिर क्या हम तुम एक तो हैई हैं । जब तक तुम हमको अपना सन्दूक़ समझो ।

उलझन०—देखूं तो सही कि यह सन्दूक कितना मज़बूत है ।

घरबिगाड़०—उलझन वह ख़त तुमने बीबी दिलाराम को देदिया था ।

उलझन०—हां हां उसी का जवाब तो लिखने गई हैं वह !

घरबिगाड़०—क्यों उलझन भला मुझसे दो दो बातें हो सकती हैं ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उलझन०–अच्छा तो आइये मेरे साथ।

घरबिगाड़०–मगर...मगर कहीं वह नाराज़ न हों और कोई डर तो नहीं है?

उलझन०–नहीं कुछ भी नहीं। मुन्शी जी गए हैं अपने काम पर। और वह उनकी परवाह भला कब करती हैं? बस वह डरती है अगर तो सिर्फ़ अपने मां बाप से। वह जानने न पावें।

(भंडाफोड़ से)

घर बिगाड़०–या ईश्वर मदद कर।

(घरबिगाड़ और उलझन दोनो घर के भीतर जाते हैं)

भण्डाफोड़०–कैसे नेक काम में ईश्वर को याद किया है? मगर वाह! उलझन एकही औरत है। अक़्ल में तो मेरी नानी से भी तेज़ है। चालिस मर्दों को एक साथ चरा सकती है। बड़ी क़ाबिल जोरू होगी।

(मु० बरबाद का आना)

मुन्शीबर०–(अलग) फिर यह आदमी यहां आया। या ईश्वर कहीं यह सास और ससुर जी के सामने मेरी तरफ़ से गवाही देने पर राज़ी हो जाए तो मैं बाज़ी जीत जाऊं। और...

भण्डाफोड़–अख़ख़ाह! तुम भी यहीं मौजूद हो। मगर अजीब बग़लोल हो यार। इसी लिये तुमसे मैं ने वह बातें कहीं थीं कि जाकर सीधे आगही लगादो।

मुन्शीबर०–कौन? मैंने आग लगादी?

भण्डाफोड़०–नहीं तो भला उस हरामज़ादे को मालूम कैसे होता?

मुन्शी बर०–किस हरामज़ादे को।

भण्डाफोड़०–अरे उसी कम्बख़्त मुन्शी बरबाद को। उस उल्लू के पट्ठे ने तो ऐसी आफ़त मचाई कि एकदम जाके उस बेचारी के मां बाप से उसने कहदिया। बस मालूम हो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गया कि तुमसे कोई बात कहने लायक़ नहीं है।

मुन्शी बर०--अच्छा सुनो दोस्त।

भण्डाफोड़०--बस बस अपनी दोस्ती अपने पास रखो। अगर तुम सब से कहते न फिरते तो ऐसे मज़े की ख़बर सुनाता...मगर...नहीं नहीं तुम इस क़ाबिल नहीं हो कि तुम से कोई बात कही जाए।

मुन्शी बर०--ए भाई ए बतादो क्या कोई नई बात और हुई है।

भण्डाफोड़--कुछ नहीं। कुछ नहीं। और जा जाकर लोगों से कहो।

मुंन्शी बर०--सुनो तो।

भण्डाफोड़०--माफ़ करो।

मुन्शी बर:--बस एक बात।

भण्डाफोड़:--मैं जानता हूं कि तुम वही बात पूछोगे।

मुन्शी बर०--नहीं ठहरो ठहरो। वह बात नहीं।

भण्डाफोड़०--अजी चलो भी। तुम यही पूछना चाहते होगे कि इस वक़्त क्या होरहा है। मगर मैं ऐसा उल्लू नहीं हूं कि तुम्हें बताऊं कि घरबिगाड़ ने उलझन को रुपये दिये हैं और वह उन्हें इस वक्त उस बुड्ढे के घर के भीतर लेगई है। मैं यह हर्गिज़ नहीं बताने का।

मुन्शी बर०--ए-ए-सुनो...

भण्डाफोड़--अजी जाओ। किसी और को चकमा दो...

(चल देता है।)

मुन्शी बरबाद:--(अकेला) कम्बख़्त भाग गया। मैं चाहता था कि उसको किसी सूरत से अपने ससुरजी के पास फुसला ले चलूं। मगर ख़ैर चलते चलाते उसकी ज़बान से यह निकल ही पड़ा कि 'घर बिगाड़' इस वक़्त मेरे मकान में मौजूद है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अब तो ससुरजी मेरी सच्चाई और अपनी बेटी का कमीनापन अच्छी तरह से जानेंगे। मगर सारी ख़राबी यही है कि मैं करूं तो क्या करूं। अगर घर के भीतर जाता हूं तो वह हरामज़ादा भाग जायेगा। और जो कुछ अपनी आंखों से देखूंगा भी वह सब फ़ज़ूल हैं। क्योंकि मैं लाख क़समें भी खांऊ तौभी मेरी बात नहीं मानी जायेगी। और अगर उसको बिना अपने घर में देखे हुए अपने सास ससुर को बुला लाऊं तो फिर वही सुबही वाली मुसीबत मेरे सर आयेगी और मैं ही बेवक़ूफ़ साबित हो जाऊंगा। कैसे यह पता लगाऊं कि वह कम्बख़्त इस वक़्त मेरे घर में है। (दरवाज़े की सूराख़ से देखता है) अरे! है! है! वह है हरामज़ादा! और वाहरी! क़िसमत! मेरे सास ससुर भी कैसे मौक़े से आ पहुंचे। अब क्या मार लिया है।

(मिस्टर और मिसेज़ धरपकड़ का आना)।

मुन्शी बर०-लीजिये जनाब अबतो मेरी बात को आप मानेंगे?

मिस्टर धर०-क्यों? ख़ैरियत तो है?

मुन्शी बर०-हां ख़ैरियत तो सब है मगर मेरी इज़्ज़त की ख़ैरियत नहीं है।

मिसेज़०-क्या क्या अभीतक तुम वही सुर अलाप रहे हो।

मुन्शी बर०-जी हां। छाती पर कोदो दला जाये। और…

मिसेज़ धर०-क्या एटिकेट-etiquette...

मुन्शी बर०-एटिकेट गई भाड़ में। दिल में आग धधक रही है और आप तमीज़ सिखा रही हैं। और उधर आपकी लड़की अलग नाकों चना चबवा रही है।

मिसेज़ धर०-क्या तुम अपनी औरत की ज़रा भी इज़्ज़त नहीं करते? क्यों और उसके लिये यह लफ़्ज़ इस्तमाल करते हो? शर्म!

मुन्शी बर०-और वह तो मेरी बड़ी इज़्ज़त करती है न?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिस्टर०-मेरी समझ में नहीं आता कि जब आज ही सुबह को तुम्हारी नेकचलन औरत ने अपनी सच्चाई का इतना पक्का सबूत दिया तब भी तुम्हारे दिल में इतमिनान नहीं आता।

मुन्शी वर०-मगर अगर उस आदमी को इस वक्त मैं उसके साथ दिखा दूं तब तो आप मानेंगे।

मिस्टर धर०-क्या उसके साथ ? कहां ?

मुन्शी वर०-अपने मकान में।

मिस्टर०-तुम्हारे मकान में ?

मुन्शी वर०-हां।

मिस्टर धर०-अगर यह सच है तो अलबत्ता तुम्हारी औरत से हमलोग कोई सरोकार नहीं रखेंगे और उसको एकदम तुम्हारे ऊपर छोड़देंगे।

मिसेज़ धर०-मगर कभी यह बात सच हो ही नहीं सकती।

(मुन्शी बरबाद के मकान का दरवाज़ा का खुलना और दरवाज़े पर घरबिगाड़, दिलाराम और उलझन का नज़र आना)।

मु० वर०-लीजिये अब तो सच होगई। वह देखिये वह !

घर बिगाड़०-(मिस्टर धरपकड़ वग़ैरह को बिना देखे हुए) अच्छा तो आज रात को आप से मुलाक़ात होगी न ? ज़रूर ? (मिस्टर धरपकड़ वग़ैरह को देखकर) अररररर ? ग़ज़ब होगया ! आपके बाप मां और मर्द ! तीनों यहां मौजूद हैं।

दिलाराम-या ईश्वर ! (घरबिगाड़ से अलग) ख़ैर ! देखो घबड़ाहट मत ज़ाहिर करो। मैं सब सम्भाले लेती हूं। (प्रकट-घरबिगाड़ से) क्या तुम्हारी हिम्मत इतनी होगई कि तुम चुप चाप मेरे मकान में घुस आए। निकलो यहां से (धक्का देकर बाहर निकालती है और उसके पीछे दिलाराम और उलझन भी बाहर आ जाती हैं) तुम्हारी दग़ाबाज़ी मुझे खूब मालूम होगई। आज सुबह को जब तुम ने यह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क़सूर लगाया गया था कि तुम्हारी नीयत ख़राब है। उस वक्त तुमने ऐसी सफ़ाई दिखलाई कि क्या कहना हैं। उसी वक्त मैंने भी सबके सामने अपने दिल का हाल साफ़ साफ़ बता दिया था। फिर भी तुम को शर्म नहीं आती कि यह सब हो जाने पर भी कि तुम मेरे पीछे यों पड़े हो। मुझ को तुमने क्या समझ रखा है कि तुम मेरे मकान में यों बेधड़क चले आए। मेरा मर्द यहां नहीं है तो क्या मैं तुम्हारे फन्दों में आसकती हूं? मैं वह औरत नहीं हूं कि तुम्हारी लच्छेदार बातों और धमकियों में आकर अपनी सच्चाई को भूल जाऊं। गो मैं औरत हूं तो क्या मगर तुम्हारे लिये काफ़ी हूं उलझन ज़रा एक डण्डा तो देना तुम्हारी बिना कुछ ख़ातिर किये यों थोड़ेही जाने दूंगी। ताकि फिर कभी तुम मुझ ऐसी शरीफ़ और नेकचलन औरत पर भूल कर भी बुरी नज़र न डालो। (उलझन दिलाराम को डन्डा देती है और दिलाराम उससे घरविगाड़ को मारने का बहाना करती है। मगर घर बिगाड़ हट जाता है। और मुन्शी बरबाद जो पीछे खड़े रहते हैं उन्हीं पर सब डन्डे पड़ते हैं)

घरबिगाड़ (इस तरह से चिल्लाता है गोया वही मारा जाता है) हाय! हाय! अरे बाप रे! ज़रा धीरे धीरे!

(घरविगाड़ भाग जाता है।)

उलझन०-और ज़ोर से बीवी दिलाराम!

दिलाराम० (उसी धुन में) यह तुम्हारी बदमाशी का नतीजा है। तुम्हारी बातों का जवाब इसी डण्डे से हमेशा दिया करूंगी।

मिस्टर घर०-शाबाश बेटी शाबाश!

दिलाराम०-कौन मेरे बाप? और मेरी मां? आप लोग कब आए?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिसेज०-आ आ मेरी प्यारी बेटी पहिले मेरी छाती से लग जा। बेशक तूने आज वह काम किया है कि तेरी यह बातपतिव्रता स्त्रियों के इतिहास में सोने के क़लम से लिखने लायक़ है।

मु० बर०-(अलग) मियां की जूती मियां के सर! अब क्या करूं। यह हरामज़ादी फिर बाज़ी मार ले गई।

मिस्टर धर०-मुन्शी बरबाद! देखते क्या हो ? ऐसी नेकचलन औरत पाने के लिये अपनी ख़ुशक़िस्मती की तारीफ़ करो तारीफ़!

मुन्शी बरबाद०-अभी तो मैं अपनी पीठ की मज़बूती की तारीफ़ कर रहा हूं।

उलझन०-मेरी मलकिन ही ऐसी सधी हैं तभी तो यह मुसीबत घेरे है। मैं जो इनकी जगह पर होती तो एक मिनट इस घर में ठहरती ही नहीं। ऐसे मर्द का मुंह न देखती।

मु० बर०-चुप हरामज़ादी की बच्ची। जले पर निमक छिड़कने चली है।

दिलाराम०-(रोरोकर) उलझन तुम न बोलो। मेरी क़िस्मत ही में यह बदा है। जब अपना ही आदमी बदनाम करे तो दूसरे की कौन कहे।

मिसेज़ धर०-बदनाम करनेवाले का मुहं काला। बेटी तुम औरत नहीं औरतों की शोभा हो सुन्दरता हो अभिमान हो। मुन्शी बरबाद तुम अपनी औरत के पैर की धूल को सर चढ़ाओ।

उलझन०-बेशक।

मुन्शी बर०-चुप सुवर की बच्ची। बेशक कहती है। मारूंगा वह तमाचा कि मुंह टूट जायेगा।

दिलाराम०-(रोती हुई) देखो मां। तुम्हीं सुनलो इनकी बातें।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(भकाभकानन्द का आना।)

भक०-आयं? यह क्या गड़बड़ हो रहा है? यह लड़ाई! यह झगड़ा! यह कलह! यह उपद्रौ! यह अनर्थ! यह हल्ला! यह चपेताघात! यह कुटम्बस! बोलो बोलो। बात क्या है? बात क्या है? क्या तुमलोगों में सन्धि नहीं हो सकती? आओ आओ इधर आओ। हमको अपना पञ्च बनाओ। हम तुम लोगों में मेल करादेंगे।

मिस्टर धर०-कुछ नहीं मुन्शी बरबाद की अक्ल मारी गई है।

भक०-अक्ल मारी गयी है? अयं इतनी सी बात के कहने के लिये आपने इतने शब्दों का प्रयोग किया। यह तो आप एक शब्द में कह सकते थे। जैसे। मुन्शी बरबाद मूर्ख है या मूढ़ है या जड़ है या इनसे भी सरल शब्द कहना चाहते हों तो कहिये मुन्शी बरबाद गदहा है। व्याकरण का—

मुन्शी बर०-अजी पहिले मेरी भी बात सुन लीजिये तब आप अपने व्याकरण का क़ायदा सिखाइयेगा।

भक०-च! च! च! इस स्थान पर "अजी" शब्द का प्रयोग महा अशुद्ध है। शीघ्र इस शब्द को काट कर 'श्रीमान्' बनाओ।

मुन्शी बर०-अच्छा श्रीमान ही सही। मगर—

भक०-आहा हा! श्रीमान शब्द कैसा आनन्दकारो है। हे अज्ञानी मित्र इसको फिर कहो और फिर कहो।

मुन्शी बर०-महाराज पहिले झगड़ा फ़ैसला करने के लिये कुछ मेरी भी सुनियेगा या ख़ाली श्रीमान शब्द रटाइयेगा।

भक०-ठहरो! ठहरो! आहा हा! महाराज शब्द भी बड़ा श्रवणसुखकारी है। तनिक इसका रस स्वाद ग्रहण करने दो। आहा हा!

मुन्शी बर०-अब मेरा गुस्सा उबल रहा है।

भक०-उबल रहा है? च! च! च! कहो भड़क रहा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बस तुम मत बोलो । तुम बहुत अशुद्ध बोलते हो । आप कहिये । इस झगड़े का कारण बताइये । शीघ्र कहिये शीघ्र। परन्तु अशुद्ध न बोलियेगा ।

मिस्टर धर०-महाराज । असली बात यह है कि मेरा दामाद अपनी स्त्री के साथ ठीक वर्ताओ नहीं करता ।

मुन्शी बर०-क्योंकि यह (दिलाराम की तरफ़) पतिवर्त धर्म ठीक तरह से पालन नहीं करती ।

मिसेज०-झूठ ! झूठ ! बिल्कुल ग़लत ।

भक०-यथार्थ है । हे मूर्ख मित्र ! तुम अज्ञानी हो तुम जड़ हो तुम महा मूढ़ हो । पतिवर्त ऐसे कठिन धर्म का पालन तुम इससे अभी से भला कराना चाहते हो ? कहीं यह युवा अवस्था और यह कोमल आयू पतिवर्त धर्म पालन करने के लिये है ? निस्सन्देह ! तुम महा महा महा मूर्ख हो । सुनो । " अशक्तस्तु भवेत्साधुर्ब्रह्मचारी च निर्धनः ।
व्याधितो देवभक्तश्च वृद्धा नारी पतिव्रता ॥
आर्ता देवान्नमस्यन्ति तपः कुर्वन्ति रोगिणः ।
निधना दानमिच्छन्ति वृद्धा नारी पतिव्रता ॥
और सुनो । आदौ वेश्या पुनर्दासी पश्चाद्भवति कुट्टिनी ।
सर्वोपायपरिक्षीणा वृद्धा नारी पतिव्रता ॥ "

परन्तु हे मूर्ख मित्र यह तुम्हारा भी अपराध नहीं है । यह तुम्हारी दामाद जाति की बलिहारि है । क्योंकि······

(मुन्शी बरबाद गुस्से से बेक़ाबू हो जाता है और उसे गिराकर उसकी पगड़ी से उसकी टांगे बान्ध कर घसीटता हुआ बाहर ले जाता है । और भकभकानन्द उसी धुन में श्लोक पढ़ते चले जाते हैं । और उंगलियों पर गिनते जाते हैं ।)

भक०-क्योंकि । "सदा वक्रः सदा रुष्टः सदा पूजामपेक्षते । कन्याराशिस्थितो नित्यं जामाता दशमो ग्रहः ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आदित्याद्या ग्रहाः सर्वे यथा तुष्यन्ति दानतः।
सर्वस्वेपि न तुष्येत जामाता दशमो ग्रहः॥

(पर्दा गिरता है।)

अङ्क—३

दृश्य—१.

मुन्शी बरबाद के मकान का बाहरी हिस्सा।

घरबिगाड़ और भण्डाफोड़।

घरबिगाड़०-ओफ़! ओ। रात इतनी अंधेरी है कि अपनाही हाथ नहीं दिखाई देता। अरे! भण्डाफोड़। अब बता किधर चलें?

भण्डाफोड़०-ज़रा आप मेरा हाथ पकड़े रहियेगा। नहीं तो मैं इस अंधियाली में ज़रूर खोजाऊंगा।

घरबिगाड़०-मगर इस वक्त दिलाराम मिलेगी?

भण्डाफोड़०-यही मैं आप से पूछनेवाला था कि इस वक़्त उलझन मिलेगी!

घरबिगाड़०-दिलाराम के मकान के पास पहुंच तो गए मगर अब क्या करें?

भण्डाफोड़०-बस चुप चाप घर लौट चलिये। मगर रास्ते में जो कहीं गिरियेगा तो बता के गिरियेगा।

घरबिगाड़०-(सिटी बजाता है) अगर बुड्ढा सोगया होगा तो दिलाराम ज़रूर आयेगी।

भण्डाफोड़०-ईश्वर करे मर गया हो।

घरबिगाड़०-चुप! पैर की आहट मालूम होती है।

(दिलाराम और उलझन का दरवाज़ा खोलकर बाहर आना)

दिलाराम०-उलझन!

उलझन०-जी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिलाराम०-दरवाज़ा आधा खुला रखना।

उलझन०-आधा खुला है।

(अन्धियाली में सब एक दूसरे की तरफ़ देखते हैं)

घरविगाड़०-देख भण्डाफोड़ आगई।

भण्डाफोड़०-अन्धेरे में कहीं उलझन मुझको मार न बैठे।

घरविगाड़०-चुप धीरे से बोल।

दिलाराम०-चुप !

घरविगाड़०-(उलझन को दिलाराम समझ कर) प्यारी!

दिलाराम०-(भण्डाफोड़ को घरविगाड़ समझ कर) आपने बड़ी तकलीफ़ की।

उलझन०-(घरविगाड़ को भण्डाफोड़ समझ कर) चुप घुसा क्यों पड़ता है।

भण्डाफोड़०-(दिलाराम को उलझन समझकर) अरे मेरी उलझन। बस इसी बात पर शादी करले।

घरविगाड़०-कौन उलझन ?

दिलाराम०-कौन भण्डाफोड़ ?

घरबिगाड़०-दिखाई तो कुछ देता नहीं। दिलाराम तुम कहां हो ?

दिलाराम०-यह हूं मैं।

भण्डाफोड़०-अररर ! मेरी उलझन किधर गई ! (सरक के दूर निकल जाता है)।

घरविगाड़०-आओ एक तरफ़ चलके बैठें। (तीनों एक किनारे जाके बैठते हैं)

(मुन्शी बरबाद का मकान से निकलना)

मुन्शी बरबाद०-उस हरामज़ादी औरत ने तो नाकों में दम करदिया। किसी की रात किसी के बग़ल में कटती है और किसी की रात पहरा देते हुए कटती है। बुढ़ापे की शादी का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यही नतीजा है। मगर इतनी जल्दी ग़ायब किधर होगई ?

भण्डाफोड़०-(उलझन को ढूंढता ढूंढता मुन्शी बरबाद के पास पहुंचता है और उन्हीं को उलझन समझकर कहता है) अरे ! उलझन ! तुम कहां ग़ायब होगई थी ? यह तो ज़रा बतादो कि वह कम्बख़्त बुड्ढा मुन्शी बरबाद-ईश्वर उसका सत्यानाश करे-खूब बेख़बर सो रहा है न ? उस उल्लू को तो नहीं मालूम कि उसकी बीबी इस वक़्त घरबिगाड़ के साथ बैठी हुई प्यार की बातें और लगावट की घातें कर रही है। वह बुड्ढा इसी क़ाबिल है। सोने दो खूब कम्बख़्त को खर्राटे भर भर के। मगर एक रोज़ उसकी मनहूस सूरत मुझको भी दिखादो उलझन। मैं भी उसको ज़रा पहचान लूं। उलझन बोलती क्यों नहीं। अरे ! एक प्यार तो ज़रा दे दो। (मुन्शी बरबाद से लिपटता है और चूमता है। दाढ़ी छू कर) धत तेरी की। घन्टे भर से मैं बातें कर रहा हूं। और यह मुंह उल्टा किये खड़ी है। (दुसरी तरफ़ जाकर उसकी पीठ से लिपटता है। मुन्शी बरबाद ढकेल देता है) अरे ! बाप रे। तेरा सत्यानाश हो।

मुन्शी बरबाद०-तू कौन है।

भण्डाफोड़०-कोई नहीं।

(भाग जाता है)

मुन्शी बरबाद०-वह कम्बख़्त भाग तो गया। मगर यह बता गया। कि वह मेरी हराज़ादी औरत इस वक़्त फिर नया रंग लाए हुए है। मैं अभी अभी इसी दम उसके मां बाप को बुला भेजता हूं। और इस दफ़े ज़रूर ज़रूर उससे भरपूर बदला लेता हूं। और इसका कमीनापन उसके मां बाप को दिखाता हूं।...डीवट, वो डीवट।

(डीवट खिड़की पर दिखाई देता है।)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

डीवट० (खिड़की पर) कौन सरकार ?

मुन्शी बर०-जल्दी आ नीचे।

डीवट०-(खिड़की से कूदकर) अब इससे जल्दी क्या होसकती है।

मुन्शी बर०-कहां है तू ?

डीवट०-यहां हजूर। (जिस तरफ़ से डीवट की आवाज़ आई थी उस तरफ़ मुन्शी बरबाद जाता है। मगर डीवट दूसरी तरफ़ जाकर सो जाता है)।

मुन्शी बर०-(जिधर से डीवट की आवाज़ आई थी) धीरे से बोल कम्बख़्त। सुन। तू अभी मेरे सास ससुर के पास जा। और उनसे मेरी तरफ़ से हाथ जोड़ के कहना कि अभी इसी दम चले आवें। समझा ? अबे सुनता है कि नहीं ? डीवट !

डीवट०-(दूसरी तरफ़ से जगकर) हजूर !

मुन्शी बर०-अबे किधर है तू ?

डीवट०-यहां।

मुन्शीबर०-उल्लू कहीं का। हम से भागता क्योंहै इस तरह से ? (मुन्शी बरबाद उधर जाता है जिधर से डीवट की आवाज़ आई थी। और डीवट ऊंघता हुआ फिर दूसरी तरफ़ जाकरसो जाता है) तू फ़ौरन मिस्टर धरपकड़ के पास दौड़ जा। और अभी उनको साथ लेता आ समझा ? डीवट। बोलता क्यों नहीं ?

डीवट०-(दूसरी तरफ़ से जगकर) हज़ूर।

मुन्शी बर०-मर कम्बख़्त। इधर आ (दोनों आपस में टकरा के गिरते हैं) अरे ! बांप रे ! रह हरामज़ादे ! ऐसा मार मारता हूं कि तू भी याद करेगा। इधर आ।

डीवट०-नहीं हजूर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुन्शी बर०--अबे आता है कि नहीं ?

डीवट०--आप मारेंगे।

मुन्शी बर०--नहीं मारूंगा। आ।

डीवट०--अपनी कसम ?

मुन्शीबर०--और नज़दीक आ (डीवट को पकड़कर) दौड़ता हुआ मेरे सास ससुर के पास जा। और उनसे कहना कि एक बड़ी ज़रूरत आ पड़ी है। फ़ौरन चले आवें। साथ लेते आना। समझा ?

डीवट०--हां।

मुन्शी०--अच्छा दौड़ जा (अपने को अकेला समझकर) अब मैं मकान के भीतर जाता हूं। जब तक-मगर यहां कोई बातें कर रहा है। यह तो मेरी बीबी की आवाज़ है। हां वही हरामज़ादी है। छिप कर सुनूं क्या कहती है।

(मुन्शी बरबाद अपने मकान के दरवाज़े के पास खड़ा होके सुनता है)

दिलाराम० अच्छा अब जाती हूं। वह अब जागने ही वाला होगा।

घरबिगाड़-क्यों अभी से ?

दिलाराम-बहुत देर हो गई।

घरबिगाड़०-हाय ! मैं कैसे अभी आप को जाने दूं। अभी तो कुछ अपने दिल का हाल कहा ही नहीं।

दिलाराम०-ईश्वर ने चाहा तो फिर मुलाक़ात होगी।

घरबिगाड़०-मगर इस वक़्त मेरे दिल की क्या हालत होगी।

मुन्शी ब० (अलग) और इस वक्त मेरे दिल की क्या हालत हो रही है ?

घरबिगाड़०-मुझे तो यह ख़याल मारे डालता है कि आप फिर उस बुड्ढे कमबख़्त के पास जा रही हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुन्शी ब० (अलग) रह हरामज़ादे।

दिलाराम० इसमें मेरा क्या क़सूर ? मां बाप ने ज़बरदस्ती शादी करदी। और तुम्हे डाह करने की कोई वजह भी नहीं है। मुझे वह एक आंख नहीं भाता। भला कौन नई नवीली बुड्ढे मर्द को प्यार कर सकती है। जिस तरह से बुड्ढे हम लोगों के साथ ब्याह करके हमारी ज़िन्दगी ख़राब करते हैं। उसी तरह से हमलोग भी इनकी आंखों में धूल झौंक कर इनको खूब उल्लू बनाते हैं।

मुन्शी बर०-(अलग) शाबश ! लो और सुनो। बुढ़ापे की शादी का यही नतीजा है।

घरबिगाड़०-मगर मुझको तो यह देख के छाती फटती है कि कहां आप और कहां वह बुड्ढा। आप कभी भी उसके लायक़ न थीं।

मुन्शी बर० (अलग) कहीं यह तेरी जोरू होती तब तुझे मालूम होता कम्बख़्त। अच्छा घबड़ाओ नहीं। अभी तुम दोनों को इसका मज़ा चखाता हूं। जाकर भीतर से दरवाज़ा बन्द किये लेता हूं। बीवी सहबा अब रहो रात भर बाहर ताकि तुम्हारी नेकचलनी ज़रा तुम्हारे बाप भी आकर देख लें।

(मुन्शी बरबाद भीतर से दरवाज़ा बन्द कर देता है)

उलझन०-देखो बीबी कितनी देर होगई। मेरा कलेजा कांप रहा है। कहीं वह जग न गए हों।

घरबिगाड़-अरे ! उलझन ! यह क्या ज़ुल्म करती है तू।

दिलाराम०-अच्छा अब जाने दो।

घरबिगाड़०-क्या जाने दूं। दिल तो लिये जाती हो।

दिलाराम०-सलाम

घरबिगाड़०-प्यारी सलाम

(घरबिगाड़ का जाना)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

...ngamawadi Math, Varanasi 2605
Acc. No. ...3053...

दिलाराम०-आओ चुपचाप भीतर हो रहें।

उलझन०-दरवाज़ा बन्द है।

दिलाराम०-मेरे पास चाभी है।

उलझन०-आवाज़ न होने पावे।

दिलाराम०-भीतर से बन्द है। या ईश्वर अब क्या करूं?

उलझन०-आहिस्ते से डीवट को पुकारो।

दिलाराम०-डीवट! डीवट! डीवट!

(खिड़की पर मुन्शी बरबाद का दिखाई पड़ना)

मुन्शीबर०-(मुहं चिढाता हुआ) डीवट! डीवट! यह कौन पुकारता है इस वक्त? अख़्ख़ा! आप हैं? आदबज़ है मेरी नेकचलन बीबीसाहबा! अब ज़रा बताइये तो मिज़ाज कैसा है आपका। हरदफ़े आप मुझे वेवकूफ बनाकर बाज़ी मार ले जाती थीं। अब आज कहिये कौनसी चाल चलियेगा।

दिला०-अररररर! यह क्या? ज़रा इस वक्त की ठंढी हवा खाने बाहर निकल आई तो उसमें हुई क्या बुराई?

मुन्शीबर०-जी हां! आपके हवा खाने का यहीतोवक्त है। हवा खाने गईं थीं कि यार लोगों से गुलछर्रे उड़ाने? मैं सब देख चुका हूँ। मेरी तारीफ़ में जो जो बातें आपलोगों ने की हैं वह भी सब सुन चुका हूँ। आज ही तो पकड़ मिली हैं आप। घबड़ाये नहीं। ज़रा आने दीजिये अपने बाप मां को। दोनों को मैंने बुलवाभेजा है। आते ही होंगे अभी।

दिलाराम०-या ईश्वर!

उलझन०-अरे बाप रे बाप!

मुन्शीबर०-'अबजिगर थाम के बैठो मेरी बारी आई'। बीबी साहबा! आप बहुत मुझे उल्लू बनाती थीं। हरदफ़े आप अपनी चालाकी से मुझे झूठा साबित करती थीं। अपने मांबाप की आंखों में खूब धूल झोंकती थीं। मेरी सच्चाई हरबार आप

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की चालाकी के नीचे दब जाती थी। मगर आज सारी क़लई खुलेगी। आजही तो आप को मालूम होगा कि सौ सुनार की और एक लोहार की दोनों बराबर है।

दिलाराम०-हाथ जोड़ती हूं। मुझे भीतर आने दो।

मुन्शीवर० नहीं नहीं। ज़रा और ठंढी ठंढी हवा खालीजिये. ताकि आपके मां बाप भी तो आकर आपकी यह अनोखी हवा ख़ोरी का तमाशा देखलें। जब तक आप उनको धोखा देने और अपनी नेकचलनी साबित करने के लिये कोई चाल सोचिये। कोई बहाना निकालिये कि रात्रिपूजा करने गये थे या कोई लंगोटिया पीर को बताशे चढ़ाने गये थे।

दिलाराम०-नहीं अब बहाना करने से क्या होगा। अब मैं कोई बहाना न करूंगी। क्योंकि अब तो तुमसे कुछ छिपा नहीं है।

मुन्शीवर०-हां हां अब क्यों न आप ऐसा कहें ? क्योंकि कोई बचत की राह अब दिखाई नहीं पड़ती।

दिलाराम०-मैं मानती हूं। अब तो मुझसे क़सूर होही गया। मगर तुमसे मैं मिन्नत करती हूँ कि मेरे मां बाप से यह बात मत कहो जल्दी दरवाज़ा खोलदो।

मुन्शीवर०-अभी खोलता हूं। बस ज़रा और सब्र करो। वे आही रहे होंगे।

दिलाराम०-नहीं मेरे प्यारे मुझे बचालो। हाथ जोड़ती हूँ।

मुन्शीवर० "मेरे प्यारे" अय! है! आज तक तो तुमने कभी मेरेलिये इन रसीले लफ़्ज़ों को सपने में भी नहीं इस्तमाल किया था।

दिलाराम०-मैं क़सम खाती हूं कि मैं भूल कर भी तुम्हें कभी अब नाखुश होने का मौक़ा न दूंगी.......

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुन्शीवर० माफ़ कीजिये । मैं इन लच्छेदार बातों में नहीं आने का । मैं आपकी इस नेकचलनी का तमाशा आप के मां बाप को बिना दिखाए हुए मानूंगा नहीं ।

दिलाराम०—मगर ईश्वर के लिये मेरी एक बात तो सुन लो । बस एक ही बात ।

मुन्शी वर०—अच्छा कहिये कहिये !

दिलाराम०—बेशक मैं ने ग़लती की । मैं अपने क़सूर को मानती हूं । और इक़बाल करती हूं कि मैं ने बड़ा भारी क़सूर किया । मैं क्या करूं । जवानी की उमंग ने मेरी समझ की आंखों पर थोड़ी देर के लिये पर्दा डालदिया और मैं तुम्हें सोया हुआ छोड़ कर उस आदमी से मिलने के लिये निकल खड़ी हुई ।........

मुन्शी वरः—जी हां बुढ़ापे की शादी का यही नतीजा है कि बूढ़े मियां घर की रखवाली करें और बीवी हवा खाने जायें।

दिलाराम०—मगर अब मेरी आंखें खुल गईं । मैं अपने क़सूरों की माफ़ी चाहती हूं । मेरे पापी मन को माफ़ करदो । और मुझे बुराई से बचा लो क्योंकि अभी तक केवल मन ही मेरा पापी है । जीव नहीं । आत्मा नहीं । शरीर नहीं । इसी-लिये तुमसे बारम्बार प्रार्थना करती हूं कि मेरे अपराधों को क्षमा करके मुझे बुराई से बचाओ । भलाई का रास्ता दिखा-ओ । मुझे अपने भूले हुए कर्त्तव्यों को फिर से पालन करने दो । मैं तुमसे कुछ नहीं चाहती । बस यही कि मुझे मां बाप के कोप से बचालो । द्वार खोलो । शरण दो मैं तुम्हारी तन मन धन से सेवा करूंगी सम्पूर्ण हृदय से तुम्हें अब प्यार करूंगी । द्वार खोलो ।

मुन्शी वर०—धन्य हो मेरी पतिव्रता स्त्री धन्य हो ।

बस बस अब ज्यादे संस्कृत न छांटो ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हारी चिकनी चुपड़ी बातों में मेरा ईमान फिसला जाता है।

दिलाराम०—मुझ पर दया करो।

गाना।

दिलराम०—सइयां सइयां अपराध करो मेरा क्षमा।
कर जोड़े खड़ी हूं मैं पिया,
हे नाथ करो अबतो दया।
दासी तुम्हारी हूं नारी अपराधी हूं रह रह पछताती हूं—
करदो क्षमा। सइयां सइयां ०—
तुम हो मेरे नाथ गुसइयां, तुम पर मैं जाऊंगी वारियां।
बलिहारियां। सइयां गुसइयां पे जाउं।
वारी वारियां,

मुन्शी बर०—(उंगलियों से अपने दोनों कान बन्द कर लेता है) बस! चुप! चुप! यहां Heart fail हुआ जाता है।

दिलाराम०—यह अभागिन तुम्हारी ही स्त्री है मत दुतकारो।

मुन्शी बर०—उफ़! चुप।

दिलाराम०—हाथ जोड़ती हूं।

मुन्शी बर०—नहीं नहीं। मैं कुछ न सुनूंगा।

दिलाराम०—पांव पड़ती हूं। शरण दो।

मुन्शी बर०—कभी नहीं।

दिलाराम०—नहीं नहीं इस तरह मुझे हताश मत करो। नहीं मैं बताये देती हूँ कि स्त्री मेरी ऐसी दशा में जो न कर बैठे वहीं थोड़ा है। मैं भी जो अपने हठ पर आऊंगी ऐसी कोई बात कर बैठूंगी कि तुम बहुत पछताओगे।

मुन्शी बर० (कानों से उंगली हटा कर) कौन सी बात कर बैठोगी ज़रा मैं भी तो सुनूं।

दिलाराम०—मैं अपनी जान पर खेल जाऊँगी और इसी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जगह इस छुरी को अपने कलेजे में भौंक कर जान देदूंगी।

मुन्शी वर०-आहा हा हा! बहुत अच्छा।

दिलाराम०-नहीं यह हसने की बात नहीं है। हम लोगों की लड़ाई झगड़े का और तुम्हारी निर्दयता और कठोर व्योहार का हाल किसी से छिपा नहीं है। और जब यह लोग मुझे यहां मुर्दा देखेंगे तो सब यही समझेंगे और कहेंगे कि इसी ने अपनी औरत को मार डाला है। और मेरे बाप ऐसे आदमी नहीं हैं कि मेरी मौत का बदला न लें। वे लोग तुम्हें ज़रूर ज़रूर फांसी दिलवादेंगें। और इस तरह से तुम्हारी इस कठोरता और निर्यता का बदला मर कर लूंगी। बला से मेरी जान जायेगी मगर समझ रखो इसी के साथ तुम्हारी भी जान जायेगी।

मुन्शी वर०-बीबी साहबा। खुदकुशी करने का अब फ़ैशन नहीं रहा। वह ज़माना गया। आजकल जान बड़ी प्यारी होती है।

दिलाराम०-अब भी दरवाज़ा खोल दो। नहीं मैं सच कहती हूं। क़सम खा कर कहती हूं कि अभी मैं छाती में छुरी भौंके लेती हूं।

मुन्शी वर०-वाह! वाह! यह धमकी बेकार और बे असर है।

दिला०-अच्छा तो यही सही। तुम्हारी यही खुशी है तो बस यह लो (खुद कुशी करने का बहाना करती है।) हाय! बाप रे! मर गई। या ईश्वर मेरी मौत का बदला भरपूर लेना। जिस निर्दई की कठोरता के कारण मेरे प्राण गये वह ईश्वर करे छे महीने की फांसी पावे।

मुन्शी वर०-आयं! आयं! क्या मुझे फांसी दिलाने के लिये इस पाजी ने सचमुच जान देदी? अच्छा बत्ती लेकर अभी जाकर देखता हूं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(मुन्शी बरबाद का खिड़की पर से ग़ायब होना)

दिलाराम०-(उलझन से) बस अब आओ जल्दी से चुप चाप दरवाज़े के दोनों तरफ़ खड़े हो जाएं।

(दरवाज़ा खोलकर मुन्शी बरबाद हाथ में मोमबत्ती लिये हुए बाहर निकलता है वैसेही दिलाराम और उलझन चुपके से मकान के भीतर घुसजाती हैं और भीतर से दरवाज़ा बन्दकर लेती हैं।)

मुन्शी बर०-भला उस हरामज़ादी ने क्या सचमुच जान देदी होगी ? (इधर उधर देख कर) अयं। कोई भी नहीं। आहा ! मैं पहिले ही समझ गया था। जब उस पाजी ने देखा कि न खुशामद से काम चलता है और न धमकी से तो भाग गई। चलो खूब हुआ। झगड़ा पाक हुआ। मगर उसके हक़ में बुरा हुआ। उसके मां बाप को अब उसकी बदमाशी और पाजीपन का अच्छी तरह से यक़ीन हो जायेगा। (घर में जाने के लिये लौटता है।) अयं ! दरवाज़ा बन्द है। अरे ! यह किसने दरवाज़ा बन्द कर दिया।

(दिलाराम और उलझन का खिड़की पर दिखाई देना)

दिलाराम०-क्यों जनाब यह रात भर आप कहां रहे ? सारी रात बिता के अब घर आ रहे हैं आप ?

उलझन०-रहे कहां ? वहीं जहां रोज़ रहते हैं। रण्डी के घर में या शराबख़ाने में। आज कोई यह नई बात थोड़ी ही है।

मुन्शी बर०-आयं यह क्या !...

दिलाराम०-बस बस चुप रहो। चले जाओ वहीं जहां अब तक रहे। रोज़ रोज़ मैं कहां तक सहूं। आने दो मेरे मां बाप को तुम्हारी शराब ख़्वारी और रण्डीबाज़ी का मज़ा चखाती हूँ।

मुन्शी बर०-आयं ! उल्टा चोर कोतवाल को डाटें। तुम्हारी हिम्मत--

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(डीवट का मिस्टर और मिसेज़ धरपकड़ के साथ लालटेन लिये हुए आना)

दिलाराम० (मिस्टर और मिसेज़ धरपकड़ से) आइये आइये ज़रा इनके कमीनापन और पाजीपन का तमाशा देखियें। और मेरी फूटी क़िस्मत पर दो दो आंसू बहाइये। सारी रात रण्डी के घर और शराबख़ाने में बिताकर अब घर आ रहे हैं। कहां तक सहूं कब तक सहूं। एक दिन दो दिन तक हो तो कहूँ। नित यही हाल है। आप ख़ुद अपनी आँखों से देख लीजिये इसीके लिये जब मना करती हूं। तो उल्टे मेरी भूठी शिकायत आपसे करते हैं। इस वक्त भी यही धमकी दिखाते थे कि चुपचाप दरवाज़ा खोलदो नहीं अभी तुम्हारे मां बाप को बुलाता हूं और कहता हूं कि जब मैं सोगया था तब यह लोग न जाने रात को घर के बाहर कहां गई थीं। अब आप ही इन बातों को देखिये और फ़ैसला कीजिये।

मुन्शीधर०-(अलग) अरे हरामज़ादी !

उलझन०-खुद रात रात भर जूवा खेलें शराब पीयें और ईश्वर जाने बाहर कौन कौन सा कुकर्म करें और मेरी विचारी भोली भाली मलकिन घर में अकेली सारी रात रो रो कर काटें और ऊपर से उल्टे यह धमकी दिखायें कि तुम लोग घर के बाहर थीं और मैं घर के भीतर था। इस झूठ का भला कोई हद भी है ?

मिस्टरधर०-क्यों हज़रत ? यह आपका क्या हाल है ?

मिसेज़ धर०- यह बदमाशी और उसपर यह हिम्मत कि हमलोगों को बुला भेजा।

मुन्शीधर०-नहीं यह बात नहीं।

दिलाराम०-नहीं अब मैं इनके साथ नहीं रह सकती। जान दे दूंगी मगर अब इनके साथ एक घड़ी भी नहीं रहूंगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सहते सहते मेरा कलेजा अब पक गया।

मिस्टर धर०–थुड़ी है तुम पर। अफ़सोस!

उलझन०–बुढ़ापे में यह करनी! छि! छि! एक तो बुढ़ापे के कारन सठिया गये दूसरे गाञ्जा भंग चरस और शराब ने बिल्कुल अक्ल मारदी है।

मुन्शी०–क्या यह लोग—

मिस्टर धर०–बस बको मत। डूब मरो जाकर चुल्लू भर पानी में। मुंह दिखाते शर्म नहीं मालूम होती?

मुन्शी वर०–बस एक बात मेरी सुन लीजिये।

दिलाराम०–देख लीजिये वही बात कहेंगे।

मुन्शी वर०–(अलग) हाय! अब मैं क्या करूं?

उलझन०–उफ़! बाप रे बाप! कितनी शराब पी है इन्होने आज। इसकी बदबू यहां तक आ रही है। ज़रा आपलोग इनसे हट के खड़े होइये।

मुन्शी वर०–जनाब ससुर जी मैं मिन्नत करता हूं।

मिस्टरधर० सचमुच बड़ी बदबू आरही है। दूर हट के खड़े हो।

मुन्शीवर०–सास साहबा मैं आपके हाथ जोड़ता हूं।

मिसेज़ धर०–ख़बरदार! मेरे पास आओगे तो मैं मुहं नोच लूंगी। झूठे दग़ाबाज़ बेइमान कहीं के। बहुत सताया उस बेचारी को तुमने और ऊपर से हमलोगों को बराबर धोखा देते रहे। आज से तुम्हारी कोई बात नहीं सुनी जायेगी।

मुन्शीवर०–(मिस्टर धरपकड़ से) आप मेरी—

मिस्टर धर०–अलग अलग। बेशक तुम बड़े झूठे हो।

मुन्शीवर०–(मिसेज़ धरपकड़ से) ईश्वर केलिये एक बात-

मिसेज़ धर०-बस दूर रहो।

मुन्शीवर०–मैं दूर ही से कहता हूं। सुनिये। ईश्वर की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कसम खाकर कहता हूं मैं घर छोड़ कर कहीं भी नहीं गया यहीं घर के बाहर ग ी थी । मैं तो सोता था ।

दिलाराम०—देख लीजिये मैं ने पहिले ही कहा था ।

उलझन०—अब आपही इनसाफ़ कीजिये कौन सच है और कौन झूठ ।

मिस्टर धर०—बड़े बेशर्म हो बड़े दग़ाबाज़ हो अब हम लोग तुम्हारे चकमें में आ नहीं सकते । आ बेटी तू यहां आ ।

(खिड़की पर से दिलाराम और उलझन का ग़ायब होना)

मुन्शीवर०—ईश्वर की क़सम मैं घर में था ।

मिस्टर धर०—बस चुप रहो । गुस्सा मत दिलाओ ।

मुन्शीवर०—अगर झूठ कहता हूं तो मुझपर आस्मान फटपड़े ।

मिस्टरधर०—बस बको मत । भलाई इसी में है कि तुम अपनी स्त्री से माफी मांगो ।

मुन्शीवर०—मैं माफ़ी मागूं ?

मिस्टर धर०—हां तुम । और अभी माफ़ी मांगो ।

मुन्शीवर०—क्या मैं—

मिस्टरधर० बस और कोई बात सुनना नहीं चाहता । नहीं तुम्हारी बदमाशी और दग़ाबाज़ी का नतीजा अभी दिखा दूंगा ।

मुन्शीवर०—(अलग) आह ! मुन्शीवरबाद ! मियां की जूती मियां के सर । बुढ़ापे की शादी का यही नतीजा है ।

(दरवाज़ा खोल कर दिलाराम और उलझन का बाहर आना)

मिस्टरधर०—आओ बेटी इधर आओ ताकि मुन्शी बरबाद मेरे सामने तुमसे माफ़ी मांगे ।

दिलाराम०—क्या मैं उनको माफ़ करूंगी ? इतनी गालियां खाचुकने पर ? यह दुरदशा सहने पर ? कभी नहीं । मैं इनके यहां अब एक दम नहीं ठहर सकती । मैं इनका अब मुंह न देखूंगी । मुझे लेचलिये आप अपने साथ ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

LIBRARY
Jangamwadi Math, Varanasi
Acc. No. 3053

उलझन०-और नहीं तो क्या? यहां क्या बेचारी ज

मिस्टर धर०-नहीं बेटी ऐसा न करो। इसमें बदना

दिलाराम०-और उन्होंने क्या मुझे कम बदनाम उससे बढ़ कर अब क्या बदनामी होगी। नहीं मैं साथ नहीं रह सकती।

मिस्टर धर०-नहीं बेटी तुमको रहना पड़ेगा कहना मानो।

दिलाराम:-जब आप की मर्ज़ी नहीं है तो मेरी क्य कि चू कर सकूं।

उलझन०-बेचारी कैसी सीधी है।

दिलाराम० आप का कहना मानना मेरा परम धर्म

उलझन:-हाय! हाय! बेचारी गऊ है गऊ। ती कुछ नहीं जानती।

मिस्टर धर०-और नज़दीक आओ बेटी दिलाराम

दिलाराम०-मगर इससे फ़ायदा क्या कलह को पि मुसीबत शुरू होगी।

मिस्टर धर०-नहीं घबड़ाओ नहीं अब यह नौबत नहीं आयेगी। मुन्शी बरबाद चलो अपनी स्त्री के पैरों कर माफ़ी मांगो।

मुन्शी ब०-पैरों पर गिरूं!

मिस्टर धर:-हां हां जल्दी करो। ख़ैरियत इसी में

मुन्शी बर०-(अलग) या ईश्वर! मियां की जूती सर (हाथ में मोमबत्ती लिये हुए दिलाराम के गिरता है) (धरपकड़ से) क्या कहलाना आप चाहते

मिस्टर धर०-श्रीमती देवी जी मैं आपसे मांफ़ी मांग

मुन्शीबर०-श्रीमती देवी जी मैं आपसे माफ़ी मागत

मिस्टर धर०-उस बेवकूफ़ी के लिये जो मैंने की है

मुन्शी बर०-इस बेवकूफ़ी के लिये जो मैंने की है। (

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY.
Jangamwadi Math, VARANASI,
Acc. No. 3053
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri.